जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

Rashtradoot

जयपुर, मंगलवार 30 मई, 2023

9 साल नवनिर्माण के, गरीब कल्याण के

गरीबों की सेवा, वंचितों का सम्मान

- देश के **80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन**
- गरीबों का मान बढ़ाया, **3 करोड़ परिवारों को पक्का आवास** दिलवाया
- **11.72 करोड़ शौचालयों का निर्माण,** बढ़ी सुरक्षा और स्वाभिमान
- **12 करोड़ घरों** में पहुंचा नल से स्वच्छ जल

सबके लिए सहज और उत्तम स्वास्थ्य सेवाएं

- पिछले 9 सालों में **एम्स की संख्या 8 से बढ़कर 23** हुई
- आयुष्मान भारत योजना के तहत **50 करोड़** लोगों को सालाना **₹5 लाख के मुफ्त इलाज** की निश्चिंतता
- **जन-औषधि केंद्रों पर 50% से 90% तक सस्ती** कीमत पर अच्छी दवाएं उपलब्ध, **जरूरतमंदों के अब तक ₹20 हजार करोड़** बचे

नारी शक्ति, देश की तरक्की

- महिलाओं को मिली धुएं से मुक्ति, **9.6 करोड़ से अधिक उज्ज्वला कनेक्शन**
- महिलाओं को सम्मान मिला, सशस्त्र बलों में स्थान मिला
- **27 करोड़ से अधिक महिलाओं** को मिली मुद्रा की शक्ति
- पेड मैटरनिटी लीव हुई **12 से बढ़कर 26 सप्ताह**

आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, हो रहा बेहतर

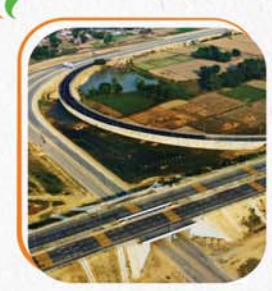

- देशभर में **18 सेमी हाई-स्पीड वंदे भारत** ट्रेनों की हुई शुरुआत
- पिछले 9 सालों में हवाई अड्डों की संख्या हुई **दोगुनी, 74 से बढ़कर 148**
- **मेट्रो रेल नेटवर्क 5 शहरों से बढ़कर 20 शहरों** में पहुंचा
- दोगुनी तेजी से **53 हजार किलोमीटर** से अधिक हाइवे का हुआ निर्माण
- पिछले 9 साल में गांवों को जोड़ने के लिए **3 लाख 53 हजार किलोमीटर** से भी ज्यादा सड़कों का निर्माण

युवा शक्ति की आकांक्षाओं की पूर्ति

- आज भारत में **हर दिन दो कॉलेज** और **हर हफ्ते एक यूनिवर्सिटी** स्थापित
- पिछले 9 सालों में देश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या **387 से बढ़कर 693** हुई
- पिछले 9 सालों में देश में हुए **7 नए आईआईएम और 7 नए आईआईटी** स्थापित
- पीएम कौशल विकास योजना से **1.37 करोड़ से अधिक युवाओं को प्रशिक्षण**
- भारत बना **विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम,** देश में अब **97 हजार से अधिक स्टार्टअप, 100 से अधिक यूनिकॉर्न**

विश्व में निरंतर बढ़ रहा देश का नाम

- भारत का कुल निर्यात **750 बिलियन डॉलर** के पार
- भारत की **G-20 अध्यक्षता** वैश्विक मुद्दों के समाधान को दे रही नई दिशा
- सदी की सबसे बड़ी महामारी के दौरान वैक्सीन मैत्री से **100 से अधिक देशों को पहुंचाई वैक्सीन**
- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, अंतरराष्ट्रीय सोलर अलायन्स, मिशन लाइफ, अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष जैसे कदम **विश्व पटल पर भारत की अग्रणी भूमिका** को रेखांकित करते हैं

सुनिश्चित हो रहा किसान का कल्याण

- पीएम किसान से **11 करोड़ से अधिक किसानों को साल के ₹6 हजार**
- नौ साल में कृषि बजट में करीब **6 गुना वृद्धि**
- पीएम फसल बीमा योजना से हुआ किसान साथियों को **₹1.33 लाख करोड़** का भुगतान
- नीम कोटेड यूरिया, सॉइल हेल्थ कार्ड, सिंचाई योजना, ई-नाम जैसे कई कदम बना रहे किसानों का जीवन आसान

विरासत और विकास

- अयोध्या में हो रहा है **भव्य राम-मंदिर** का निर्माण
- **सांस्कृतिक - आध्यात्मिक धरोहरों** के पुनर्निर्माण से देशवासियों की आस्था को बल
- भारत वापस लाई गईं **230 से अधिक चोरी हुई अमूल्य कलाकृतियां**
- आज देश गुलामी के प्रतीकों से मुक्ति पाकर **विकसित भारत** के संकल्प को मजबूती दे रहा है

"आज नया भारत, नए लक्ष्य तय कर रहा है, नए रास्ते गढ़ रहा है। नया जोश है, नई उमंग है। नया सफर है, नई सोच है। दिशा नई है, दृष्टि नई है। संकल्प नया है, विश्वास नया है।" **नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**

अधिक जानकारी के लिए NaMo App पर जाएं या QR Code स्कैन करें

CBC 22201/13/0024/2324

विचार बिन्दु

जिस तरह रंग सादगी को निखार देते हैं उसी तरह सादगी भी रंगों को निखार देती है। सहयोग सफलता का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। –मुक्ता

नए संसद भवन का उद्घाटन– अनावश्यक विवाद

नए संसद भवन का उद्घाटन 28 मई 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। शायद ही कोई उद्घाटन समारोह इतना चर्चा और विवादों के घेरे में रहा हो जितना संसद भवन का यह उद्घाटन रहा है। संसद भवन आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त भव्य भवन है। भविष्य में परिसीमन के बाद लोकसभा और राज्यसभा की सीटों में होने वाले वृद्धि को ध्यान में रखते हुए इसे बनाया गया है। इसके निर्माण पर 862 करोड़ रुपये व्यय हुए और इसे बनने में लगभग ढ़ाई साल लगे। इसमें कई प्रकार की विशेषताएं और विशिष्टताएं हैं जिनका सभी टी.वी. चैनलों के माध्यम से दिन भर प्रसारण किया गया। उद्घाटन समारोह के अंतर्गत आयोजित हवन, सर्वधर्म प्रार्थना, सेंगोल (धर्म दंड) का प्रधानमंत्री को सौंपा जाना आदि सभी गतिविधियों का सभी चैनलों द्वारा सीधा प्रसारण किया गया।

यह समारोह अनेक कारणों से विवादों में रहा। सबसे मुख्य विवाद का प्रश्न तब सामने आया जब कांग्रेस के नेतृत्व में विभिन्न विपक्षी दलों द्वारा यह मांग की गई कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के द्वारा इसका उद्घाटन कराया जाना चाहिए था । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 79 के अंतर्गत संसद का गठन लोकसभा, राज्यसभा और राष्ट्रपति मिलकर करते हैं। यह भी कहा गया कि वही दोनों सदनों को आहूत करती हैं एवं दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करती हैं। अभिभाषण उनके द्वारा दिया जाता है। भारतीय संविधान में सर्वोच्च स्थान राष्ट्रपति जी को प्राप्त है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किए जाने वाले उद्घाटन समारोह को स्थगित कराने हेतु सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका भी दायर की गई, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने उचित नहीं मानते हुए प्रारंभिक स्तर पर ही अस्वीकार कर दिया ।

जब विपक्षी गणों की इस मांग पर कोई ध्यान सरकार द्वारा नहीं दिया गया तो लगभग 20 विपक्षी दलों ने उद्घाटन समारोह का बहिष्कार करने का सामूहिक निर्णय लिया। इस प्रकार लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद के नए भवन का उद्घाटन 20 विपक्षी दलों के अनुपस्थिति में प्रधानमंत्री द्वारा किया गया।

कोरोना के समय जिस समय सेंट्रल विस्ता और संसद भवन का कार्य प्रारंभ हुआ था उस समय भी विपक्षी दलों ने इसका घोर विरोध यह कहकर किया था कि कोरोना महामारी से मुकाबला करने के स्थान पर सेंट्रल विस्टा पर लगभग 20000 करोड़ रुपये का खर्च करना एकदम अनुचित है। यह भी कहा गया कि दुनिया के देशों की संसद भारतीय संसद से भी बहुत पुराने भवनों में चल रही है, अत: नया भव्य भवन बनाना जनता के पैसे की बर्बादी है। सरकार ने विरोध की कोई परवाह नहीं की और इस पर कार्य जारी रखा। और अब जबकि संसद भवन बनकर तैयार हो गया है तो इसका उद्घाटन वीर सावरकर की जन्म तिथि 28 मई को किया गया। तिथि के चयन पर भी विपक्ष को आपत्ति थी। जिस प्रकार प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष की बातों की उपेक्षा की उससे तो ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री न तो असहमति को पसंद करते हैं एवं न ही उसकी परवाह करते हैं। यदि वे विपक्ष की मांग को ध्यान में रखते हुए उनसे संवाद स्थापित करते तो संभवतया इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न नहीं होती ।

जिस समय प्रधानमंत्री नए संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर, सदैव की भांति उत्साह से ओतप्रोत भाषण में भारतीय लोकतंत्र की दुहाई दे रहे थे, ठीक उसी समय लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर ओलंपिक पदक विजेता महिला पहलवानों साक्षी मलिक और विनेश फोगाट को जबरदस्ती पुलिस द्वारा धरना स्थल से उठाया जा रहा था एवं सड़कों पर घसीटा जा रहा था। ये दृश्य विचलित करने वाले थे। ऐसा बर्बरता पूर्ण सलूक उन महिला पहलवानों के साथ किया जा रहा था जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के गौरव को बढ़ाने में लगा दिया । जब वे ओलिंपिक खेलों के बाद लौटे तो प्रधानमंत्री मोदी ने अपने आवास पर चाय हेतु न केवल आमंत्रित किया अपितु उनकी बहुत सराहना करते हुए कहा कि इन्होंने भारत का गौरव बढ़ाया है। यही पहलवान एक माह से अधिक समय से जंतर–मंतर पर धरने पर बैठे हैं। उनकी मांगों के संबंध में सरकार ने कोई पहल नहीं की और न उनसे बात करके समस्या का हल निकालने का प्रयास किया। उनकी मांग केवल इतनी थी कि उनके साथ यौन उत्पीड़न करने वाले कुश्ती महा संघ के अध्यक्ष और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार किया जाए। वैसे भी कानून के अंतर्गत नाबालिग पीड़िता के बयान दर्ज होते ही संबंधित अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए था। इस प्रकार यौन उत्पीड़न के अभियुक्त को निरंतर संरक्षण प्रदान करना लोकतांत्रिक एवं संविधान की मूलभूत भावना के अनुकूल नहीं है। यह विडंबना ही है कि जब महिला पहलवानों को सड़क पर घसीटा जा रहा था, उसी समय बृजभूषण सिंह नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह में सम्मानपूर्वक भाग ले रहा था ।

> **यदि विपक्षी दलों की बात को ध्यान में रखते हुए एवं संवैधानिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानमंत्री बड़ा दिल दिखाते हुए राष्ट्रपति, जो कि एक महिला एवं आदिवासी हैं, से इस नए भवन का उद्घाटन करवा लेते तो वह अपनी छवि को और अधिक बड़ी कर सकते थे। यह अवसर उन्होंने खो दिया। विपक्षी दलों को भी अपने अहम के कारण इस समारोह के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित नहीं होने का दोषी माना जाएगा।**

यह तो बात हुई सत्तापक्ष की, जिसने विपक्ष की आलोचना को सिरे से खारिज करते हुए उन्हें लगभग इसी अंदाज में लिया कि "आपको जो करना है करते रहिए, हम वही करेंगे जो हमें करना है"। इसी प्रकार का दृष्टिकोण अन्य अवसरों पर पहले भी देखने को मिला है। पाठकों को याद होगा कि किसान आंदोलन के समय, सरकार द्वारा बार–बार यह घोषणा करने के बावजूद कि तीनों कृषि कानून किसी सूरत में वापस नहीं होंगे, आंदोलन के दबाव के चलते, प्रधानमंत्री को न केवल देश से माफी माँगनी पड़ी, तीनों कानून वापस लेने पड़े ।

संसद के उद्घाटन के अवसर पर माहौल अधिक गरिमा युक्त और लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुकूल होता यदि संपूर्ण विपक्ष भी इस उद्घाटन समारोह का भाग बनता । इस प्रकार की स्थिति का कारण सत्ता पक्ष की हठधर्मिता थी, वहीं विपक्षी दल भी इसके लिए अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। संभव है, विपक्षी दलों द्वारा जो तकनीकी बिंदुओं को उठाये गया, वे संविधान की मान्यताओं के अनुसार सही हों, लेकिन कांग्रेस पर विशेष रूप से यह उक्ति लागू होती है–"जिनके घर शीशे के बने हों वह दूसरों के शीशे के घर पर पत्थर नहीं फेंका करते"। जब कांग्रेस ने राष्ट्रपति से ही भवन का उद्घाटन करवाने पर जोर दिया एवं इसे संवैधानिक दृष्टि से उपयुक्त बताया, तो भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने भी ऐसे कई उदाहरण सार्वजनिक कर दिए जब राज्यों की विधानसभाओं का उद्घाटन राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल द्वारा नहीं किया गया अपितु यू पी ए अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा कराया गया जिनका कोई संवैधानिक अधिकार नहीं बनता था। जब कांग्रेस स्वयं इस बात का सम्मान नहीं करती रही है तो फिर केवल भाजपा से ऐसी अपेक्षा करना किसी भी रूप में सही नहीं कहा जा सकता। जहां तक नैतिकता और मर्यादा का प्रश्न है उसकी तो बात करना ही अब बेमानी लगता है । सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ने ही इस प्रकरण में अपनी मर्यादा लाँघी है और जनता केवल एक मूक दर्शक बन कर रह गई है।

संसद के उद्घाटन समारोह के अवसर पर राज्यसभा के सभापति की अनुपस्थिति भी विशेष रूप से अनुभव की गई। उद्घाटन के अवसर पर जहां प्रधानमंत्री की कुर्सी बीच में थी उनके एक ओर लोकसभा अध्यक्ष और दूसरी ओर राज्यसभा के उपाध्यक्ष थे। राज्यसभा के सभापति भारत के उप राष्ट्रपति हैं जिन्हें नहीं बुलाया गया। प्रोटोकॉल में उपराष्ट्रपति का स्थान प्रधानमंत्री से ऊपर होता है। यदि वे आते तो फिर वे ही इसका उद्घाटन करते और ऐसा प्रधानमंत्री मोदी हरगिज़ नहीं चाहते थे। यह तो सर्वविदित ही है कि भारत सरकार के किसी भी विभाग का कोई भी शिलान्यास या उद्घाटन का कार्यक्रम हो, मुख्य अतिथि सामान्यता नरेंद्र मोदी होते हैं। संबंधित मंत्रियों को अपने खुद के विभाग के कामों का उद्घाटन व शिलान्यास करने का शायद ही कभी अवसर मिल पाता है । उदाहरणार्थ, अब तक प्रारंभ की गई 17 वंदे भारत रेलों में से 16 को तो प्रधानमंत्री स्वयं ने झंडी दिखाकर रवाना किया और एक को गृह मंत्री अमित शाह द्वारा हरी झंडी दिखाई गई । रेल मंत्री को तो ऐसा कोई अवसर ही नहीं मिला। लगता है सरकार भाजपा की न होकर केवल मोदी की है। लगभग सभी स्थान पर वही व्याप्त रहते हैं। संसद भवन के उद्घाटन का अवसर भला वह कैसे किसी और को देते ।

इस पूरे विवाद में विपक्ष ने भी अपनी किरकिरी कराई है। जनता में एक प्रकार का संदेश गया है कि वह नरेंद्र मोदी के प्रति व्यक्तिगत विद्वेष की भावना से ओतप्रोत है। वह इस बात को शायद पचा नहीं पा रहे हैं कि नरेंद्र मोदी इस महत्वपूर्ण अवसर पर पूर्णतया छाए रहे।

लोकतंत्र में असहमति के प्रति असहनशीलता दिखाना घातक सिद्ध हो सकता है न केवल लोकतंत्र के लिए बल्कि उस व्यक्ति के लिए भी, जो केवल चाटुकारों से घिरा रहे। न तो मीडिया को और न दल के किसी सदस्य को कोई बात नेता के विरुद्ध कहने की अनुमति हो। कोई ऐसा दुस्साहस करे भी तो उसे किसी न किसी रूप से प्रताड़ित करने का रास्ता निकाल लिया जाता है। कुछ विपक्षी दलों के नेता तो उद्घाटन समारोह में संभवत: इसीलिए शामिल हुए कि कहीं उन्हें सरकार के कोप भाजन का शिकार न होना पड़े।

यदि विपक्षी दलों की बात को ध्यान में रखते हुए एवं संवैधानिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानमंत्री बड़ा दिल दिखाते हुए राष्ट्रपति, जो कि एक महिला एवं आदिवासी हैं, से इस नए भवन का उद्घाटन करवा लेते तो वह अपनी छवि को और अधिक बड़ी कर सकते थे। यह अवसर उन्होंने खो दिया। विपक्षी दलों को भी अपने अहम के कारण इस समारोह के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित नहीं होने का दोषी माना जाएगा। कुल मिलाकर, यह समारोह उतना गरिमा पूर्ण नहीं हो पाया जिसकी अपेक्षा थी। उद्घाटन के अवसर पर विपक्ष का होना स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र का संकेत होता । नए संसद भवन के हॉल की सीटें तो सरकार द्वारा विभिन्न अतिथियों को आमंत्रित करके भर ली गईं। अन्यथा उद्घाटन समारोह के अवसर पर बहुत सारी सीटें हॉल में खाली ही दिखाई देतीं जो अच्छा दृश्य प्रस्तुत नहीं करता । साधारण नागरिक की तरह हम तो यही कह सकते हैं कि यह पूरा प्रकरण अनावश्यक था जिसे टाला जा सकता था। यदि दोनों ही पक्ष अपने–अपने अहंकार को छोड़कर परस्पर संवाद की स्थिति बनाते और मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए लोकतंत्र की स्वस्थ परंपराओं को आगे बढ़ाते तो अच्छा होता। काश, ऐसा हो पाता।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कृषि संस्कृति विकास के जरिए खेती को बचाएं

डॉ. अरुणा व्यास

कृषि को भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता रहा है पर योजनागत रूप में जितना कम ध्यान कृषि क्षेत्र पर दिया जाता है, उतना संभवत: अन्य किसी भी क्षेत्र पर नहीं दिया जाता। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि खेती आज भी किसानों के लिए बहुत अधिक लाभकारी क्षेत्र नहीं है। शायद यही वह बड़ा कारण भी है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान खेती की जमीनों का धंधा बड़े पैमाने पर देश में फैला है। किसान खेती से बेरुखी भी करते जा रहे हैं। सवाल यह है कि कैसे कृषि को किसानों के लिए लाभकारी बनाया जाए? कैसे ऊंची लागत को कम किया जाए और कैसे उत्पादकता में तेजी से हो रही कमी की खाई को पाटा जाए।

स्वाभाविक ही है कि इसके लिए कृषि को संस्कृति की समग्रता के रूप में स्वीकार करते हुए इस पर पर्याप्त ध्यान देने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। यह वह समय है जब खेती की जमीनें निरंतर कम होती जा रही है, उत्पादन की लागत तेजी से बढ़ती जा रही है और इसी से खेती से भी वास्तविक किसान निरंतर दूर होते जा रहे हैं। किसान का लेबल उन लोगों के साथ लग रहा है जो मूलत: किसान नहीं हैं, पर इसमें फायदे का सौदा देखकर इसे बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। इससे जो बड़ी समस्या खेती–किसानी की पैदा हुई है, वह यह है कि खेती केवल मुनाफे के उद्देष्य से की जाने लगी है। यह नहीं देखा जा रहा कि अधिक पैदावार लेने के लालच में मिट्टी की उर्वरा शक्ति खत्म हो रही है, रासायनिक उर्वरको के बेजा इस्तेमाल से बीमारियां घर–घर दस्तक दे रही है और पानी की निरंतर कमी होती जा रही है।

यह सही है, खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से भले अभी कोई बड़ा संकट हमारे समक्ष नहीं है परन्तु विष्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले हमारे देष के बरक्स उत्पादन आने वाले वर्षो में इस कदर कम रहने वाला है कि खाद्यान्न के बड़े संकट से देश को जूझना पड़े तो इसमें कोई अचरज नहीं होगा। यह बात इसलिए कि जब खेती वास्तविक किसान नहीं करके व्यापार से जुड़े लोग कर रहे हैं तो जैसे ही खेती वाली जमीन उनके लिए लाभ का सौदा नहीं रहती तो वे जमीनों को किसी अन्य प्रयोजन से बेच–बाचकर अन्यत्र लाभ का सौदा करते हैं, इसी से जमीनों का धंधा तेजी से चल रहा है ।

असल में कृषि हमारे यहां आज भी प्राथमिकता क्षेत्र में नहीं है। खेती से संबंधित विभाग राज्यों में बने हुए हैं परन्तु उनके अंतर्गत बरसों से चली आ रही योजनाओं के अंतर्गत अनुदान और कुछेक किसान मेले, आयोजन भर किए जाते रहे हैं। बदलते समय के अनुसार किसानों की आवश्यकताओं, उनकी समस्याओं और खेती से उनके निरंतर विलग होते जाने पर कहीं कोई ध्यान नहीं है। इससे बड़ा इसका उदाहरण और क्या होगा कि प्रतिदिन के समाचार पत्रों में हजारो एकड़ भूमि के गांवों की खेती की जमीन को आवासीय प्रयोजन से काटकर वहां मल्टीस्टोरी वातानुकूलित मकानों के सपने विज्ञापन के रूप में बेचे जा रहे हैं। कहीं इस ओर कोई सोच शायद बड़े स्तर पर नहीं है कि आवासीय प्रयोजन से भू रूपानतरण से पहले उस जमीन पर बड़े स्तर पर खेती होती रही है। माने खेत लीलकर आवास या फिर उसमें निवेश के सुनहरे सपनों का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है परन्तु इस पर कहीं कोई चिंतन नहीं है कि कैसे आने वाले समय में इन कम हुए खेतों की फसल की भरपाई आबादी के लिए हो पाएगी।

यह सही है, खेती हमारे यहां मानसून का जुआ है परन्तु इतना ही सच यह भी है कि यदि खेती की जमीनों की ढंग से सार–संभाल हो, सिंचाई के साधनों का विकास हो और वर्षाजल संरक्षण के परम्परागत जल स्त्रोतों की ओर हम ध्यान दें और इस संबंध में कोई सुनियोजित नीति पर देशभर में कार्य हो तो खेती के दिन भी फिर सकते हैं। विडम्बना यह भी है कि खेती से जुड़ी तमाम योजनाओं का मूल इस समय बड़े किसान है। छोटे और मंझले किसानों को उनके उत्पादन के विपणन के लिए कहीं कोई योजना नहीं है। दूसरी बड़ी समस्या यह भी है कि जलवायु परिवर्तन से जो संकट खेती के समक्ष जुड़ता जा रहा है, उस पर भी कहीं कोई ध्यान नहीं है। भूजल के निरंतर छीजते चले जाने और भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होते जाने पर समय रहते ध्यान दिया जाना जरूरी है। अच्छा होता इस संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर किसी बड़ी नीति की भी पहल हो।

देशभर में खेती को जलवायु परिवर्तन के संकटो से बचाने के लिए किए जाने वाले उपायों पर इस समय व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाने की जरूरत है। कैसे खेती लाभकारी हो, इस पर भी संवाद सभी स्तरों पर हो और सबसे जरूरी यह भी है कि जमीनों का जो धंधा खेतों को लील कर चलाया जा रहा है, उसके बारे में भी व्यापक स्तर पर मंथन कर कोई नीति बनाई जाए। कृषि संस्कृति के प्रसार के लिए क्यों नहीं देशभर में एक मुहिम ही चलाई जाए।

– डॉ. अरुणा व्यास

ब्रिटेन के मंत्री तारिक अहमद पहली बार अपने ननिहाल जोधपुर आए

- **मेहरानगढ़ किले को देखकर अभिभूत हुए तारिक अहमद**
- **एनजीओ में महिलाओं से मिले तारिक अहमद, ट्वीट किया-सलाम जोधपुर**

जोधपुर, (कासं)। ब्रिटेन में मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिण एशिया और यूनाइटेड किंगडम के संयुक्त राष्ट्र राज्य मंत्री तारिक अहमद पहली बार अपने ननिहाल जोधपुर आए। वे इससे पहले भारत तो कई बार आ चुके हैं, लेकिन अपनी मां के मूल शहर को देखने का मौका पहली बार मिला। यहां मेहरानगढ किले की हिस्ट्री और रिस्टोरेशन वर्क को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गए।

इसके बाद संभली ट्रस्ट में महिलाओं से बात की और उनके आर्ट वर्क को नजदीक से देखा। उनके दल में स्टीफन हिक्लिंग (ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिशन, गुजरात एवं राजस्थान) और उन के कार्यलय से साथी, एंड्रयू जैकसन (डेप्युटी डायरेक्टर एचएमजी इंडिया कोऑर्डिनेटर व जोधपुर उत्तर के महापौर कुंती देवडा भी रही। मंत्री तारिक अहमद ने खुद ट्वीट करते हुए लिखा मेरी मां ने 76 साल पहले अपना शहर छोडा था, अब मैं अपने ननिहाल में पहली बार आया हूं–सलाम जोधपुर। उन्होंने अपने अधिकारियों के साथ उमेद पैलेस और मेहरानगढ़ का हस्तशिल्प देखा। यहां के इतिहास और आर्ट रिनोवेशन वर्क को देख कर खुशी जताई। ब्रिटेन के राज्यमंत्री का उम्मेद भवन पैलेस में पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया उन्होंने यहां पहुंचते ही लिखा सलाम जोधपुर। पांच दिन की भारत यात्रा में वह जोधपुर के साथ ही नई दिल्ली और हैदराबाद में रुकेंगे। यहां 3 पॉइंट पर भारत के साथ एग्रीमेंट हो सकता है।

इमर्जिंग वुमन लीडर्स प्रोग्राम के तहत उन्होंने जोधपुर के संभाली ट्रस्ट में स्वयंसेवी संगठनों से जुडी महिलाओं से बातचीत की। वुमन लीडर्स के लिए संभली ट्रस्ट में महिलाओं से मिले। मंत्री अहमद ने इमर्जिंग वुमन लीडरशिप के लिए जोधपुर के संभली ट्रस्ट में महिलाओं से मुलाकात की। सहसंस्थापक मुक्ता कुमारी ने जोधपुरी पारंपरिक गीतों, ढोल–थाली, कुमकुम लगा कर, माला पहना कर स्वागत किया। संस्था के संस्थापक गोविंद सिंह राठौड ने ट्रस्ट में चल रहे महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम, बालिका शिक्षा कार्यक्रम एवं लैंगिक अल्पसंख्यक समाज की पीडाओं एवं उसके लिए ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों एवं मुश्किलों के निवारण की प्रक्रिया से अवगत करवाया। ब्रिटेन के राज्यमंत्री तारिक अहमद ने संभली ट्रस्ट में महिलाओं के आर्ट वर्क को बारीकी से देखा और कई सवाल किए।

संस्था की अधिवक्ता शिवानी सिंह, रीमा गुप्ता क्वात्रा, मनोचिकित्सक डॉ. दीप्ति राजोत्य ने बताया की ट्रस्ट द्वारा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ एक निर्भया हेल्पलाइन नंबर है जिसे वर्ष 2014 से उपयोग में लिया जा रहा है, इस हेल्पलाइन के माध्यम से महिलाओं को कानूनी सहयोग वह मनोचिकित्सक सेवाएं प्रदान की जाती है।

ट्रस्ट की विमलेश सोलंकी ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने एवं बाल यौन हिंसा के रोकथाम पर ट्रस्ट के कार्यक्रमों से अवगत करवाया। लैंगिक अल्प संख्यक समुदाय के सशक्तिकरण एवं समय से मुख्यधारा से जोडने संबंधित कार्यों की जानकारी राहुल चौहान ने दी। मंत्री अहमद ने महिलाओं से कई सवाल भी पूछे। संभली ट्रस्ट के ट्रस्टी वीरेंद्र सिंह चौहान ने कोरोना में संस्था द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रथम राशन बैंक का विवरण दिया।

नवनिर्मित भारतीय संसद में कोटपूतली के ग्राम भैंसलाना के ब्लैक मार्बल का इस्तेमाल

- **कोटपूतली के भैंसलाना का ब्लैक मार्बल विश्व प्रसिद्ध है**
- **यूरोप समेत खाड़ी देशों में ब्लैक गोल्ड के नाम से है सुप्रसिद्ध भैंसलाना का ब्लैक मार्बल**
- **संसद के निर्माण में 500 टन से अधिक ब्लैक मार्बल का हुआ है इस्तेमाल**
- **उदयपुर के मूर्तिकारों ने इस काले मार्बल पर बेहद उम्दा नक्काशी का कार्य कर भारतीय संसद को नये रूप में उकेरा है**

कोटपूतली, (निसं)। नवनिर्मित भारतीय संसद के निर्माण में कोटपूतली जिले के ग्राम भैंसलाना के ब्लैक मार्बल के इस्तेमाल ने ना केवल भैंसलाना बल्कि पूरे कोटपूतली जिले को राजस्थान के साथ–साथ देश भर में सुर्खियों में ला दिया है।

उल्लेखनीय है कि पीएम नरेन्द्र मोदी ने रविवार को राजधानी नई दिल्ली में देश की नई संसद का उद्घाटन किया। जिसमें राजस्थान के 6 जिलों से लाई गई वस्तुओं का इस्तेमाल किया गया है। इसमें अशोक स्तम्भ के निर्माण के साथ–साथ पत्थरों की नक्काशी का कार्य आबु रोड़ व उदयपुर के मूर्तिकारों ने किया है। वहीं लगभग दो वर्षों तक चले संसद भवन के निर्माण में अलग–अलग चरणों में 40 ट्रकों में भरकर यहां के ग्राम भैंसलाना से 500 टन से अधिक ब्लैक मार्बल नई दिल्ली भिजवाया गया। इस मार्बल को खानों से निकालने के बाद चिराई के लिए पहले अजमेर के किशनगढ़ फिर वहां से नई दिल्ली भेजा गया। जहां संसद भवन में अलग–अलग वस्तुओं के निर्माण के साथ–साथ मूर्तिकारों ने इस ब्लैक मार्बल में नक्काशी का कार्य किया है। जिससे भवन की खुबसूरती काफी बढ़ गई है। यह ब्लैक मार्बल नये संसद की शान बढ़ा रहा है जो क्षेत्रवासियों के लिए बेहद गर्व का विषय है।

मुगलकालीन है इतिहास : यहां से करीब 15 किमी दूर स्थित भैंसलाना ग्राम की उक्त खानों का इतिहास मुगलकालीन है। उदयपुर के मूर्तिकारों ने इस काले मार्बल पर बेहद उम्दा नक्काशी का कार्य कर भारतीय संसद को नये रूप में उकेरा है। कोटपूतली के ऐतिहासिक गांव चतुर्भुज जो कि यहां से महज 05 किमी की दूरी पर स्थित है। वहां स्थित चतुर्भुज भगवान मंदिर में बनी मूर्ति का निर्माण भी इसी काले मार्बल से हुआ है।

बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1567 में हुआ था। क्योंकि चतुर्भुज गांव से ही साहबी नदी बहती है जिस पर मुगल बादशाह अकबर ने बांध बनाने का प्रयास किया था एवं विफल रहा था। इसी के बाद चतुर्भुज में मंदिर का निर्माण हुआ। इसी ब्लैक मार्बल से अन्य स्थानों पर जैसे मनोहरपुर में भी भगवान चतुर्भुज के मंदिर एवं वामन भगवान का मंदिर बनाया गया है। अन्य स्थानों पर भी इसी ब्लैक मार्बल से मंदिर व मूर्ति निर्माण का उल्लेख है जो इसकी विशिष्ठ पहचान है। विशेष चमक एवं काले चटक रंग के कारण यह ब्लैक मार्बल अलग ही छटा बिखेरता है। इसलिए इसे ब्लैक गोल्ड भी कहा जाता है।

कैल्शियम की अधिक मात्रा होने के कारण यह काफी नरम होता है जो नक्काशी के दौरान औजारों के उपयोग से टुटता नहीं है एवं मूर्तिकार इसे मनचाहा रूप दे सकते है। घिसाई के बाद भी इस पर चमक रहती है। मार्बल की यह भी विशेषता है कि निरन्तर सफाई करने से इसकी चमक बढ़ती है, जिसकी वजह से इससे पत्थर की मूर्तियां, टेबल, शिलालेख, स्तम्भ व शिवलिंग आदि भी बनाये जाते है।

ब्लैक गोल्ड के रूप में है पहचान :– भैंसलाना का यह ब्लैक मार्बल राजस्थान के मकराणा स्थित सफेद मार्बल की तरह दुनिया भर में ब्लैक गोल्ड के रूप में पहचान बना चुका है। जो कि विशेष तौर पर यूरोप सहित खाड़ी देशों में काफी लोकप्रिय है। ब्लैक मार्बल की चट्टानों को भैंसलाना की खानों से निकालने के बाद ब्लॉक के रूप में अजमेर के किशनगढ़ से चिराई कर गुजरात के कांडला पोर्ट द्वारा खाड़ी देशों में भेजा जाता है। इस व्यवसाय से बड़ी संख्या में भैंसलाना के युवा भी जुड़े हुए है। स्थानीय मार्बल व्यवसायी धर्म सिंह शेखावत का कहना है कि देश की सबसे बड़ी पंचायत में भैंसलाना के काले मार्बल का उपयोग स्थानीय ग्रामीणों के साथ–साथ पुरे कोटपूतली वासियों के लिए गर्व की बात है।

नई संसद में जब सांसद बैठेगें तो इस बात का गर्व हम सभी को होगा। भारतीय संसद देश की पहचान को दुनिया भर में मजबुत करती है। ऐसे में इसकी सुन्दरता को बढ़ाने वाले ब्लैक मार्बल की प्रसिद्धि बढ़ेगी तो इसका लाभ भैंसलाना के मार्बल व्यापारियों को भी मिलेगा।

इसके लिए ग्रामीण धर्म सिंह शेखावत समेत विक्रम सिंह, शम्भु सिंह, घम्मन यादव, सत्यवीर, हेमराज सिंह, सुमेर, गोविंद सिंह, आकाश पारीक व गजेन्द्र सिंह आदि ने पीएम मोदी का आभार जताया है।

राशिफल मंगलवार 30 मई, 2023

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, हस्त नक्षत्र बुधवार प्रात: 6:00 तक, सिद्धि योग रात्रि 8:54 तक, गर करण दिन 1:09 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–कर्क, बुध–मेष, गुरू–मेष, शुक्र–मिथुन, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवियोग और कुमार योग सम्पूर्ण दिन–रात है। भद्रा रात्रि 1:28 से बुधवार दिन 1:47 तक रहेगी। शुक्र कर्क राशि में सांय 7:39 पर प्रवेश करेगा। आज गंगा दशमी, मटुक भैरव जयन्ती, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस यात्रा दर्शन पूजा है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:43 तक, लाभ–अमृत 10:48 से 2:06 तक, शुभ 3:48 से 5:29 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:11

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में चल रही स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में शुभ–धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मन में असंतोष रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 73 संख्याः 297 प्रभात जयपुर, मंगलवार 30 मई , 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 3.50 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

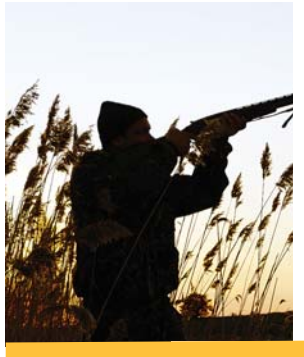

The Prey, the Poachers and The Politics

This sudden act of slitting his throat froze Battu Lal and the guards. They offered him medical aid but the poacher did not allow them to come closer.

Rambagh Palace: World's No. 1 Hotel

Rambagh Palace has stepped gracefully through many royal transitions

उत्तरी अमेरिका में घोड़ों के बारे में लिखी गई तमाम कहानियाँ व तथ्य बदलने वाले हैं। ''साइन्स'' नाम के जर्नल में छपे एक शोध में यह दावा किया गया है। घोड़ों के पुरावेशषों की जांच के बाद शोधकर्ताओं ने कहा कि, सोलहवीं सदी के पूर्वार्ध (1600) में ही यहाँ के मूल निवासियों ने समूचे अमेरिकन वैस्ट में घोड़ों को फैला दिया था और तब तक उनका यूरोपियन्स से कोई सम्पर्क नहीं हुआ था। ये नतीजे मूल निवासियों के मौखिक इतिहास से मेल खाते हैं, जिसमें यूरोपियन्स के आने से पहले से घोड़े के साथ इन लोगों के पारस्परिक संबंधों की बात बताई गई है। सत्रहवीं व अठाहवीं सदी की यूरोपियन पुस्तकों में दावा किया गया है कि, 1680 के पुऐब्लो रिवोल्ट के बाद क्षेत्र में घोड़ों का प्रसार हुआ था। नए शोध के सहलेखक जिम्मी आर्टरबेरी, जो नेटिव अमेरिकन ट्राइब, ''कमैन्ची'' के विशेषज्ञ हैं, ने कहा, ''हम हमेशा से जानते थे कि स्पैनिश लोगों के आने से पहले ही हमारा घोड़ों से सम्पर्क हो चुका था। अमेरिका में घोड़ों का उद्विकास तो 40 लाख साल पहले ही हो गया था लेकिन, फॉसिल रिकॉर्ड के अनुसार, दस हजार साल पहले वे लुप्त हो गए।'' शोध पत्र के अनुसार, संभवतः स्पैनिश उपनिवेशी 1519 में पहली बार घोड़ों को अमेरिका में वापस लाए। तब स्थानीय लोग ट्रेड नैटवर्क के जरिए घोड़ों को उत्तर की तरफ ले गए। यह पता लगाने के लिए कि, घोड़ों का प्रसार कब हुआ था, वैज्ञानिकों ने वैस्टर्न यू.एस. में मिले दो दर्जन से ज्यादा घोड़ों के अवशेषों की रेडियो कार्बन डेटिंग की व डी.एन.ए. का विश्लेषण किया, जिसमें सामने आया कि, वायोमिंग, कैन्सस और न्यूमैक्सिको में मिले घोड़ों के अवशेष पुएब्लो रिवोल्ट से भी पुराने हैं। शोध की सहलेखक ईवैट कॉलिन्स ने कहा, नतीजों से यह भी पता चलता है कि, इतिहास को समझने में स्थानीय मौखिक परम्पराओं का महत्व कितना ज्यादा है। उन्होंने कहा, इतने वर्षों तक हमारी संस्कृति को गलत तरीके से बताया जाता रहा है।

'दोनों नेताओं ने फैसला हाई कमान पर छोड़ा'

सोमवार की शाम को मल्लिकार्जुन खड़गे के निवास पर आयोजित बैठक, जिसमें राहुल गांधी, वेणु गोपाल, रंधावा व गहलोत थे तथा पायलट बाद में शरीक हुए, में यह सारांश निकला

- वेणु गोपाल ने बैठक के बाद, प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह जानकारी गहलोत व पायलट की उपस्थिति में दी।
- विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार, बैठक में यह प्रस्ताव आया था कि, पायलट को पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष बनाया जायेगा।
- पायलट ने प्रस्ताव पर अपनी सहमति दी, पर शर्त लगायी कि, वसुंधरा राजे व उनके भ्रष्टाचार के खिलाफ जांच के आदेश होने चाहिये।
- ऐसा नहीं लगता कि, गहलोत इस शर्त को स्वीकार करेंगे, पर इसकी क्रियान्विति कैसे होगी इसका निर्णय हाई कमान करेगा।
- सोमवार की रात को राहुल गांधी अमेरिका के लिये प्रस्थान कर रहे हैं, अतः अभी स्पष्ट नहीं है कि, क्रियान्वयन की प्रक्रिया का निर्धारण, तुरंत हो जायेगा।
- ऐसा लगता है कि, पायलट को अपना प्रस्तावित आंदोलन वापस लेने का मौका दिया गया है, दोनों नेताओं को राजनीतिक निर्णय में बराबर का भागीदार बनाया गया है तथा केवल गहलोत को ''फ्री हैण्ड'' नहीं मिलेगा, जैसा वे चाहते हैं।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 मई। अशोक गहलोत और सचिन पायलट एक साथ नज़र आए, तथा के.सी. वेणुगोपाल ने घोषणा की कि दोनों मिलकर राजस्थान विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि इसके तौर तरीके वे प्रक्रिया पर नेतृत्व फैसला करेगा।

आज शाम कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के निवास पर एक मीटिंग हुई जिसमें राहुल गांधी, के.सी. वेणुगोपाल, रंधावा, अशोक गहलोत उपस्थित थे। बाद में इसमें सचिन पायलट भी शामिल हो गए।

सूत्रों ने बताया कि सचिन पायलट को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रखा गया।

पता चला है कि पायलट ने इस प्रस्ताव पर इस शर्त के साथ सहमति दे दी है कि वसुंधरा राजे और उनके भ्रष्टाचार के कारनामों के खिलाफ जांच के आदेश दिए जाने चाहिए। इस बात की संभावना बहुत ही कम है कि गहलोत इस शर्त पर सहमत होंगे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों के साथ संसद के चुनाव कराने पर मंथन शुरू?

मोदी-शाह द्वय इस रणनीति के लाभ-हानि पर गंभीर मंथन कर रहे हैं?

- यह सोच कर्नाटक में भाजपा की भारी हार के बाद, पार्टी को काफी आकर्षक लग रहा है।
- संसद का चुनाव समय से पहले कराने के पक्ष में एक बड़ा तर्क यह दिया जा रहा है कि, विपक्ष को एक होने का पूरा मौका नहीं मिल पायेगा।
- दूसरा तर्क है, विपक्ष, विशेषकर कांग्रेस का ध्यान बंट जायेगा। वो विधानसभा चुनाव पर या संसद के चुनाव पर पूरा ध्यान नहीं दे पायेगी।
- दो चुनाव एक साथ होने से विपक्ष, (मुख्यतया कांग्रेस) के पास धन व साधनों की भारी कमी रहेगी।
- अंतिम तर्क यह है कि, राहुल गांधी अपनी पूर्व से पश्चिम भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा चरण आरंभ नहीं कर पायेंगे।
- ऐसा माना जाता है कि, प्रथम चरण में कांग्रेस को कर्नाटक में अच्छा लाभ मिला था।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 मई। पुराने जमाने से चली आ रही जाँची-परखी रणनीति रही है कि जब दुश्मन झपकी ले रहा हो या असावधान हो, उस समय उस पर एकाएक हमला बोल दो। मोदी सरकार इस रणनीति से चिंतन करती तथा अपने राजनैतिक विरोधियों को जरा सी गलती करते दबोचने पर विचार करती प्रतीत हो रही है।

भाजपा का शीर्ष नेतृत्व, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल हैं, यह तय करने की कवायद में गंभीरता से लगा हुआ है कि अगर अगले वर्ष होने वाले आम चुनाव कुछ समय पहले करा लिये जायें तथा उन्हें लाभ होगा या हानि। भाजपा का उद्देश्य विपक्ष को संगठित करने के विपक्षी दलों के प्रयासों का कमजोर करना, बल्कि उन्हें ध्वस्त करना है।

एक शीर्षस्थ सूत्र ने अपना नाम जाहिर न करने की शर्त पर कहा कि आम चुनावों का छः महीने पहले राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ से विधानसभा चुनावों के साथ कराने के फायदे-नुकसान के अध्ययन की शुरूआत इसी महीने हुये कर्नाटक विधानसभा चुनावों में भाजपा की जबरदस्त हार के तुरंत बाद शुरू हो गई थी।

सूत्रों का कहना है कि लोकसभा चुनाव समय पूर्व कराने का विचार पैदा होने का असली कारण यह तथ्य रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी के जबरदस्त प्रयासों, जिनमें उनके द्वारा 19 जन सभाएं संबोधित करना तथा 6 रोड शो करना भी शामिल है, के बावजूद भाजपा की जबरदस्त हार हुई थी। संक्षेप में, भाजपा ने कांग्रेस को पछाड़ने में अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। चुनावों की घोषणा होने के बाद, भगवा पार्टी ने पूरे राज्य में प्रचार करते हुए आठ रैलियाँ की थीं। भाजपा के स्वयं के आंकड़े बताते हैं कि पार्टी नेता राज्य के 311 मंदिरों और मठों में गये, उन्होंने 9125 जनसभाएं कीं, 1377 रोड शो किये तथा 9077 नुक्कड़ सभाएं कीं।

जहां विपक्षी दल भाजपा को टक्कर देने के लिये, उनके प्रत्याशी के सामने विपक्ष का एक ही प्रत्याशी खड़ा करने की योजना के साथ, विपक्षी मोर्चा बनाने में समय लगा रहे हैं तथा इस सिलसिले में उनकी पहली मीटिंग 12 जून को पटना में होना संभावित हैं, वहीं भाजपा पूरे दृढ़निश्चय के साथ ऐसी रणनीति बनाने में लगी हुई है कि विपक्षी नेताओं को परस्पर उचित समझबूझ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या आपको कम सुनाई देता है।
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
फ्री सुनाई की जाँच
TRIAL OF HEARING AID
CALL FOR APPOINTMENT
+91 94602 07080
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
www.perfecthearingsolutions.com

'महिला चिकित्सक को पी.जी. के अगले सत्र में प्रवेश दिया जाए'

- राजस्थान हाई कोर्ट ने डॉ. स्नेहा तिवाड़ी की याचिका पर यह आदेश दिए और कहा कि, अपीलार्थी को बिना किसी गल्ती के पी.जी. पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं दिया गया।

जयपुर, 29 मई (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने ग्रामीण क्षेत्र में काम कर चुकी चिकित्सक को बोनस अंकों का लाभ नहीं देने के मामले में आदेश दिए हैं कि, चिकित्सक को पीजी पाठ्यक्रम के अगले सत्र में प्रवेश दिया जाए। कोर्ट ने कहा है कि, इस दौरान किसी दूसरे अभ्यर्थी का प्रवेश निरस्त नहीं किया जाए। एक्टिंग चीफ जस्टिस, एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस अनिल उपमन की खंडपीठ ने डॉ. स्नेहा तिवाड़ी की ओर से दायर अपील पर ये आदेश दिए।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि, अपीलार्थी को बिना किसी गलती पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश से वंचित किया गया है। हालांकि वर्तमान सत्र में प्रवेश की अंतिम तिथि निकल चुकी है और अपीलार्थी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

12 जून को पटना में आयोजित विपक्ष की बैठक की तैयारी जोरों पर

पिछले कुछ माह में नीतीश कुमार ने तो ज्ञान हासिल कर लिया है कि, भाजपा व कांग्रेस से बराबरी की दूरी रखने का चिंतन क्षेत्रीय दलों के लिये सही नहीं है

- ममता बनर्जी, अखिलेश यादव व केजरीवाल जैसे नेता भी अब नीतीश के वन-टू-वन उम्मीदवार के फॉर्मूले को स्वीकार करने लगे हैं।
- अतः पटना में विपक्ष के 18 नेता, शरद पवार, नवीन पटनायक, राहुल गांधी व अखिलेश यादव भी विपक्ष के नेताओं की बैठक में शामिल होंगे।
- एक बिहार के नेता ने, पर, यह भी कटाक्ष किया कि, इन सभी नेताओं को भाजपा सरकार द्वारा प्रेरित ई.डी./सी.बी.आई. के छापों का भय सदा सताता रहता है, अतः उनके एक मंच पर आने का यह भी बड़ा कारण है।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 मई। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा 12 जून को पटना में बुलाई जा रही विपक्षी नेताओं की विशाल मीटिंग की तैयारियां की जा रही हैं। जनता दल (यू) सूत्रों ने कहा कि यह मीटिंग इस प्रकार की महत्वपूर्ण मीटिंगों, जो देश के विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न होंगी, की शृंखला की पहली मीटिंग होगी।

कर्नाटक में भाजपा की पराजय के बाद, विपक्षी नेताओं के चाल-ढाल और हाव-भाव में इस बात को लेकर नया उत्साह और जोश आ गया है और निरन्तर बढ़ता जा रहा है कि 2024 के संसदीय चुनावों में भाजपा से लड़ने के लिये गैर-भाजपा दल परस्पर सहयोग कर सकते हैं। नये संसद भवन के उद्घाटन का 19 विपक्षी दलों ने बहिष्कार किया था। इससे पूर्व, विपक्ष शासित राज्यों के छः मुख्यमंत्री पिछले शनिवार को नीति आयोग की उस मीटिंग में शामिल नहीं हुये थे, जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की थी।

पिछले महीनों में, विपक्षी नेताओं को साथ लाने में, खासतौर से ममता बनर्जी, अखिलेश यादव तथा अरविन्द केजरीवाल जैसे क्षेत्रीय नेताओं को एक साथ लाने का मामले में, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को कुछ सफलता मिली है। इससे पूर्व, इन तीनों क्षेत्रीय नेताओं ने कांग्रेस के साथ आने की संभावना को ही खारिज कर दिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पेपर लीक के आरोपी शेर सिंह मीणा को प्रमोशन

- सीनियर टीचर भर्ती पेपर लीक के आरोपी शेर सिंह मीणा को प्रिंसिपल पद पर प्रमोशन देने वाले माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल को राज्य सरकार ने ए.पी.ओ. कर दिया है।

बीकानेर, 29 मई (कासं)। सीनियर टीचर भर्ती पेपर लीक के मास्टरमाइंड अनिल उर्फ शेर सिंह मीणा को प्रमोट करने के मामले में माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल को राज्य सरकार ने एपीओ कर दिया है।

गौरव को फिलहाल जयपुर में ही हाजरी देनी होगी। पेपर लीक के मास्टरमाइंड अनिल मीणा को वाइस प्रिंसिपल से प्रिंसिपल पद पर प्रमोट किया गया है, इस खबर के बाद राज्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

न संसद की पुरानी बिल्डिंग रही न वैसे सांसद और न वैसे दिन, जब ''जर्नलिस्ट'' स्वतंत्र घूमते थे खबर की तलाश में

अंजन रॉय उस जमाने के पुराने वरिष्ठ पत्रकार, पुरानी यादों से घिरे हुए, उदास हैं

- आज के ''डिजिटल युग'' में संसद को ''कवर'' करने वाले जर्नलिस्ट लगभग ''अनुपयोगी'' मान लिये गये हैं, पर, क्या यह प्रजातंत्र के लिये शुभ है?

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 मई। उद्घाटन का दिन आया और चला भी गया। नई संसद का उद्घाटन हो गया, हालांकि बहुतों ने बहिष्कार किया। इसका अर्थ है कि पुरानी संसद का पटाक्षेप हो गया है। अब इसका क्या होगा यह तय नहीं है। हालांकि कुछ का सुझान है कि अब पुरानी इमारतों की तरह इसे भी हैरिटेज होटल बना दिया जाए। वहीं कुछ का सुझाव है कि इसे संसदीय कार्यों से संबंधित मीटिंग व कॉन्फ्रेंस के लिए रखा जाए।

लेकिन सबसे खूबसूरत सुझाव एक जाने माने आर्किटैक्ट की तरफ से आया है कि इसे पूरी गरिमा से पुरातन होने दिया जाए और इसकी मरम्मत नहीं की जाए। प्रकृति को इसका अधिग्रहण करने दिया जाए, इस खूबसूरत इमारत कक्षों में घास-पात, पेड़-पौधे उगने दिए जाएं।

एक पुराने संसदीय संवाददाता एवं पत्रकार के रूप में मेरी इस इमारत से काफी यादें जुड़ी हुई है। चुने हुए प्रतिनिधियों के अलावा, संसदीय संवाददाता व पत्रकार भी इस भवन का प्रमुख हिस्सा रहे है। हम अक्सर यहां बैठा करते थे।

ईमानदारी से कहें तो हम लोग संसद के निर्वाचित सदस्यों के लिए हमेशा परेशानी का सबब रहे हैं। पर हमें न केवल उन्होंने हमेशा बर्दाश्त किया बल्कि प्रोत्साहन भी दिया। कई नेता तो हमारे साथ अक्सर बैठते थे और हमें ऐसे संकेत देते थे कि वे मीडिया में क्या देखना पसंद करते हैं।

यहां अक्सर खुला भाई-भतीजावाद होता था। कुछ पत्रकार कुछ बड़े नेताओं के प्रिय हुआ करते थे तो वे नेता उन्हें अपने चैम्बर में बुलाते थे। यह सर्वज्ञात था, किसी को भी इससे शिकायत नहीं थी। खबरों के लिए खुली प्रतिस्पर्द्धा होती थी पर कोई किसी की भी भावनाओं को आहत नहीं करता था।

जब संसद चल रही होती थी। संसद के गलियारे में अक्सर एल.के. अडवानी को अपने प्रिय बी.बी.सी. संवाददाता लम्बे कद के और सैंडल पहनने वाले मार्क टली से बात करते देखा जा सकता था। भाकपा नेता गुरदास दासगुप्ता को वामपंथी रुझान वाले पत्रकारों के साथ देखा जा सकता था। दास गुप्ता के पास बैंकिंग व फाइनैंस के लिए हमेशा नई टिप्स होती थीं।

विशेष तवज्जो देने की इस प्रवृत्ति को अलग रख दें तो संसद के गलियारों में घूमने वाले, खम्बों के इर्द-गिर्द खड़े रहने वाले सभी में भाईचारा था। गौरतलब है कि ये स्तम्भ संसद भवन की पहचान थे। इन दीर्घाओं में जब सभी लोग एकत्र होते थे और बातचीत करते थे, गप्पे मारते थे, तब वहां चाय-काफी वाले भी घूमते दिख जाते थे। और कई बार तो आम हंसी मजाक में बड़े नेता भी शामिल हो जाते थे।

दीर्घा से सटे कक्षों के सामने दोनों सदनों की टेबल्स पर वितरित किए जाने वाले दस्तावेज रखे रहते थे। यह डिजिटल युग से पहले का दौर था जब खबर या कोई भी जानकारी कागजों पर ही दी जाती थी। कई बार लाइन में लग कर इंतजार करने में भी बहुत ऊब और खीज होती थी पर आज तो लाइन में लग कर इंतजार करने की अब और खीज भी याद आ रही है।

हम सुनते हैं कि पत्रकारों को नए संसद भवन से दूर रखा गया है, कुछ को ही बुलाया गया है। वैसे डिजिटल युग में उपस्थित होने के कोई मायने नहीं है। दूसरे पत्रकारों के लिए कोई स्थान नहीं है। वहां सैंट्रल हॉल, गलियारे, दीर्घा नहीं है जहां पत्रकार ही नहीं नेता भी खुलकर बतियाते थे।

इस साहसिक कदम से खबरें और मुख्य जानकारियां ''लीक होने का दौर खत्म हो जाएगा, जिससे पत्रकार कई बड़ी-बड़ी खोज करने से वंचित हो जाएंगे। अब सूचना बेहद गोपनीय रखी जाएगी। हो सकता है इससे प्रशासन व सत्तारूढ़ पक्ष को लाभ हो लेकिन खबरों वे सूचना के लिए प्रतिस्पर्द्धा लोकतंत्र का कामकाज सुनिश्चित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दरगाह में तोड़फोड़ करने वाले छह गिरफ्तार

- घटना उदयपुर के माकड़सीमा गांव की है, जहां 22 मई की रात पाल के पास की दरगाह पर अज्ञात व्यक्तियों ने तोड़-फोड़ की थी।

उदयपुर, 29 मई (कासं)। गींगला थाना पुलिस ने दरगाह में तोड़फोड करने के मामले में छह जनों को गिरफ्तार किया है।

प्रकरण के अनुसार, गत 23 मई को आदिल पुत्र अशफाक मन्सुरी निवासी सलूम्बर ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि, माकडसिमा गांव में पाल के पास स्थित दरगाह में 22 मई रात में अज्ञात व्यक्तियों ने तोड़फोड की। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ.प्रियंका, पुलिस उप अधीक्षक सुधा पालावत के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'संसद की इमारत पर चर्चा हो, लेकिन विशेष सत्र बुलाकर देश के मुद्दों पर भी चर्चा हो'

केंद्र सरकार के नौ साल पूरे होने पर कांग्रेस नेता आनंद शर्मा ने पूछे नौ सवाल

जयपुर, (का.प्र.)। केंद्र की मोदी सरकार के 9 साल पूरे होने पर कांग्रेस ने भाजपा नीत एनडीए सरकार से 9 साल पूरे होने पर 9 सवाल पूछे हैं। सोमवार को पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने जयपुर में देश की महिला पहलवानों की ओर से रविवार को किए गए प्रदर्शन और उस प्रदर्शन पर महिला पहलवानों की गिरफ्तारी की निंदा करते हुए केंद्र सरकार से सवाल पूछे।

शर्मा ने कहा कि भले ही संसद की नई इमारत भव्य हो, लेकिन अगर नई संसद से प्रजातंत्र की बात कही जा रही है तो फिर सरकार को संसद का विशेष सत्र बुलाकर उन मुद्दों पर चर्चा की शुरुआत करनी चाहिए। आनंद शर्मा ने कहा कि संसद की इमारत अच्छी बनी है, उस पर चर्चा तो होनी ही चाहिए, लेकिन जब तक विशेष सत्र बुलाकर देश के मुद्दों पर चर्चा नहीं होगी, तब तक हम कल कैसे कहेंगे कि देश में प्रजातंत्र जीवंत है। उन्होंने कहा कि उनकी सलाह यही है कि सभी मुद्दों पर सरकार को अपना पक्ष रखना चाहिए। अगर वो नई संसद में नई शुरुआत की बात करते हैं तो विपक्ष की तीन मुख्य मुद्दों को स्वीकार करके विशेष सत्र के जरिए चर्चा करवाएं, ताकि पूरा देश सुने और सभी को लगे कि सदन गूंज रहा है।

आनंद शर्मा ने कहा कि केवल भव्य इमारत से कुछ होना जाना नहीं है। देश की जनता यह देखना चाहती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार अपने वचन पर कितनी अडिग है। साथ ही उन्होंने कहा कि बेरोजगारी, महंगाई, किसानों की समस्याओं, देश की सुरक्षा,

> ■ 'राजस्थान में गहलोत सरकार अच्छा काम कर रही है जिस तरह हिमाचल, कर्नाटक जीते, यहां फिर जीतेंगे'

देश में बढ़ती अमीर-गरीब की खाई पर अविलंब चर्चा की जरूरत है। आनंद शर्मा ने महिला पहलवानों के पक्ष में कहा कि कुछ बातें कई बार कष्ट देती हैं। हम महिला शक्ति की बात करते हैं, महिलाओं के सम्मान की बात करते हैं, लेकिन रविवार को संसद समारोह के बीच विदेशों में देश के लिए मेडल जीतने वाली बेटियों के साथ जो हुआ, उसे देश ने देखा है। शर्मा ने कहा कि जिनका हम सम्मान और अभिनंदन करते हैं, अगर वो ही कोई शिकायत कर रही हैं तो उसे गंभीरता से लेने की जरूरत है न कि उन्हें ही गिरफ्तार करने की। रविवार की घटना का कांग्रेस नेता ने निंदा करते हुए कहा कि भारत में बेटियों के साथ जो रविवार को हुआ उसे सभी ने देखा है।

आनंद शर्मा ने कहा कि विपक्ष जो बात उठा रहा है वो पूरे राष्ट्र की चिंता है। प्रधानमंत्री भी 31 मई को राजस्थान आ रहे हैं। ऐसे में यहां के किसान उनसे उनके किए वादों के बारे में सवाल पूछें। शर्मा ने कहा कि पीएम मोदी ने किसानों से उनकी आय दोगनी करने का वादा किया था, लेकिन ये तो तीन कानून लेकर आ गए थे, जिसे तमाम विरोधों के बाद सरकार को वापस लेना पड़ा था।

राजस्थान कांग्रेस और गहलोत-पायलट पर आलाकमान के निर्णय पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा ने कहा कि एआईसीसी के राष्ट्रीय अध्यक्ष इस मामले पर निर्णय लेंगे, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह जरूर कहा कि राजस्थान में कांग्रेस की एक मजबूत सरकार है। अशोक गहलोत मुख्यमंत्री हैं और जिस ढंग से काम हुआ है, जो नई नीतियां बनी हैं, नई घोषणाएं हुई हैं, नया बजट आया है, उससे हम पूरी तरीके से आश्वस्त हैं कि जिस तरह से कांग्रेस का परचम हिमाचल में फहराया गया। इसके बाद कर्नाटक में शंखनाद हुआ है, उसी तरह राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में होगा और कांग्रेस वापसी और जीत दर्ज करेगी।

आस्ट्रेलिया के सांसदों से डॉ. पूनिया ने मोदी सरकार की योजनाओं पर चर्चा की

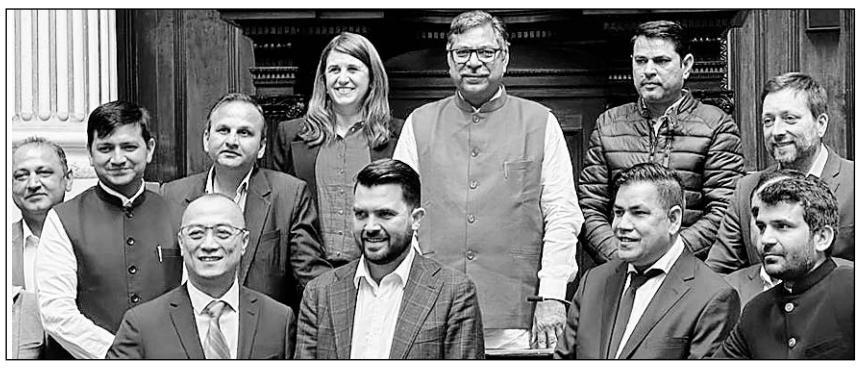

विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष डॉ.सतीश पूनिया ने सोमवार को आस्ट्रेलिया में 'पार्लियामेंट ऑफ विक्टोरिया' में आस्ट्रेलिया के कई सांसदों व ब्यूरोक्रेटस से शिष्टाचार मुलाकात की।

मेलबर्न/जयपुर। आस्ट्रेलिया प्रवास पर राजस्थान विधानसभा उपनेता प्रतिपक्ष एवं भाजपा पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने मेलबर्न में प्रवासी भारतीयों के साथ बाप्स श्री स्वामीनारायण मंदिर के दिव्य दर्शन कर जलाभिषेक किया। इस दौरान वहां उपस्थित प्रवासी भारतीयों से संवाद कर भारतीय संस्कृति और सैद्धांतिक मूल्यों पर चर्चा की। इससे एक दिन पहले ऑस्ट्रेलिया में प्रवासी राजस्थानियों से आत्मिक संवाद किया। प्रतिधिनिमंडल के साथ सतीश पूनिया ने 'पार्लियामेंट ऑफ विक्टोरिया' विजिट किया, जहां आस्ट्रेलिया के कई सांसदों व ब्यूरोक्रेटस से शिष्टाचार मुलाकात की। आस्ट्रेलिया के सांसदों के साथ सतीश पूनिया ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के सफलतम 9 वर्ष की जनकल्याणकारी योजनाओं और ऐतिहासिक फैसलों की दुनियाभर में हो रही चर्चा पर संवाद किया।

> ■ मेलबर्न में प्रवासी भारतीयों के साथ सतीश पूनियां ने बाप्स श्री स्वामीनारायण मंदिर के दर्शन कर जलाभिषेक किया

राजस्थान और आस्ट्रेलिया के बीच भविष्य में कृषि, पर्यटन, जल संरक्षण इत्यादि मुद्दों सहित विकास के विभिन्न बिन्दुओं पर भी बात की।

पूनिया की आस्ट्रेलिया के सांसद एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष मैथ्यू गुए, सांसद ब्रेड बैटिन, सांसद एन्ने मैरी हरमेन्स, सांसद ट्रंग लू, सांसद ईवान मुलहॉलैंड, व्याधम के पूर्व सिटी काउन्सलर इंन्ताज खान, इवान वॉल्टर्स सहित पक्ष-विपक्ष के सांसदों, अन्य जनप्रतिनिधि और ब्यूरोक्रेटस के साथ शिष्टाचार मुलाकात हुई, जिसमें मोदी सरकार के ऐतिहासिक कार्यों व योजनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई।

डॉ. पूनिया आस्ट्रेलिया में कॉन्सुलेट जनरल ऑफ इंडिया भी गये, जहां कॉन्सुल जनरल डॉ. सुशील कुमार और डिप्टी कॉन्सुल जनरल गिरीश के साथ उनकी शिष्टाचार भेंट हुई। इसके बाद डॉ. पूनियां मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड देखने पहुंचे, जहां से उन्होंने अपना एक वीडियो संदेश जारी किया जिसमें उन्होंने कहा कि, नमस्कार, राम-राम, मैं इस समय ऐतिहासिक मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर हूं, आस्ट्रेलिया का यह वह मैदान है जो दुनिया में क्रिकेट का तीर्थ कहा जाता है लेकिन हम गौरवान्वित हो सकते हैं, क्योंकि उस जमाने में उस पीढ़ी में जब रेडियो पर कमेंट्री सुनता था, 1978 का दौर मुझे याद है जनवरी में जब भारत के स्पिनर चंद्रशेखर ने 6 विकेट लिये 52 रन देकर, दूसरी इनिंग में भी वही चमत्कार किया।

सीकर की बैठक में कलह से स्पष्ट है कि कांग्रेस में अंर्तविरोध चरम पर है : राजेन्द्र राठौड़

जयपुर। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने ट्वीट कर कहा कि दिल्ली में कांग्रेस हाईकमान की गहलोत और पायलट के बीच सुलह कराने की कोशिश से पूर्व सीकर में मीटिंग में कांग्रेस नेताओं के बीच की कलह से साबित हो गया है कि कांग्रेस में अंतर्विरोध चरम पर है, इनके नेताओं को सिर्फ अपनी कुर्सी बचाने से मतलब है, ना कि जनता से जुडे विकास के मुद्दों से।

राठौड ने कहा कि कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने जिस प्रकार सार्वजनिक रूप से अपनी ही पार्टी के वरिष्ठ विधायक एवं राजस्थान विधानसभा में सभापति राजेन्द्र पारीक के साथ दुर्व्यवहार किया है वो दुर्भाग्यपूर्ण है। कांग्रेस की पाठशाला में वरिष्ठ नेताओं का अपमान करना ही सिखाया जाता है। अनुशासनहीनता, गुटबाजी, अंर्तकलह, अपमान की राजनीति ही कांग्रेस की असली पहचान है।

राठौड ने कहा कि पीसीसी अध्यक्ष को यह वहम नहीं होना चाहिये कि सरकार 4 महीने बाद जिंदा रहेगी। वरिष्ठ विधायक राजेन्द्र पारीक को भी यह वहम नहीं होना चाहिये कि वो ही गहलोत के खास है। आज की बैठक में खास और आम में फर्क साफ दिख रहा है। राठौड ने कहा कि कुछ दिन पूर्व अजमेर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच जमकर लात घूंसे चले थे। कांग्रेस में सिर फुटोव्वल की स्थिति है। अब आगामी समय में सुरक्षा कवच और पुलिस के कडे पहरे के बिना कांग्रेस की मीटिंग संभव ही नहीं है।

प्रदेश में 3 नए संक्रमित मिले

जयपुर। प्रदेश में सोमवार को तीन नए करोना संक्रमित मिले हैं। वहीं इस बीच केवल 2 ही मरीज ठीक हुए हैं। राज्य में फिलहाल 58 संक्रमितों का इलाज चल रहा है।

प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में केवल दो ही जिलों में नए संक्रमित मिले हैं। इनमें उदयपुर में दो और अजमेर में एक नया मरीज सामने आया है। इससे पहले राज्य में रविवार को पांच रोगी पाए गए थे। इधर आज राज्य में 639 कोविड जांच की गई है।

हज जाने वालों की 10वीं फ्लाइट रवाना

जयपुर। राजस्थान स्टेट हज कमेटी मेंबर अब्दुल हकीम खान ने बताया हज 2023 के हज के मुकद्दस सफर पर जाने वाले हाजियों की दसवीं फ्लाइट के हाजियों का जयपुर एयरपोर्ट पर इस्तकबाल किया। जिसमें मेंबर राजस्थान स्टेट हज कमेटी अब्दुल हकीम खान अधिशासी अधिकारी डाक्टर महमूद ख़ान कस्टम अधिकारी अब्दुल हमीद खान स्टेट हज कमेटी मेंबर रियाज़ फारूकी जनाब मतलूब खान सलिम अहमद समाजसेवी वसीम खान युवा नेता मौजूद रहे व हज 2023 की दसवीं फ्लाइट के 160 हाजियों की फ्लाइट जयपुर एयरपोर्ट से मदीना शरीफ़ के लिए रवाना व सभी हाजियों को हज 2023 की मुबारकबाद दी।

राज्यपाल कलराज मिश्र से सोमवार को राजभवन में भारतीय प्रशासनिक सेवा के नौ प्रशिक्षु अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार मुलाकात की। राज्यपाल ने प्रशिक्षु आईएएस अधिकारियों से आव्हान किया कि वे राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव रखते हुए आमजन को अधिकाधिक लाभान्वित करने के लिए कार्य करें। उन्होंने इन अधिकारियों से संवेदनशील होकर विकास योजनाओं एवं जन कल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ ही आमजन से जुड़ी समस्याओं के निराकरण के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य करने का आव्हान भी किया। कार्मिक विभाग के प्रमुख शासन सचिव हेमंत गेरा के नेतृत्व में मुलाकात करने वाले इस प्रतिनिधिमंडल में वर्ष 2022 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी अंशु प्रिया, श्रद्धा गोमे एवं भैसारे शुभम अशोक, दिव्यांश सिंह, मोहित कासनिया, प्रीतम कुमार, सक्षम गोयल, यक्ष चौधरी और यथार्थ शेखर शामिल थे।

मोदी सरकार के नौ वर्ष सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित : पीयूष गोयल

> ■ सीमा सुरक्षा और मजबूत अर्थव्यवस्था नौ साल का ऐतिहासिक कालखंड : सीपी जोशी
>
> ■ नौ साल की कड़ी मेहनत और जनता का प्यार अत्योंदय का सम्मान : पूनम महाजन

जयपुर। केंद्र सरकार के ऐतिहासिक नौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर जयपुर में मीडिया संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। मीडिया संवाद कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने मोदी सरकार के नौ वर्षों के सुशासन और सेवा भावना से किए गए विकास कार्यों के संबंध में पत्रकारों से संवाद किया। इस दौरान सांसद पूनम महाजन ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से पत्रकारों से परिचर्चा की। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने पत्रकारों से संवाद करते हुए कहा कि जनता ने नौ साल पहले प्रचंड बहुमत के साथ जो सरकार चुनी थी, वह उनकी उम्मीदों पर खरा उतरी है, मोदी ने 24 घंटे बिना रूके जनता के हितों के लिए काम किया है। देश के 140 करोड नागरिकों को सशक्त करने और शोषित वंचितों तक सरकार की प्रत्येक योजना का लाभ पहुंचे इस सोच के साथ काम किया है। भाजपा ने सुशासन की नीती के बूते ही विश्व में देश को एक नई पहचान मदर ऑफ डेमोक्रेशी के रूप में दी है। भाजपा सरकार ने थ्री डी का संकल्प लेकर निरंतर विकास की दिशा में काम किया है। इसी के चलते आज भारत विश्व पटल पर अपनी नई मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि हम देश को विश्वास दिलाते हैं कि प्रत्येक दिशा में सेवाभाव से काम करते हुए हम विश्व के सबसे युवा लोकतंत्र को नई उम्मीदों के साथ बुलंदियों पर ले जाएंगे। देश ने इन नौ वर्षों में यह देख लिया कि शोषितों और वंचितों को हर हाल में उनका हक मिलेगा।

सांसद पूनम महाजन ने केंद्र सरकार के गौरवपूर्ण नौ सालों की तमाम उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। अपने प्रस्तुतीकरण में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुशासन संकल्प के साथ गरीब और वंचित को समाज में सम्मान सुरक्षा दिलाने का वादा किया था जिसको उन्होने पूरा करके दिखाया है। इस दौरान पूनम महाजन ने कोविड महामारी से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा किए गए ऐतिहासिक कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि जहां जापान जैसे देशों में टीकाकरण का कार्य बहुत धीमी गति से चल रहा था उस समय के भारत ने लगभग टीकाकरण का काम पूरा कर लिया था। इसके अलावा भारत ने 220 करोड़ वैक्सीन डोज खुद के दम पर तैयार करके अन्य देशों को भी महामारी के इस विकट समय में सहायता पहुंचाई थी।

मीडिया संवाद कार्यक्रम के दौरान भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने पत्रकारों से संवाद के दौरान कहा कि मोदी के नौ वर्ष के ऐतिहासिक कालखंड में सीमा सुरक्षा के साथ अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में बेहतर कार्य हुए हैं। इसके अलावा ग्रामीण विकास की दिशा में गांव और ढाणी तक केंद्र सरकार की योजनाएं पहुंची हैं। केंद्र सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ राजस्थान समेत देश के सूदर इलाकों में बैठे गरीब वंचित को मिल रहा है।

बिचले की बैठक

हमारी प्रिय **श्रीमती अलका जैन** धर्मपत्नी श्री कमलचन्दजी जैन (टोंग्या, जहाजपुरवाले) सुपुत्री स्व. फूंदालालजी-कमलादेवी कटारिया का स्वर्गवास 29.05.2023 को हो गया है। बिचले दिन की बैठक 30.05.2023 को दोपहर 1.00 से 3.00 बजे तक 175, बख्शी हाऊस, बख्शीजी का चौक रामगंज जयपुर पर होगी। तीये की बैठक 31.05.2023को प्रातः 9.00 बजे जैन मंदिर एसएफएस, मानसरोवर पर होगी।

शोकाकुल- रतनलाल (चाचाजी), राकेश, निर्मल, ओमजी, विजय, अशोक, सुरेश, विपिन, संदीप, सीमांत (भ्राता), मुन्नादेवी-प्रेमचन्द गोधा, अल्पना-महेश कासलीवाल, अरूणा-कमलेश पाटनी (बहन-बहनोई) ऋषभ, अनिमेष, आयूष, सिद्धार्थ, संकल्प, अविरल एवं समस्त कटारिया

तीये की बैठक

अत्यन्त दुख के साथ सुचित करते है कि **श्री मन्नाराम मीणा** पुत्र स्व.श्री चौथूराम मीणा का स्वर्गवास 28.05.2023 को हो गया है। जिनकी तीये की बैठक 30.05.2023 को 2 से 4 बजे तक निवास स्थान मीणो की ढाणी चरणनदी मुरलीपुरा जयपुर पर होगी।

शोकाकुल- कल्याणसहाय, तेहपाल, रामसहाय, रामचन्द्र (भाई) राधेश्याम (पुत्र) रमेश, हनुमान (भतीजे) साहिल, अक्षत, धनुष (पौत्र) समस्त छाड़वाल परिवार।

9314644152, 9460138071

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

रिश्वत मामले में आरपीएफ के निरीक्षक सहित तीन को सजा

जयपुर, (का.सं.)। एसीबी मामलों की विशेष अदालत ने रेलवे टिकट की दलाली को लेकर दर्ज प्रकरण को रफा दफा करने की एवज में पांच हजार रुपए की रिश्वत लेने के मामले में आरपीएफ के तत्कालीन निरीक्षक कैलाश चंद और सिपाही जगवीर व सांवरमल मीणा को एक-एक साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने प्रत्येक अभियुक्त पर पन्द्रह हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक ने अदालत को बताया कि सीकर के रानोली निवासी चिरंजीलाल शर्मा ने 25 जुलाई, 2007 को एसीबी, सीकर में रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में बताया गया कि वह एलआईसी एजेंट हैं और किस्त लेने जयपुर गया था। इस दौरान उसके और उसके भाई पर रेलवे टिकट की दलाली का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज कर ली गई। ऐसे में अपना पक्ष रखने आरपीएफ, रींगस गया। जहां केस रफा दफा करने की एवज में आरपीएफ निरीक्षक को पांच हजार रुपए की बात कही गई। इस दौरान सत्यापन के दौरान आरपीएफ निरीक्षक कैलाश चंद के कहने पर सिपाही जगवीर सिंह ने दो हजार रुपए लिए।

सामूहिक विवाह सम्मेलन आज

जयपुर। अखिल भारतीय हरियाणा ब्राह्मण महासभा की ओर से आयोजित किए जाने वाले दो दिवसीय सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर शनिवार को प्रेस वार्ता की गई। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरदीचंद शर्मा बंबाला ने बताया कि बस्सी के बैनाडा धाम के श्रीजी धाम में आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन मंगलवार को किया जाएगा। जिसमें लगभग 51 जोड़े परिणय सूत्र में बंधेंगे। सम्मेलन में नवविवाहित जोड़ों को 51 तरह के आइटम महासभा के माध्यम से भामाशाहो की ओर से उपहार स्वरूप दिए जाएंगे।

राष्ट्र सेविका समिति का पथ संचलन निकला

जयपुर। राष्ट्र सेविका समिति जयपुर प्रांत के प्रवेश वर्ग का पथ संचलन सोमवार को जयपुर में हुआ। संचलन में माताओं बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

संचलन जवाहर नगर स्थित सरस्वती बालिका विद्यालय से प्रारंभ हुआ और शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए तीन किलोमीटर तक निकल पुनः सरस्वती बालिका विद्यालय पहुंचा। संचलन में भगवा ध्वज लेकर ध्वज वाहिनी और साथ चल रही बहने वातावरण को बहुत ही ओजस्वी और देशभक्तिमय बना रही थीं। घोष गण की गूंज से सारा वातावरण गूंज रहा था। स्थान स्थान पर लोगों ने पुष्प वर्षा द्वारा सेविकाओं का भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर सेविकाओं को डॉ. मंजू शर्मा वायव्य क्षेत्र बौद्धिक प्रमुख का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर गतिमान रहना होगा। वर्ग में रहते हुए शारीरिक शक्ति, मानसिक बल, अनुशासन समयबद्धता, नियमितता आदि सभी गुणों में जो श्रेष्ठता प्राप्त की उसका संचरण समाज के अन्य लोगों में भी हो इस हेतु से पथ संचलन का आयोजन किया जाता है। संचलन में चलने वाली बहनों सेविकाओं और अधिकारियों की संख्या 125 रही।

ज्यादती करने वाले अभियुक्त को बीस साल की सजा

जयपुर, (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर प्रथम ने 13 वर्षीय पीड़िता के साथ ज्यादती करने वाले अभियुक्त सुरेन्द्र कुमार को बीस साल की सजा से दंडित किया है। इसके साथ ही अदालत ने सोडाला निवासी इस अभियुक्त पर 55 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने पीड़िता के घर में जबरन प्रवेश कर उसके प्राइवेट पार्ट को क्षति पहुंचाते हुए छेड़छाड़ की है। ऐसे में उसके प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक ने बताया कि पीड़िता की मामी ने 1 दिसंबर, 2020 को महेश नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि दिन में वह और उसके पति काम पर गए हुए थे। इस दौरान उसकी 13 साल की भांजी उसके घर पर बच्चों के साथ थी। इतने में मौका पाकर अभियुक्त वहां आ गया और पीड़िता के प्राइवेट पार्ट में हाथ डाला व मारपीट करने लगा। तभी पीड़िता के मामा अचानक घर लौट आए और पीड़िता को अभियुक्त के चंगुल से छुड़ाया।

वहीं अभियुक्त की ओर से कहा गया कि उसे प्रकरण में जबरन फंसाया गया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अभियुक्त को दोषी मानते हुए उसे सजा सुनाई है।

सदा मुस्कुराने की चाबी दी योगाचार्य ढाकाराम ने

जयपुर। विख्यात योग गुरु योगाचार्य ढाकाराम के सानिध्य में रोटरी क्लब जयपुर सिटीजन एवं योगा पीस संस्थान के संयुक्त तत्वाधान व अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन जयपुर एवं नगर निगम जयपुर ग्रेटर के सहयोग से महावीर स्कूल सी स्कीम में आनंदम योग शिविर संपन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन योग गुरु ढाकाराम, मुख्य अतिथि उप पुलिस अधीक्षक यातायात प्रहलाद कृष्णिया, विशिष्ट अतिथि विशेषाधिकारी, आयुष विभाग, राजस्थान सरकार डॉ. गिरधर गोपाल शर्मा, आयोजन समिति अध्यक्ष सुधीर जैन गोधा, मुख्य समन्वयक योगी मनीष विजयवर्गीय ने किया।

इंद्रजीत कौर व पिंकी सिंह सम्मानित

सिख पंथ के पांचवें गुरु अर्जन देव की शहादत को समर्पित पिछले 40 दिनों से स्त्री सत्संग की ओर से गुरुद्वारा राजा पार्क में चल रहे सुखमनी साहिब के पाठों की समाप्ति पर सुखमनी सेवा सोसायटी की प्रेसिडेंट पिंकी सिंह और राजापार्क की इंद्रजीत कौर को सरोपा देकर सम्मानित किया गया।

जयपुर। सिख पंथ के पांचवें गुरु अरजन देव की शहादत को समर्पित पिछले 40 दिनों से स्त्री सत्संग द्वारा गुरुद्वारा राजा पार्क में चल रहे सुखमनी साहिब के पाठों की आज समाप्ति हुई। इस मौके पर खालसा हेल्पिंग हैण्ड द्वारा राजस्थान सिख समाज के सहयोग द्वारा संगत को गुरवाणी, नाम सिमरन के साथ जोडने, बच्चों को पंजाबी सिखाने व गुरमत रहत मर्यादा के साथ जोडने का प्रयास करने वालीं 25 महिलाओं को सिरोपा देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राजापार्क की इंद्रजीत कौर और सुखमनी सेवा सोसायटी बनीपार्क की प्रेसिडेंट पिंकी सिंह को सम्मानित किया गया। उनकी तरफ से दीपिका कपूर ने सिरोपा ग्रहण किया। इस दौरान राजस्थान सिख समाज के अध्यक्ष अजयपाल सिंह, खालसा हेल्पिंग हैण्ड के अध्यक्ष भूपिंदर सिंह पप्पी, महा सचिव जगजीत सिंह सूरी, बलदेच सिंह, हरविंदर सिंह पप्पू, देवेन्दर सिंह शंटी, सूर्य उदय सिंह, जगजीत सिंह मुच्छल उपस्थित थे।

खोया पाया

मेरे मकान-13/305, मानसरोवर का मूलकब्जा पत्र, स्वर्ण पथ पर खो/गिर गया है। मिलने पर संपर्क करें- 8824575105

जेडीए की योजना Jda Employee Colony (KHUSAR) के भूखण्ड संख्या बी/108 के Jda से जारी ALLOTFMENTCUM DEMANDLETTER खो गया है सूचित करें बाबूलाल सैनी मो-9828519851

आम सूचना मेरी अभिभाष्या श्रीमती पद्मा देवी पत्नि स्वर्गीय श्री जग्गू मल की ओर से आमजन को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्या की संयुक्त स्वामित्व एवं कब्जे एवं विरासत के प्लॉट नम्बर 21 व 21-ए प्रताप नगर, नाई की थडी, रामगढ रोड, जयपुर पर स्थित है जो कि मेरी अभिभाष्या एवं अन्य परिवारजनों द्वारा संयुक्त रूप से क्रय की जा कर उसका इकरारनामा अपने पुत्र अशोक कुमार के नाम करवाया गया था जिस पर मेरी अभिभाष्या का कब्जा है लेकिन मेरी अभिभाष्या के पुत्र की मृत्यु के बाद उसकी पत्नि श्रीमती पुनम देवी बाले बाले ही उक्त सम्पत्ति को बेचान/हस्तांतरित दीगरान को करना चाहती है जिसका उसे कोई अधिकार नहीं है इसलिये कोई भी व्यक्ति मेरी अभिभाष्या की सहमति के बिना उक्त वर्णित सम्पत्ति को क्रय नहीं करें। यदि कोई ऐसा करता है तो वह उसकी स्वयं की जिम्मेदारी होगी। अतः सूचित रहे।
(रघुवीर सिंह आनन्द) एडवोकेट, मो. 9351273581

NAME CHANGE

I have changed my name from Rajshree Khandelwal to Rajshree gupta for all purpose. R/o 83 Gaurav Nagar Civil Lines Jaipur. Raj.

I have changed my name from Nipul Kumari to Nupur Kumari for all purpose. R/o Plot No-195 Gurujambheshwar Nagar Vaishali Nagar Jaipur, Raj.

I/we have changed our daughter name from Neelima to Neelima Varlani D/o Indra Kumar for all purpose.R/o Flat No-308 Galaxy Star Building Central Spine Vidhyadhar Nagar Jaipur, Raj.

आम सूचना दि. 29.05.2023
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि:- आद्योगिक प्लॉट नंबर एच-1-100, 101 उद्योग विहार, जैतपुरा, रीको क्षेत्र में कुल क्षेत्रफल 1143.90 वर्गमीटर एवं एक पुख्ता मकान मोहल्ला बदनपुरा वार्ड नंबर 39 करवा चौमू में स्थित है, जिसके पूर्व में श्रीमती शांति देवी का मकान, पश्चिम में आम रास्ता, उत्तर में मोठू माली का मकान, दक्षिण में देवीलाल, अर्जुनलाल, आंनदीलाल के मकान स्थित है। मेरे अभिभाष्य बाबूलाल शर्मा (पंवार) पुत्र स्व. श्री कन्हैयालाल जाति जांगिड ब्राहम्ण निवासी शिवकॉलोनी, बदनपुरा चौमू के मालिकाना एवं स्वामित्व का है। खसरा नं. 2899, 2900/1, 2901/2, 2898/1, 2898/3, 2922/7981, 2923, 2924 रीगस रोड़, चौमू में स्थित भूमि राजस्व रिकॉर्ड में खातेदारी मेरे अभिभाष्य के दर्ज है। मेरे अभिभाष्य के द्वारा निष्पादित पारिवारिक समझौता पत्र दिनांक 15.09.2012 को जरिये विधिक नोटिस दिनांक 18.08.2017 से निरस्त कर दिया, जिसकी सूचना सभी पक्षकारान को दे दी थी। मामराज शर्मा पुत्र श्री बाबूलाल शर्मा ने पारिवारिक समझौता पत्र निरस्त किये जाने के विधिक नोटिस का जवाब दिये जाने से उक्त पारिवारिक समझौता पत्र निरस्त होने की स्पष्ट रूप से जानकारी है। पारिवारिक समझौता पत्र निरस्त किये जाने से निरस्तशुदा पारिवारिक समझौता पत्र प्रभावहीन दस्तावेज है। मामराज शर्मा पुत्र श्री बाबूलाल शर्मा निवासी बदनपुरा चौक, चौमू मेरे अभिभाष्य की उक्त औद्योगिक प्लॉट, पुख्ता मकान एवं खातेदारी की भूमि को निरस्तशुदा पारिवारिक समझौता पत्र या अन्य किसी कूटरचित दस्तावेज के आधार पर बेचान/ विक्रय, हस्तानांतरण करना चाहता है, जिसका उससे किसी भी प्रकार से विधिक अधिकार नहीं है। अतः सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आप मेरे अभिभाष्य के मालिकाना स्वामित्व एवं खातेदारी के हक की संपत्ति उपरोक्त उल्लेखित के बाबतु मामराज शर्मा पुत्र श्री बाबूलाल शर्मा निवासी बदनपुरा चौक, चौमू से किसी भी प्रकार का सव्यवहार, बेचान/ विक्रय, हस्तानांतरण एवं लेन-देन नहीं करें। यदि आपके द्वारा किसी भी प्रकार संव्यवहार किया जाता है तो वह अवैध व शून्य होगा तथा संव्यवहार करने वाला व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार होगा। सूचित रहे।
भवदीय
राम कृष्ण पारीक, एडवोकेट, मो. 9887558393

उत्तर पश्चिम रेलवे G20

खुली ई-निविदा सूचना

संख्याः डबलू/118/निविदा/बमई(सम.) जयपुर/इन्जीनिरिंग दिनांकः 27.05.2023 मण्डल रेल प्रबन्धक इन्जीनिरिंग उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर के द्वारा भारत संघ के राष्ट्रपति एवम् उनकी ओर से ई-निविदा के माध्यम से प्रचलित नियमों के अनुसार निर्धारित प्रपत्रों में निविदा निम्न कार्यों के लिए क्रमानुसार आमंत्रित की जाती है। **क्र.सं.1. निविदा संख्या/कार्य का नामः इंजी./जय/2022-23/14आर** जयपुर मण्डल-अमृत भारत स्टेशन योजना के क्रम में नारनौल स्टेशन पर-मेन गेट एंट्री, ग्लास शीटिंग के साथ फेब्रिक, पोर्च के साथ ग्लास शिटिंग, सर्कुलेटिंग एरिया के साथ गार्डन पार्किंग की सुविधा, नया कंकोर्स हॉल, फ्रंट एंट्री डेवलपमेंट, मॉडल लैंडस्केपिंग फाउंटेन, वाल टाल्लिंग और ग्रेनाइट द्वारा फसाद कार्य, दिव्यांग जन सुविधा के साथ प्रीमियम मोडुलर लेडिस/जेट्स टॉयलेट प्रावधान, साईन बोर्ड, प्लेटफार्म नंबर-2 चौरा करना, प्लेटफार्म शेल्टर का प्रावधान और मिसलेनियस कार्य करने का कार्य। **अनुमानित लागतः** 92366594.46 **बिड प्रतिभूति राशिः** 611800 **1.** उपरोक्त निविदाओं का पूर्ण विवरण वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। **नोटिस बोर्ड-मण्डल रेल प्रबन्धक (निर्माण लेखा) उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर के कार्यालय में देखी जा सकती है। 2.** निविदा संख्या इंजी. /जय/2023-24/14 आर की बन्द होने की तिथि 19.06.2023 समय 15.30 बजे एवं खुलने की तिथी 19.06.2023 समय 16.00 बजे। 571-AC/23

हमें /NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें

ज्वैलर के 30 लाख रु. लेकर फरार हुआ नौकर चार दिन बाद गिरफ्तार

8 माह से नौकरी कर रहा था आरोपी, बैंक में जमा करवाने को पैसे दिए तो फरार हुआ

जयपुर (कासं)। माणक चौक पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 24 मई को ज्वैलर के 30 लाख रुपये लेकर बैंक में जमा कराने के बहाने फरार हुए नौकर को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से पुलिस ने 29 लाख 74 हजार रुपये बरामद किए गए है। बताया जा रहा है कि आरोपित करीब 8 माह से नौकरी कर रहा था और परिवार को विश्वास में लेकर वारदात को अंजाम दिया। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त (उत्तर) जयपुर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि माणक चौक पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 24 मई को तीस लाख रुपये लेकर बैंक में जमा कराने के बहाने फरार हुए नौकर पंकज त्यागी (41) निवासी गांव जैनपुर तिकोला मुरथल जिला सोनीपत हरियाणा हाल नरेला दिल्ली को गिरफ्तार कर उसके पास से 29 लाख 74 हजार रुपये बरामद किए गए है। गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि उसकी पत्नी कैंसर की बीमारी से पीड़ित है, जिसके इलाज में रूपये लगने थे और साथ ही दिल्ली में प्लॉट लेने के लिए किसी बिल्डर से बातचीत कर रखी थी।

आरोपित पूर्व में सूरत में नौकरी करता था और इस वारदात को अंजाम देने के लिए ही उसने जयपुर के व्यापारी को चुना था कि ज्यादा रुपये होने के कारण व्यापारी रिपोर्ट दर्ज नहीं करायेगा। अगर सेटलमेंट करने का मौका मिला तो आधे रुपये वापस देकर व्यापारी को मना लेता। इस संबंध में परिवादी दिपेश जैन और तारा जैन ने मामला दर्ज करवाया था कि वह दोनों साझेदारी में डायमंड और पोल्की ज्वैलरी का काम करते है। उसकी मम्मी और पत्नी ने मकान खरीदने के लिए थोडे-थोडे जमा किये हुए थे और बैंक से छह लाख रुपये का बैंक से लोन लिया था। उसकी मम्मी ने नौकर पंकज को 30 लाख रुपये एयू बैंक में जमा करवाने के लिए भेजा था जिसने बैंक मे रुपये नहीं जमा कराकर तीस लाख रुपये को लेकर फरार हो गया और अपना मोबाइल फोन बंद कर लिया।

उधर पुलिस ने पीड़ित बिजनेसमैन से नौकर की जानकारी चाही तो आईडी भी उसके पास नहीं होने का पता चला। पुलिस ने वारदातस्थल से लेकर भागने के रास्तों के सीसीटीवी फुटेजों को खंगाला। फुटेजों के आधार पर रोड मेप तैयार किया गया। पुलिस टीम को पता चला कि आरोपी पंकज त्यागी मूलतः सोनीपत हरियाणा का रहने वाला है। उसका परिवार दिल्ली में कहीं रहता है। पिछले 4 दिनों से वह दिल्ली में फरारी काट रहा है। पुलिस टीम ने सूचना पर दबिश देकर आरोपी पंकज को पकड़ लिया।

माणक चौक पुलिस ने ज्वैलर के 30 लाख रु. लेकर फरार हुए नौकर को दबोचा।

- रकम ठिकाने लगाने से पहले ही माणक चौक पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 29.74 लाख रुपये बरामद किए
- पूछताछ में सामने आया कि आरोपी पंकज त्यागी की पत्नी कैंसर की बीमारी से पीड़ित है, जिसके इलाज में रुपये लगने थे, इसके अलावा उसने दिल्ली में प्लॉट लेने के लिए किसी बिल्डर से बातचीत कर रखी थी।

बसों में यात्रियों के जेवरात और नकदी चुराने वाली गैंग पकड़ी

पुलिस ने उत्तरप्रदेश निवासी 3 बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 7 लाख रु. के जेवर बरामद किए

जयपुर (कासं)। सिंधी कैंप थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बसों में यात्रियों की नकदी-जेवरात चुराने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है और 7 लाख रुपये कीमत के जेवरात बरामद किए गए है। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने कई वारदातों का खुलासा किया है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम वन्दिता राणा ने बताया कि सिंधी कैंप थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बसों में यात्रियों की नकदी व जेवरात चुराने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के शातिर बदमाश मोहम्मद जावेद (30) निवासी बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश), नरेंद्र उर्फ भूरा (48)निवासी बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) और शाहिद (42) निवासी बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) को गिरफ्तार किया गया है। जिनके पास से पुलिस ने सात लाख रुपये के सोने के जेवरात जब्त किए गए है।

पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपित लॉक किए हुए सूटकेस -बैग आदि सहित बस में बैठ रही महिलाओं का पीछा करते हुए अपने गिरोह के पांच -छह साथियों के साथ बस में सवार हो जाते हैं तथा बस में भीड़ जैसा माहौल बनाते हुए यात्रियों व उनके सामान के बीच खड़े होकर मौका पाते ही साथी मास्टर-की अथवा पेचकस से सूटकेस का ताला खोलकर नगदी-जेवरात चोरी कर एक-एक बस से उतर जाते हैं।

सिंधी कैंप पुलिस ने बसों में चोरी करने वाले उत्तरप्रदेश के तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया।

'मध्यस्थता से समस्याओं का निवारण संभव'

जयपुर (कासं)। जे.ई.सी.आर.सी. यूनिवर्सिटी व लॉ क्लब एमिकस क्यूरिए ने संयुक्त रूप से दूसरे जेईसीआरसी नेशनल मिडिएशन और नेगोशिएशन कॉम्पिटिशन का आयोजन किया। दो दिनों तक चलने वाले इस कॉम्पिटिशन में करीबन 15 राज्यों जैसे की हिमाचल, चेन्नई, ओरिसा, गुजरात, मुंबई आदि से 40 से अधिक टीमें प्रतियोगिता में भाग लेने पहुंची, जिनमें 120 से अधिक प्रतिभागी शामिल रहें। मध्यस्थता और बातचीत प्रतियोगिता, कानून के छात्रों के बीच वैकल्पिक विवाद समाधान संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय कदम हैं। मध्यस्थता के माध्यम से कई समस्याओं का समाधान संभव है।

बतौर मुख्य अतिथि प्रह्लाद सिंह कृष्णिया, डी.सी.पी. (ट्रैफिक) पुलिस कमिस्नोरेट जयपुर मौजूद रहे। प्रतियोगिता का विषय 'भारत में मध्यस्थता के बदलते पहलू' था। जिसमे मध्यस्थता और मुकदमेबाजी के ढांचे और उसमें लोक अदालत की भूमिका, वर्तमान न्याय वितरण प्रणाली और प्रवर्तन एजेंसियों में मध्यस्थता की प्रभावशीलता पर चर्चा, वाणिज्यिक मध्यस्थता और क्या कंपनी संशोधन अधिनियम 2019 का इस पर प्रभाव, बहुराष्ट्रीय विवाद मामलों में मध्यस्थता, और भारत को अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता के केंद्र के रूप में विकसित करना जैसे उप विषय शामिल थें।

"भारत में मध्यस्थता के बदलते पहलू" पर जेईसीआरसी और आई ए एम सी एच सम्मेलन के पैनलिस्ट के रूप में तारिक खान रजिस्ट्रार आई ए एम सी, हैदराबाद, विक्रम पोसेरेला वरिष्ठ अधिवक्ता, तेलंगाना उच्च न्यायालय, हैदराबाद, सुशील डागा मैनेजिंग पार्टनर, एमिकस लीगल, जयपुर, ऋचा बख्शी जनरल काउंसिल, अमेज़न, भारत मौजूद रहे। क्वार्टर फाइनल के नतीजे घोषित होने पर, 8 क्वार्टर फाइनलिस्ट टीमों में से 4 टीमों ने सेमीफाइनल में जगह बनाई। सेमी फाइनल को मिशिका बाजपेयी, एडवोकेट, चैंबर्स ऑफ पराग पी त्रिपाठी, एकाक्षरा महाजन, पार्टनर्स मंधार एसोसिएट, चंडीगढ़ हिमांशी शर्मा, ए.डी.आर. प्रैक्टिसनर, लंदन, चित्रांश माथुर, प्रिंसिपल एसोसिएट, एमिकस लीगल, जयपुर, तुरब काज़मी, पार्टनर, एस के, लॉ फर्म, दिल्ली, श्रेटिमा बागरी, प्रिंसिपल एसोसिएट, एमिकस लीगल जयपुर ने जज किया। फाइनल मुकाबला दो टीमों के बीच हुआ, फाइनल्स को जज करने के लिए तारिक खान रजिस्ट्रार आई.ए.एम.सी, हैदराबाद, विक्रम पोसेरेला वरिष्ठ अधिवक्ता, तेलंगाना उच्च न्यायालय, हैदराबाद, सुशील डागा मैनेजिंग पार्टनर ,एमिकस लीगल, जयपुर, ऋचा बख्शी जनरल काउंसिल, अमेज़न, भारत, वरुण प्रभाकर मौजूद रहे। समारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान हाईकोर्ट के जस्टिस अशोक कुमार जैन रहे ।

- जे.ई.सी.आर.सी. में नेशनल मिडिएशन और नेगोशिएशन प्रतियोगिता हुई

पति के दोस्त ने किया दुष्कर्म

जयपुर (कासं)। मुहाना इलाके में विवाहिता से पति के दोस्त द्वारा दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। बाथरुम में नहाते समय आरोपी ने उसका न्यूड वीडियो बना लिया। वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल कर देहशोषण किया। मुहाना थाने में पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई है। पुलिस ने बताया कि मुहाना निवासी 25 साल की महिला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। वह अपने पति के साथ यहां रहती है। शिकायत में बताया कि पति के दोस्त मुकेश सैनी ने उसके साथ दुष्कर्म किया है। पति का दोस्त होने के कारण आरोपी मुकेश का घर पर आना-जाना था। करीब 9 महीने पहले पति की गैरमौजूदगी में आरोपी घर आया। बाथरुम में नहाने के दौरान चुपचाप उसका न्यूड वीडियो बनाकर चला गया। जिसके बाद उसको कॉल कर न्यूड वीडियो के बारे में बताया। वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करने लगा। ब्लैकमेल कर पति की गैरमौजूदगी में 3-4 बार घर आकर उसके साथ रेप किया। इस बारे में किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि 24 मई को उसका पति गांव जाने के लिए उसे बस में बैठाकर चला गया। पीछा करते हुए आरोपी मुकेश भी बस में चढ़ गया। बस में हल्ला कर बदनाम करने की धमकी देकर रास्ते में उतार लिया। होटल में कमरा बुक कर डरा-धमकाकर उसके साथ रेप किया। गांव पहुंचने के बाद कॉल कर पति को बुलाया। पति के आने पर उनके दोस्त की करतूत के बारे में बताया। जिसके बाद पीड़िता ने मुहाना थाने में आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया।

जनाना अस्पताल अधीक्षक के खिलाफ नर्सेज ने खोला मोर्चा

जयपुर । जनाना अस्पताल में सोमवार को नर्सिंग अधीक्षक का कमरा बंद करने के विरोध में नर्सेज ने अस्पताल अधीक्षक के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। सभी नर्सेज ने कार्य बहिष्कार कर दिया है जिससे यहां भर्ती मरीजों को परेशानी का सामना करना पड़ा बाद में अतिरिक्त प्रिंसीपल दीपक माथुर के हस्तक्षेप के बाद नर्सेज काम पर वापस लौट आए।

जनाना अस्पताल में सोमवार सुबह 8 बजे से 300 से ज्यादा नर्सेज में कार्य बहिष्कार कर दिया। इस दौरान नर्सेज की ओर से अस्पताल परिसर में अस्पताल अधीक्षक डॉ. कुसुमलता मीणा के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। नर्सेज ने आरोप लगाया कि डॉ. कुसुमलता अपनी मनमानी कर रही है। जिसकी वजह से नर्सेज को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

नर्सेज ने कहा के करीब 4 महीने पहले डॉक्टर कुसुमलता की ओर से नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय को बंद कर दिया गया था। इसके बाद जनाना अस्पताल के पीछे वाली साइड में एक छोटी सी जगह में नर्सिंग अधीक्षक का कार्यालय के लिए जगह दी गई। जहां किसी तरह की कोई भी व्यवस्था नहीं है। ऐसे में नर्सेज को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विवाद ज्यादा बढ़ने पर एसएमएस मेडिकल कॉलेज के अतिरिक्त प्रिंसीपल दीपक माथुर ने हस्तक्षेप कर नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय को एएनसी भवन से पुरानी स्पेशियलिटि में स्थानांतरित किया। इसके बाद नर्सेज काम पर लौट आए।

राजस्थान राज्य नर्सिंग एसोसिएशन एकीकृत जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष अनेश कुमार सैनी ने बताया कि अस्पताल अधीक्षक डॉक्टर कुसुम लता मीणा ने नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय इसलिए खाली कराया था कि पीडब्ल्यूडी की ओर से कार्य कराया जाएगा। नर्सेज ने कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। ऐसे में पुराने नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय को वापस खोल दिया जाए। अगर उनकी मांग नहीं मानी गई तो उनकी ओर से कार्य बहिष्कार जारी रहेगा।

वहीं अस्पताल अधीक्षक डॉ. कुसुमलता मीणा का कहना है कि पुराने नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय का पीडब्लूडी की ओर से कार्य कराया जाएगा। अभी नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय के लिए दो कमरे दिए हुए है। नर्सेज ने कार्य बहिष्कार किया है। उनसे समझाइस के प्रयास जारी है।

- नर्सिंग अधीक्षक कार्यालय बंद करने से नाराज नर्सेज का कार्य बहिष्कार
- एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज के अतिरिक्त प्रिंसीपल दीपक माथुर के हस्तक्षेप के बाद नर्सेज काम पर लौटे

142 आर.पी.एस. अधिकारियों के तबादले

जयपुर। राज्य सरकार ने विधान सभा चुनाव से पहले पुलिस के बेडे में बड़ा बदलाव किया हैं। रविवार रात को पुलिस महानिदेशक उमेश मिश्रा ने आदेश जारी कर पुलिस उपाधीक्षक स्तर के 142 अधिकारियों के तबादले किए हैं।

इस सूची में अधिकतर जिलों के डिप्टी एसपी स्तर के अधिकारी बदले गए हैं। जयपुर कमिश्नरेट सहित जिलों में लगे हुए दस से ज्यादा अफसरों को बदला गया है। माना जा रहा है कि इन तबादलों के पीछे सरकार पर कानून व्यवस्था को लेकर विपक्ष की ओर से लगातार बनाया जा रहा दबाव भी एक कारण हो सकता है।

आदेश के अनुसार जयपुर में आरपीएस अजय शर्मा को एसीपी चाकसू, मनीष शर्मा को पुलिस उपाधीक्षक बाल अधिकार आयोग जयपुर, दीपक खंडेलवाल को एसीपी ट्रेफिक जयपुर साउथ, चिरंजीलाल मीणा को एसीपी मालवीय नगर, श्याम सुंदर को एसीपी सोड़ाला, भोपाल सिंह भाटी को एसीपी झोटवाड़ा, जोगेन्द्र सिंह को एसीपी ट्रेफिक जयपुर ईस्ट, फूलचंद मीणा को एसीपी बस्सी, विनोद कुमार शर्मा को एसीपी सांगानेर, हरी शंकर शर्मा को एसीपी ट्रेफिक जयपुर नोर्थ, संजय शर्मा को एसीपी ट्रेफिक जयपुर वेस्ट, निहाल सिंह को एसीपी गांधी नगर, रामचंद्र को एसीपी साइबर क्राइम जयपुर साउथ और संजय शर्मा को पुलिस उपाधीक्षक जीआरपी जयपुर के पद पर लगाया गया है।

'अजिओ' की बिग बोल्ड सेल 1 जून से शुरू होगी

जयपुर (कासं)। देश के सबसे बड़े फैशन ई-टेलर में शुमार 'अजिओ' की बिग बोल्ड सेल 1 जून से शुरू होगी। यह सेल एडिडास के सहयोग से मेलोरा के साथ मिलकर संचालित की जायेगी। ग्राहक 28 मई से रोजाना 6 घंटे की सीमित अवधि के लिए अर्ली एक्सेस की सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। बिग बोल्ड सेल में ग्राहक 5 हजार से ज्यादा ब्रांड्स के प्रोडक्ट खरीद सकेंगे, जो कि 1.3 मिलियन से अधिक क्यूरेटेड फैशन स्टाइल को पेश करते हैं।

सेल की घोषणा करते हुए अजिओ के सी.ई.ओ. विनीत नायर ने कहा कि, बिग बोल्ड सेल में देशभर के 19 हजार से अधिक पिनकोड के ग्राहक शामिल होंगे, जो एक्सक्यूसिव इंटरनेशनल ब्रांड्स, प्राइवेट लेबल तथा अपने देश के ब्रांड्स के बड़े सलेक्शन से खरीददारी कर सकेंगे। फैशन, लाइफस्टाइल, होम एंड डेकोर, ब्यूटी, ज्वैलरी और पर्सनल केयर जैसी अलग-अलग कैटेगरी में बेहतरीन डील्स और ऑफर्स मिलेंगे। एस.बी.आई. के क्रेडिट-डेबिट कार्ड से खरीदारी करने पर ग्राहकों को 10 प्रतिशत तक की अतिरिक्त छूट मिलेगी। सेल के दौरान ग्राहकों को एडिडास, नाइकी, प्यूमा, सुपरड्राई, जीएपी, यूएसपीए, स्टीव मैडेन, लिवाईस, मार्क्स एंड स्पेंसर, अरमानी एक्सचेंज, रितु कुमार, मुजी, बुडा जीन्स कंपनी, फेयर रोज, एन्क्रस्टड, पोर्टिको, होम सेंटर, कैसियो, लेक्मे, मेबेलिन, मेलोरा जैसे ब्रांड्स पर रोमांचक डील्स मिलेगी। विनीत नायर ने कहा कि हमें पूरी उम्मीद है कि 60 मिलियन से ज्यादा नए यूजर्स अजिओ से जुड़ेंगे और एक्सक्लूसिव इंटरनेशनल ब्रांड्स की इस शॉपिंग सेल का फायदा उठाएंगे। उन्होंने बताया कि 'फैशन्स मोस्ट वांटेड' कैंपेन फिल्म 31 मई को रिलीज होने वाली है, जिसमें एक्ट्रेस श्रद्धा कपूर और राणा दग्गुबाती नजर आएंगे। इस 360 डिग्री कैंपेन को टीवी, ओटीटी, सोशल मीडिया, डिजिटल, प्रिंट और रेडियो पर चलाया जायेगा।

संक्षिप्त

'ईडब्ल्यूएस आरक्षण 14 फीसदी करें'

जयपुर । राजस्थान ब्राह्मण महासभा के कार्यवाहक अध्यक्ष सुभाष पाराशर ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर ईडब्ल्यूएस आरक्षण को 10 से बढ़ाकर 14 फीसदी करने एवं ईडब्ल्यूएस आरक्षण को पूर्ण रूप से राजनीतिक क्षेत्र में लागू करते हुए इसे नगर निकाय एवं पंचायती राज संस्थाओं में लागू करने की मांग की है। पाराशर ने ईडब्ल्यूएस आरक्षण के सरलीकरण की मांग करते हुए इसके प्रमाण पत्रों की वैधता कम से कम 5 साल करने एवं विवाहित महिला की आय में पिता की आय को नहीं जोड़ने की भी मांग की। उन्होंने यह पत्र राज्य सरकार के मंत्रियों को लिखते हुए उनसे ईडब्ल्यूएस आरक्षण को 14 प्रतिशत कराने की मांग की है।

मंत्रालयिककर्मियों का अनशन जारी

जयपुर । मंत्रालयिक एकता मंच की ओर से शहीद स्मारक पर चल रहा क्रमिक अनशन सोमवार को 75 वें दिन भी जारी रहा। मंत्रालयिक एकता मंच के प्रदेश प्रवक्ता देवेंद्र सिंह नरूका ने बताया कि आज ईएसआई विभाग के सिरमोर मीणा के नेतृत्व में वीरेन्द्र माथुर, भँवर सिंह, मोहन तनेजा, जगमोहन मीणा एवं हिमांशु यादव 24 घंटे के क्रमिक अनशन पर बैठे। हमारी सहायक प्रशासनिक अधिकारी को ग्रेड पे 4200 व कनिष्ठ सहायक को आरंभिक वेतन 25500 किए जाने समेत 6 प्रमुख मांग है।

मेडी गैंग के सरगना समेत चार इनामी बदमाश पकड़े

वर्चस्व की लडाई में जीवली गैंग के सदस्य की हत्या की थी इस गैंग ने

जयपुर (कासं)। जयपुर पुलिस कमिश्नरेट की स्पेशल टीम ने जयपुर में वांछित (मेडी गैंग) के इनामी अपराधियों पर कार्रवाई करते हुए मेडी गैंग के सरगना सहित चार इनामी आरोपियों को गिरफ्तार कर प्रताप नगर थाना पुलिस के सुपुर्द किया गया है। पुलिस जानकारी में सामने आया कि सभी आरोपियों पर पचास-पचास हजार रुपये का इनाम घोषित था। इन्होंने वर्चस्व की लडाई के लिए जीवली गैंग के सदस्य की हत्या की थी। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) ज्येष्ठा मैत्रयी ने बताया कि सीएसटी ने प्रताप नगर थाना इलाके में एक दिसम्बर 2022 को महेन्द्र मीणा हत्या मामले में वांछित मेडी गैंग के सरगना देवीशरण दुधवात निवासी गांव मेडी वजीरपुर जिला सवाई माधोपुर, महेश नांगल निवासी बालघाट जिला करौली, संतोष कुमार मीणा उर्फ बच्चा नांगल निवासी बालघाट जिला करौली और भानू प्रताप मीणा निवासी हिंडौन सिटी जिला करौली को गिरफ्तार किया गया है।

जो वांछित होने पर जयपुर पुलिस कमिश्नरेट की ओर से सभी आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पचास-पचास हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि संदीप जीवली और विनीत मेंडी गैंग के बीच वर्चस्व को लेकर आपस में दुश्मनी थी। इसी बात को लेकर संदीप जीवला के जीजा(महेन्द्र मीणा) की हत्या करना स्वीकार किया है। सभी आरोपित वारदात के बाद से ही फरार चल रहे थे और जिन्होंने पुलिस से बचने के लिए जम्मू कश्मीर, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश ,चैन्नई आदि स्थानों पर फरारी काट रहे थे। इसके अलावा आरोपित मोबाइल फोन प्रयोग में नहीं ले रहे थे और अपने किसी साथियों और परिवार के लोगों से बात करनी होती थी तो वह किसी अन्जान व्यक्ति से मोबाइल लेकर करते थे। गौरतलब है कि संदीप मीना ने मामला दर्ज करवाया था कि उक दिसम्बर 2022 और वह और उसके जीजाजी महेन्द्र मीणा व दोस्त प्रिफराज सोलंकी उनके जानकार कितनु उर्फ घनश्याम से मिलने गोदावरी अपार्टमेन्ट के पास पण्डितजी की चाय की थडी पर वह लोग चाय पी रहे थे । तभी एक धार गाडी उनकी खडी गाडी को सामने से टक्कर मारी, फिर उस गाड़ी में से 6-7 लडके अपने हाथों में हथियार (तलवार, पिस्टल, देसी कट्टा, कुल्हाडी, सरिया लेकर उनके पिछे मारने के लिये दोडे। इनमें विनित मेडी, बच्चा उर्फ सन्तोष उर्फ निरव मीणा, टोलू उर्फ मुजाहिद खान थे। भागते समय उसके जीजा महेन्द्र मीणा गिर गया, तब इन सभी लोगों ने उसके जीजा के ऊपर फायर कर दिये और कुल्हाडी व तलवार से उसके पेट के ऊपर बार किये और तब तक कि वह मर नहीं गया हो।

पालतू कुत्ते ने दांतों से महिला का पैर काटा

जयपुर (कासं)। रामनगरिया क्षेत्र में एक पालतू कुत्ते (श्वान) ने महिला पर हमला कर पैर को दातों से नोंच दिया। कुत्ते के मालिक ने अपने हाथ से कुत्ते का जबड़ा खोलकर महिला का पैर छुड़वाया, तब तक महिला का पैर खून से सन चुका था। घायल महिला को अस्पताल में भर्ती करवाया गया। घटना के बाद रामनगरिया थाने में कुत्ते के मालिक के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

पुलिस ने बताया कि महादेव नगर जगतपुरा निवासी कोचिंग संचालक दीपक चड्डा (34) ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि उनकी बड़ी बहन निशा (40) को कुत्ते ने काटा है। अपार्टमेंट के फर्स्ट फ्लोर पर रहने वाले अनिल अग्निहोत्री के परिवार ने खतरनाक कुत्ता पाल रखा है, जो आए दिन किसी ने किसी को काट लेता है। गत 25 मई की शाम करीब 7:30 बजे उनकी बहन निशा मिलने के लिए घर आई थी। अनिल अग्निहोत्री का बेटा नितिन (30) कुत्ते के गले पर बंधी बेल्ट को पकड़कर नीचे ला रहा था। बहन निशा के अपार्टमेंट में घुसते ही नितिन ने कुत्ते को छोड़ दिया। कुत्ते ने बहन निशा पर अटैक कर दिया। तेजी से दौड़ते हुए झपट्टा मारकर दांतों से निशा के पैर को नोंच कर फाड़ दिया। दर्द से चिल्लाने की आवाज सुनकर नितिन कुत्ते से बचाने के लिए दौड़ा, लेकिन कुत्ते ने पैर को नहीं छोड़ा। नितिन ने कुत्ते को जबड़ा खोलकर पैर छुड़वाया। लहुलुहान हालत में घायल निशा को इलाज के लिए आरयूएचएस हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया। कुत्ते के दातों से पैर नोंच फाड़ने से गहरा घाव हो गया, जिसे सर्जन से उपचार कराने को कहा।

'बाल बढ़ेंगे-बच्चे पढ़ेंगे' कैंपेन शुरू किया निहार शांति आंवला ने

- "निहार नैचुरल्स अपने मुनाफे का पांच प्रतिशत बालिकाओं की शिक्षा के लिये देता है, यह योजना अब तक 4.17 लाख विद्यार्थियों को प्रभावित कर चुकी"

जयपुर (कासं)। मैरिको लिमिटेड के निहार नैचुरल्स शांति आंवला ने एक्ट्रेस आलिया भट्ट को अपने ब्रांड का चेहरा बनाया है और 'बाल बढ़ेंगे, बच्चे पढ़ेंगे' का नारा देकर एक नया टेलीविजन विज्ञापन लॉन्च किया है। यह कैंपेन खूबसूरत बालों और बालिकाओं की शिक्षा के लिये ब्रांड की दोहरी प्रतिबद्धता का संदेश बड़ी सहजता से देता है।

मैरिको लिमिटेड की चीफ मार्केटिंग ऑफिसर सोमाश्री बोस अवस्थी ने कहा कि निहार नैचुरल्स अपने मुनाफे का 5 प्रतिशत बालिकाओं की शिक्षा के लिये देता रहा है और दे रहा है। अब तक 4.17 लाख विद्यार्थियों को प्रभावित कर चुकी है और 2.89 लाख शिक्षकों तक पहुँच चुकी है। मैरिको लिमिटेड का लक्ष्य है वर्ष 2025 तक 10 लाख बच्चों को भाषा में साक्षर और निपुण बनाना।

उन्होंने बताया कि निहार नैचुरल्स शांति आंवला ने लगभग दो दशक पहले अपना सफर शुरू किया था और तब से काफी तेजी से तरक्की करते हुए परिमाण के हिसाब से भारत का नंबर 1 हेयर ऑइल (नील्सन के अनुसार) बन गया। इस अग्रणी स्थिति का श्रेय न सिर्फ विगत वर्षों में ब्रांड के नवाचार और बाजार में हलचल मचाने को जाता है, बल्कि अपने उद्देश्य को लेकर उसके विशुद्ध समर्पण को भी।

उन्होंने बताया कि इस साधारण, दिल को छू लेने वाले विज्ञापन में आलिया भट्ट को एक स्कूल में को-क्युरिक्युलर मेंटर के रूप में दिखाया गया है और वह वार्षिक दिवस के लिये बच्चों से जुड़कर उनकी मदद कर रही हैं। विद्यार्थी उन्हें प्यार से 'दीदी' कहते हैं और उनके लंबे, घने, काले बालों से सम्मोहित होकर शिक्षा के संदर्भ में उनके सुंदर बालों की प्रशंसा करने के लिए छोटी कविता सुनाते हैं।

मैरिको लि. की चीफ मार्केटिंग ऑफिसर सोमाश्री बोस अवस्थी

सार-समाचार

सुंदरकांड पाठ में जुटे राजनेता-धर्मगुरू

जयपुर (कासं)। विप्र कल्याण बोर्ड की उपाध्यक्ष मंजू शर्मा के निर्देशन में सोमवार को विद्याधर नगर के सीकर रोड स्थित शगुन मैरिज गार्डन में सन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन हुआ। 'एक शाम सनातन के नाम' की थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में मंत्री महेश जोशी, विप्र कल्याण बोर्ड अध्यक्ष महेश शर्मा, मंत्री बृजकिशोर शर्मा, कांग्रेस नेता विक्रम सिंह, सुरेश चौधरी, धार्मिक गुरु बालमुकुंदाचार्य, सुदर्शन दास, बालकिशन दास और परशुराम दास समेत भारी संख्या में स्थानीय महिलाओं-पुरुषों ने भाग लिया।

एस.के.आई.टी. छठे साल पहले स्थान पर

जयपुर (कासं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय (आरटीयू) ने प्रदेश के इंजीनियरिंग कॉलेजों की साल 2022-23 की रैंकिंग को लेकर नोटिस जारी किया है। आरटीयू की ओर से कॉलेजों की रैंकिंग के लिए जारी क्वालिटी इंडेक्ट वेल्यू (क्यूआईवी) में गत वर्ष रहने वाले सभी निजी कॉलेजों की रैंकिंग यथावत रखी गयी है। आरटीयू द्वारा जारी किए गए नोटिस के आधार पर स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट एवम ग्रामोथन ने लगातार छठे साल पहला स्थान प्राप्त किया। वहीं दूसरे स्थान पर पूर्णिमा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, पूर्णिमा इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी ने तीसरा स्थान एवम जेईसीआरसी ने चौथा स्थान प्राप्त किया है। टॉप 10 कॉलेजों की सूची में सभी कॉलेज जयपुर के हैं। वर्तमान में प्रदेश में आरटीयू के करीब 57 इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। संस्था के निदेशक जयपाल मील ने कहा कि प्रदेश में लगातार छठे साल इंजीनियरिंग कॉलेजो की रैंकिंग में पहला स्थान प्राप्त करना बेहद सुखद अनुभव है। ये एसकेआईटी की पूरी टीम की मेहनत और स्टूडेंट्स की लगन का नतीजा है।

बस कंपनी पर 25 हजार रु. हर्जाना

जयपुर, (का.सं.)। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग जयपुर द्वितीय ने यात्री को रास्ते से उतारने पर महालक्ष्मी ट्रेवल्स कंपनी पर 25 हजार रुपये का हर्जाना लगाया है। यह आदेश परिवादी सुरेन्द्र लाम्बा के परिवाद पर स्वीकार करते हुए दिये। परिवादी के अधिवक्ता राम प्रकाश कुमावत ने बताया कि लाम्बा ने जयपुर से कुशलगढ़, बांसवाड़ा जाने के लिये 700 रुपये प्रति सवारी सीट बुक कराई थी लेकिन बस चालक ने बस को गंतव्य स्थान पर नहीं ले जाकर बीच रास्ते में ही उतार दिया गया। इस कारण उसे अन्य साधन से मीटिंग में देरी से पहुंचना पड़ा। विपक्षी के इस कृत्य को आयोग ने गंभीर सेवा दोष में अनफेयर प्रेक्टिस मानते हुए मानसिक संताप व खर्चे के लिये 25 हजार रुपये का हर्जाना लगाया है।

Loomis Day

There is always a man (or woman), who is responsible for everything we take for granted today. Neither he nor we could have seen the long term effects of what he had done, for many things had to come after it for what he designed to come to pass. In the fullness of time, the creation of the 'wireless telegraph' has utterly changed the world, and it took an American dentist in 1886 to set it all in motion. Loomis Day celebrates Mahlon Loomis, a humble dentist who created something amazing and changed the world.

#AWARD

Rambagh Palace: World's No. 1 Hotel

Rambagh Palace has been rated as the World's No. 1 Hotel in the coveted 2023 Travellers' Choice Awards by TripAdvisor, the world's largest travel site.

Rambagh Palace.

Tusharika Singh
Freelancer writer and city blogger

Originally built in 1835, Rambagh Palace, has stepped gracefully through many royal transitions-from the home of the queen's favourite handmaiden, to royal guesthouse and hunting lodge, and later as the residence of the Maharaja Sawai Man Singh II and his queen, Maharani Gayatri Devi. This 'Jewel of Jaipur', often hailed as the epitome of luxury and grandeur, has recently added another feather to its cap by winning a prestigious award. Rambagh Palace has been rated as the World's No. 1 Hotel in the coveted 2023 Travellers' Choice Awards by TripAdvisor, the world's largest travel site. The Travellers' Choice Awards honour travellers' favourite destinations, hotels, restaurants, things to do, and beyond, based on the reviews and opinions collected from travellers and diners around the world on TripAdvisor over a 12-month period.

On the occasion, Ashok Rathore, Area Director – Rajasthan and General Manager, Rambagh Palace, Jaipur; said, "We are delighted and humbled that Rambagh Palace, Jaipur has been recognised as the No.1 Hotel in the World by TripAdvisor's Travellers' Choice Awards 2023. This global honour is a true reflection of world class hospitality in an authentic palace setting brought to life by the iconic brand Taj and a testament to the trust our guests have placed in us over the years. We remain committed to delighting our guests and spreading the magic of 'Tajness' in the times to come."

Further adding to the sentiment, he remarked at a recent presser organized at hotel: "Despite having received numerous awards in the past, this particular achievement is special and unique. It holds great significance for us, setting us apart from others. Rambagh Palace is a living testament to our legacy."

Delving deeper into the impact of this award on the state, he emphasized the wide-ranging benefits it would bring. "Winning this award will not only benefit the state of Rajasthan in terms of increased tourist arrivals but also the entire country," he explained. "We are the only Indian hotel featured among the top 25 on this list, and foreign tourist arrivals will see a much-needed boost after the pandemic. We are already getting several queries for celebrity weddings etc."

Ashok Rathore with the team of Rambagh Palace.

Preserving heritage and environment

When it comes to promoting and preserving the state's rich heritage, Rambagh Palace goes above and beyond. The hotel takes dedicated initiatives to promote Rajasthan's handicrafts, culture, art, and artisans. In collaboration with UNESCO, they actively contribute to the promotion of intangible heritage. Guests at Rambagh Palace are treated to immersive experiences with handmade carpets, handmade blue pottery, folk dances, and music. Even during the challenging times of the pandemic, the hotel remained steadfast in supporting all artists and artisans, ensuring that none of their performers were laid off.

Rambagh Palace's commitment to a sustainable and eco-friendly future is equally noteworthy. The hotel boasts an environment teeming with life, with over 200 peacocks calling it home. This serves as a testament to the healthy ecosystem nurtured at the palace, encompassing flora, fauna, and nature. The hotel takes significant strides towards environmental preservation, including avoiding the use of plastic, planting more trees, and implementing water conservation measures. These initiatives exemplify their dedication to preserving the natural beauty that surrounds the palace.

Culinary Innovations

In terms of culinary offerings, Rambagh Palace is constantly innovating to provide guests with a delightful gastronomic experience with eateries like Steam, Suvarna Mahal, Verandah Café, among others. One exciting addition to their menu is the introduction of millets such as jowar and bajra. These nutritious grains will be actively promoted, and a millet food festival will be organized to showcase their versatility and health benefits. Recognizing the importance of including these grains in the younger generation's diet, the hotel aims to educate visitors from around the world about the culinary treasures offered by millets.

Preserving the legacy

As Rambagh Palace continues to evolve and embrace its role as a custodian of heritage and sustainability, it remains an enchanting destination that embodies the grandeur and cultural richness of Rajasthan. Over the years, Rambagh Palace has hosted celebrities like Queen Elizabeth II, Lord Mountbatten, former US President Bill Clinton and family, and ex-Twitter boss Jack Dorsey, among many others. "The USP of this property is that there is no renovation, but only restoration; we have preserved the legacy of the erstwhile royals", Rathore said.

The Prey, the Poachers and The Politics

What role does forest play in politics? It becomes the guinea pig of the politicians and poachers who leave no stone unturned to encroach and exploit it. What can a forest officer do to save his forest? Keep running from the pillar to the post!

Sunayan Sharma
IFS (Retd.), Ex field director project tiger Sariska & keoladeo national park, Bharatpur

Siliberi jungle is favourite home of tigers.

#FROM THE DIARY OF A FORESTER

Sariska is a huge reserve with lots of dense forest wealth in the form of grasses, herbs, shrubs and trees. In the entire Rajasthan it is the only area which has very dense forest and that too to the tune of 14 sq.km.

Anogeissus pendula (Dhok) is the dominant tree species covering over 90 per cent of the reserve's area. Salar and Gurjan grow in rocky patches. Khair (Kattha), though rare in pure patches, is found commonly in valleys. Bamboo, though spread over the entire reserve, can be seen along springs and moist hills. Some valleys support Ber (Zizyphusmauritiana) trees.

During summer when most of the grasses become dry and non-palatable, the dry leaves of dhonk fall from trees on the forest floor and provide the best possible nutritious food to sambar, spotted deer and blue bull. Capparissppalso plays an important role in providing green fodder to animals during peak summer when most other plants dry up.

Fifty five species of grass enrich the important ground flora of Sariska. These are scattered over the entire reserve and play an important role in the distribution of wildlife. From floral richness's point of view, the main Sariska-Kalighati-Slopka and Umari-Siliberi valleys deserve special mention. Richness of faunal species in these valleys attribute to this specialty of floral diversity.

On one hand this floral diversity attracts cattle-rearing people and on the other the rich fauna lures hunters/shikaris. This rich natural wealth is the chief cause of settlement of huge number of villages/cattle camps in side and on the periphery of the reserve.

Intensive Patrolling

There are around 300 odd villages located within a radius of 5 km from the reserve boundary (with more than 1.5 lakh people and 2.75 lakh livestock). They depend largely upon the reserve to meet their day-to-day forest-based requirements. This resource dependence has led to large-scale deterioration and degradation of the habitat in the peripheral as well as core areas of Sariska.

The reserve administration has adopted several strategies to put a check on illicit grazing, wood cutting by villagers and poaching of wild animals by shikaris for personal consumption or money-making. As one of the measures, several forest protection posts have been created in interior jungles by the reserve authorities. On foot and vehicular patrolling is done on a regular basis. This has led to organized jungle crimes by the affected villagers especially in the cases of cattle grazing and wood poaching. In late 1980s, Siliberi forests were the worst affected from this point of view and witnessed a number of such crimes.

In order to foil such illegal activities, utilizing a shikar hodi built during the reign of the erstwhile rulers, an outpost was created some time back by the reserve authorities at the tail of the precious Umri-Siliberi valley. It is a red fort-like stupendous building, standing on the bank of the stream which collects huge water from Pandupole hills to discharge in to Baleta dam, passing through Umri-Siliberi valley. A number of small and big villages are located around this huge earthen dam. While those belonging to cattle-rearing communities depend solely upon their cattle for livelihood, many others engaged in farming also rear cattle to enhance their economy. During the rule of the princely state, a total ban was enforced on grazing, wood poaching in the forests of Siliberi area. The villagers abided by these rules for many years even after independence as there was enough fallow land available in their villages for grazing their cattle. But with growing population this fallow land legally or illegally went under plough for raising agricultural crops. Consequently, Siliberi forests fell victim to encroachment for cattle grazing.

In 1991, on my joining here as Field Director, the sensitivity of the issue struck me. This Siliberi-Umri and Siliberi-Rotkyala valley being important tiger areas had to be protected against all kinds of disturbances. Protection measures were strengthened by posting additional field personnel. I too started camping here from time to time. Also, a wall was erected at Siliberi gate to put complete brake on entry of village cattle in to the Siliberi-Umri valley. I knew it was a displeasure earning job but duty-bound as I was, I could not afford to keep people happy at the cost of the reserve.

As anticipated, scuffles between the reserve personnel and the mischief mongers increased. Many a times our staff faced wrath of these villagers. Also, people who were fond of wild meat were growing restless as strict patrolling had marred their chances of killing animals for their pot. I was aware of the growing tension and held several meetings with these villagers and advised them to get their charnaut (village grazing lands) vacated from the illegal occupants. I also requested the district collector to evict the encroachers but everybody seemed helpless against these muscle men intoxicated with political power.

On the contrary these encroachers instigated the villagers to graze their cattle forcefully in the reserve forest resulting in to our regular scuffles with them. This led a section of these people to approach the court at Alwar. Unfortunately, they succeeded in getting temporary relief also from the court.

It was a matter of serious concern for us as this rampant grazing could ruin the tiger land. Fortunately, we did seek relief from the high court of Rajasthan, which remanded the case back to the Alwar court for proper hearing. Now we succeeded in getting the earlier decision reversed. This tug of war had added fuel to fire which could not be extinguished in spite of my best efforts.

> One morning in the last week of September 1994, several offenders attacked Siliberi chowki. Head guard Battu Lal and few other guards got injured. They were threatened blatantly with their life if strict vigilance against the forest offenders was not lifted. We reinforced our position by intensive patrolling in this belt.

One morning in the last week of September 1994, several offenders attacked Siliberi chowki. Head guard Battu Lal and few other guards got injured. They were threatened blatantly with their life if strict vigilance against the forest offenders was not lifted. We reinforced our position by intensive patrolling in this belt.

Settling Score

In the meantime, one evening, Battu Lal Meena, in-charge of this Siliberi chowki got a secret message through an informer that a shikari (hunter) had entered the Deori forest, on a plateau not very far from here.

Battu Lal was a strong young man, full of enthusiasm and dedication. It took him and his two friends more than an hour to reach Deori plateau. This plateau on its western side joins Bhensota plateau which further leads to Kalighati. On its southern side it drains in to plains of Jahaj forest and Nadu village leading to Tehla. On its east, a luxuriant forest of 'Kaimala plateau' has a 6 km stretch, till it drains in to plains of Boretha, situated towards Rajgarh township and villages.

This dare devil shikari belonged to this eastern side and had climbed this plateau all alone. The experienced Battu Lal decided to wait for him at this exit to Kaimala forest. After a patient wait, they saw the stout middle-aged shikari Khyali Lal carrying a headload of meat of the slain wild boar, wrapped in a cloth-potli. After searching for some time when the shikari was found, Battu Lal asked him to surrender. This took Khyali by surprise but he instantly gathered courage and tried to flee away to evade the arrest. The dedicated officials chased him. Now realizing the trap, Khyali played a trick. He entered a pond and throwing the headload away took out the butcher knife-like sharp-edged weapon and asked the raiders to disperse, threatening to slit his own throat. Though this unexpected move took Battu and party by surprise but they did not lose courage and started moving inch by inch towards the poacher. Understanding that escape was not possible, Khyali slit his throat.

Blood started oozing from the slit throat. This sudden act of slitting his throat shocked Battu Lal and the guards momentarily but soon they gathered their wits. They offered him medical aid and pleaded to cooperate but the poacher did not allow them to come closer. Khyali Lal still holding the weapon close to his throat was persistently threatening to kill himself. The officials got really scared. They decided to leave the site immediately lest the revengeful poacher really kills himself to get these officials implicated in the murder or a police case. They also hid the incident from their superiors including their range officer. Secretly they were following the developments in this case, through some personal sources. It was only on the third day that they learned that the poacher had survived but lodged a complaint against them in the police station of Tehla.

The police had booked them under the grievous charge of 'attempt to murder'. I was informed of this quite late. A scared Battu Lal and both the guards fled to evade arrest. I was trying hard to contact them but they were untraceable. Apparently, the poacher had cut his throat but very cleverly had saved the wind pipe. So, it turned out to be a minor injury and under no condition could be termed fatal. But initially he did not intentionally go for treatment in order to make a strong criminal case against the reserve staff. And later on, his family members and other villagers tried to settle score with the reserve personnel by depriving him of medical treatment.

I narrated the facts to the superintendent of police in Alwar who showed all sympathy with the reserve personnel but could not do much except delaying the arrest for some time. Eventually the poacher developed a septic in the throat region. Had he died, no one could have saved my staff. I deputed some efficient staff personnel to get the poacher admitted in the hospital and to get him the best possible treatment to ensure his safety. It was not less than a miracle that my officers succeeded in getting him admitted in the government hospital of Alwar and ensured proper treatment. I met the concerned medical officers in person who assured me of fully curing the patient. We were bearing all the medical expenses also.

Encashing The Situation

A bunch of reserve personnel were deputed in this hospital to attend and keep an eye on the poacher round the clock. Fortunately, this arrangement worked well and the poacher's condition started improving. I was assured by the medical team that Khyali would be all right with few more days of treatment. But the very next day I got the shocking news that the preceding night itself Khyali had fled from the hospital with the aid of hiskinsmen, leaving the treatment incomplete. It was clear that his relatives and other villagers did not want him cured lest it dilutes the case against the Sariska personnel. All of them were interested in encashing the situation.

Within two days, pus had begun to hang from his throat. To add fuel to the fire, these people started exhibiting the pus hanging from Khyali's slit throat to even the neighbouring villagers. I requested the SP and the collector to get the poacher transferred to hospital for treatment to save his life. But they seemed helpless against the mob. With great effort we succeeded in persuading some influential politicians of that area but this too did not work.

What our informer revealed was unbelievable. Khyali was unmarried. At this stage he very much wanted to get treatment at an earliest but his other two brothers interested in his land share of 10 bigha, from the family property, did not want him to recover. The local politicians were instigating people against us. Thousands of such people were camping at Khyali's house. All were waiting for him to die.

The situation had become so scary that our staff was not ready to stay at the Siliberi chowki lest they get attacked by these mischief mongers. One day, taking advantage of this volatile situation, these offenders collectively attacked the chowki and forcefully entered with their flocks of cattle on the prohibited area by demolishing the masonry wall and the gate.

They also blocked the non-metal motorable road connecting Siliberi to Baleta (our another naka) and Malakheda. They wanted to deprive us of any assistance from our outposts of this area as well as from Malakheda police station. However, we were prepared. Fortunately, the SP of Alwar now cooperated and we could clear this route with the help of police assistance, as we faced bearable resistance. Also, we could re-instate our Siliberi chowki with the additional police force. Cattle were pushed out by us but we could not afford to be too strict and antagonize these agitators at this sensitive time when the seriously ill Khyali was still being used by them to mobilize people against us. By now Khyali had understood the situation better than earlier but the people surrounding him won't let him have medical aid as their interest was vested in his death and not his life.

His death meant arrest and murder trial against the reserve staff. That would in turn demoralize our work force forever, leading to chances of unrestrictive use of forest resources including poaching of wild animals. Khyali's brothers would have hugely benefited by grabbing his 10 bigha land.

Protecting The Morale

Day by day his condition was deteriorating. I left no stone unturned to persuade the district administration to rescue Khyali and in writing made it clear that had Khyali died, the district administration would be chiefly responsible for his death and the aftermath. Ironically, we were pushed on the backfoot for no fault of ours as we were merely discharging our duties with sincerity. Khyali was being killed by the greedy brothers and the villagers for their personal gains. The entire government machinery but for our department was witnessing this as a mute spectator, as if they had nothing to do with the safety of Khyali or the tiger land and its protectors.

On our end at state level and also through the chief wildlife warden, all possible efforts were on to pressurize the concerned authorities to rescue Khyali. Ultimately, we succeeded in waking up the district administration and the sub divisional officer and deputy superintendent of police, Rajgarh were deputed for this rescue operation. They camped at the site and finally with persistent efforts that lasted for about 18 hours, they succeeded in the mission. Later that night the victim was admitted in the government hospital of Alwar from where he was transferred to the government hospital in Jaipur under police custody. This time I deputed a bunch of more effective personnel lest the last episode gets repeated. Our team stayed there till Khyali got fully cured and discharge certificate was issued duly signed by the authorized doctor.

Our staff took leave from this duty only after Khyali's safe delivery at his home in the presence of several villagers and the local police officials.

Still the pending police case against our personnel had to be contested. Though the concerned villagers through their leaders were pressurizing the police officials, but this time they could not enjoy any favour from police as Khyali was not cooperating with them. Now they resorted to organize a huge public meeting close to Siliberi. Fortunately, this time the district administration showed cooperation by deploying enough police force at the meeting spot, under control of the SDO and Dy S,Rajgarh. In the meeting the local leaders mounted huge pressure upon us to allow grazing in the area but it could not deter us from our commitment to save the critical tiger habitat. The crowd instigated by these politicians' showed resentment and threatened of dire consequences but as a custodian of the tiger land, I did not bow down to their demands.

As anticipated, the meeting got dismissed without any result. Though scuffles with the mischief mongers could not be stopped thereafter but despite the immense pressure on police, after some time we succeeded in getting the criminal case dropped against Battu Lal and the other personnel. Thereafter we also succeeded in building back the broken boundary wall at Siliberi, sealing illicit grazing once again in this valley. That evening we had a little bonfire celebration at Siliberi with the chowki staff. The daring, committed boys deserved a pat on their back.

Though in those six months we had to undergo real bad times due to this shikar incidence but the best part was that despite of all kinds of pressures, not only could we protect the morale of our personnel, working under such harsh conditions and with little or no resources, but also succeeded in demoralizing the shikaris and other mischief mongers.

Those living in cities and other urban areas may not be able to appreciate as to how challenging is the job of dedicated forest personnel especially in the wildlife reserves.

But today when I look back at these incidents, I feel proud to have played my part with utmost satisfaction to contribute to the pious cause of nature conservation.

rajeshsharma1049@gmail.com

Wild boar is most saught after shikar by shikaris for pot.

Siliberi nullah is lifeline of this area.

Sariska an abode for tigers.

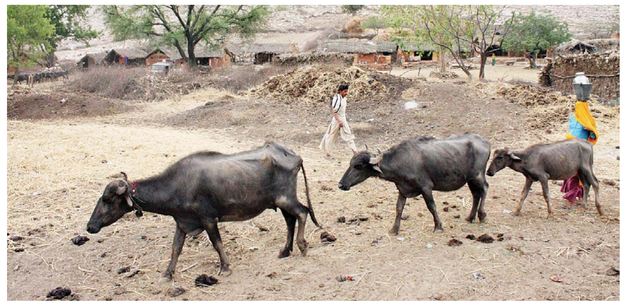

Cattle grazing is chief area of conflict between villagers & Park Management.

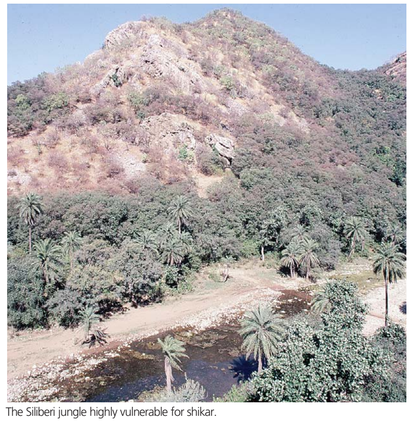

The Siliberi jungle highly vulnerable for shikar.

THE WALL

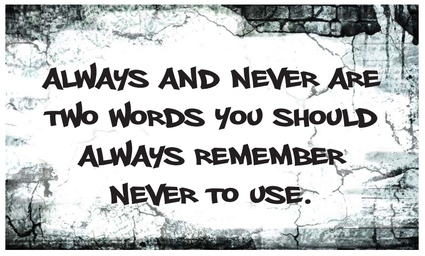

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

अट्ठारह दिन से चल रहा धरना समझाइश पर स्थगित

विजयनगर तहसील क्षेत्र को अजमेर जिले में यथावत रखने की मांग रखी

बिजयनगर, (निसं)। बिजयनगर तहसील क्षेत्र को नवसृजित जिले केकडी जिले में शामिल किए जाने के विरोध में गत 12 मई से अट्ठारह दिन से चल रहा धरना उपखंड अधिकारी भरत राज गुर्जर एवं तहसीलदार सुभाष स्वामी के साथ सोमवार को धरना स्थल पर की गई समझाइश के पश्चात स्थगित किया गया।

तहसील संघर्ष समिति अध्यक्ष कैलाश गुर्जर के नेतृत्व में चल रहे धरने को शहर एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का व्यापक समर्थन मिला। विगत 19 मई को विजयनगर बंद का भी व्यापक असर देखने को मिला। धरने पर बैठे कैलाश गुर्जर के साथ जैन समाज के प्रेम राज बोहरा, नगर कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा, कांग्रेस नेता श्याम नागोरी, चतर सिंह पीपाड़ा, मदन गोपाल बाल्दी, रालोपा पार्टी के जगदीश लांबा, कैलाश जाट, नेमी चन्द भंडारी, संजय कुमावत, शिवदयाल त्रिपाठी, ज्ञान सिंह सांखला, एडवोकेट दिनेश राका, आशीष सांड, नेमीचंद मेवाड़ा, प्रदीप सिंह भदोरिया, रामपाल जांगिड़, राजेंद्र पामेचा, किशन सिंह सिसोदिया, रामलाल जांगिड़, रतनलाल जाट, कुबेर सिंह, लक्ष्मण कंजर व मुकुंद सिंह राठौड़ सहित नागरिकों ने उपखंड अधिकारी भरत राज गुर्जर एवं तहसीलदार सुभाष स्वामी को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपकर विजयनगर तहसील क्षेत्र को अजमेर जिले में यथावत रखने की मांग की।

तहसील संघर्ष समिति के अध्यक्ष कैलाश गुर्जर के नेतृत्व में उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

■ बिजयनगर तहसील क्षेत्र को नवसृजित जिले केकडी जिले में शामिल किए जाने के विरोध में गत 12 मई से धरना जारी था

उपखंड अधिकारीभरत राज गुर्जर ने बताया कि जन भावनाओं एवं क्षेत्र कीभौगोलिक स्थिति की तथ्यात्मक रिपोर्ट के आधार पर अजमेर ब्यावर केकड़ी की स्थिति से अवगत करवाते हुए। इस संबंध में राज्य सरकार को रिपोर्ट प्रेषित की जाएगी। अभी तक नवसृजित जिलों की सीमाएं तय नहीं है राज्य सरकार जनता की भावना के अनुसार निर्णय लेगी।

टोडा पुलिस चौकी इंचार्ज को हटाने की मांग

ग्रामीणों ने महानिरीक्षक जयपुर को दिया ज्ञापन

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत टोडा के राजस्व ग्राम कालाकोटा के ग्रामीणों ने महानिरीक्षक जयपुर को ज्ञापन सौंपकर टोडा पुलिस चौकी इंचार्ज को हटाने की मांग की है। मामले के अनुसार टोडा, कालाकोटा, तेलीवाला, रामल्यास गांव के अंदर से जा रहे खदानी ओवरलोड डंपरों को रोकने की मांग पर अड़े हैं, क्योंकि इन डंपरो से आए दिन दुर्घटनाएं घटती रहती है। 24 मई को डंपर से पत्थर गिरने पर एक बालिका बाल-बाल बच गई थी, जिसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने ओवरलोड वाहनों को रुकवा दिया था।

बाद में परिवहन विभाग द्वारा चालान काट कर कार्रवाई की गई थी। ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस चौकी इंचार्ज मोहनलाल स्वामी विगत पांच वर्षों से टोडा चौकी में जमा हुआ है तथा खान माफियाओं के इशारे पर ओवरलोड वाहनों का संचालन करता है। ग्रामीणों के साथ गाली-गलौज अभद्र व्यवहार करते हैं। ओवरलोड वाहनों से आए दिन गांव में पत्थर गिरते हैं जिससे आए दिन दुर्घटनाओं का अंदेशा बना रहता है। ग्रामीण जब इसकी शिकायत लेकर पुलिस चौकी पहुंचते हैं तो पुलिस चौकी इंचार्ज एफ आई आर दर्ज करने के बजाय ग्रामीणों को ही डांट फटकार कर भगा देते हैं।

ग्रामीणों ने पुलिस चौकी इंचार्ज को हटाने व ओवरलोड डंपरो को बंद करवाने को लेकर पुलिस महा निरीक्षक जयपुर को ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन देने वालों ने बताया है कि इस मौके पर पुलिस महानिरीक्षक ने जल्द ही कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। इस मौके पर रोहिताश बटार, कानाराम गुर्जर, कृष्ण गुर्जर द्वारा आईजी जयपुर को ज्ञापन दिया गया। पूर्व में भी ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी, पुलिस अधीक्षक सीकर एवं स्थानीय नेताओं को भी अवगत करवा दिया था। उसके बावजूद भी जब कोई कार्यवाही नहीं हुई तो मजबूरन ग्रामीणों को जयपुर आईजी से मिलना पड़ा।

दो दुकानों से नकदी चोरी

उदयपुर, (निसं)। शहर के बापूबाजार में स्थित बुक स्टोर की दो दुकानों से चोर नकदी चुरा ले गए।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार रात में शहर के बापूबाजार में स्थित पोपुलर बुक स्टोर दुकान का अज्ञात चोर ताला तोड़ 90 हजार रूपये नकदी चुरा ले गए। वहीं चोर पास स्थित रमेश बुक स्टोर का ताला तोड़ कर करीब 3 लाख रूपये नकदी चुरा ले गए। सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच पीडित महेश पुत्र अर्जुनदास कटारिया निवासी ई ब्लॉक शिवपार्क कॉलोनी सूरजपोल व सेक्टर 14 निवासी अनिल गखरेजा पुत्र हरिश गखरेजा की रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

अवैध शराब जब्त, तीन गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। शहर के हिरणमगरी थाना पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान विभिन्न स्थानों पर दबीश देकर पचास हजार रूपये की अवैध शराब जब्त कर तीन जनों को गिरफ्तार किया।

जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के निर्देश पर चलाए जा रहे तलाशी अभियान के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर मंजीतसिंह, पुलिस उप अधीक्षक शिप्रा राजावत के सुपरवजिन में हिरणमगरी थानाधिकारी रामसुमेर मीणा के नेतृतव में गठित टीमों ने कृषि मण्डी के सामने ओमानी कार में निर्मल पुत्र रोशनलाल निवासी सुरों का फला बलीचा बाईपास थाना गोवर्धन विलास के कब्जे से 60 बोतल व बीयर की 24 केन जब्त की। उमरड़ा से डालूराम पुत्र भेरा के कब्जे से पांच बोतल शराब तथा बंजारा बस्ती से मनोहरलाल पुत्र आनन्दीलालके कब्जे से 121 बोतले, बीयर की केन 46, अंठोजी शराब की 16 बोतले, अंठोजी शराब के 29 अध्धे एवं 119 पव्वे जब्त कर प्रकरण दर्ज किया। पुलिस ने अवैध शराब जब्त कर निर्मल, डालू व मनोहरलाल को गिरफ्तार कर प्रकरण दर्ज किया।

अस्पताल में हुए कार्यों की जांच कराने की मांग

सुजानगढ़, (निसं)। राजकीय मातृ शिशु अस्पताल में हुए निर्माण कार्यों की जांच करवाने की मांग को लेकर एडीएम भागीरथ साख को भाजयुमो द्वारा दिये गये ज्ञापन पर कार्रवाई नहीं होने पर सोमवार को युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने स्थानीय भाजपा कार्यालय में बैठक की। बैठक युवा मोर्चा अध्यक्ष अमित मौसूण की अध्यक्षता में आहूत हुई।

पार्षद हरिओम खोड ने कहा कि एक तरफ सीएम गहलोत अपनी नि:शुल्क योजनाओं का प्रचार कर रहे हैं, दूसरी और मातृ शिशु अस्पताल के सरकारी उद्घाटन कार्यक्रम में पीएमओ ने अपने मित्र के नये मेडिकल का होर्डिंग लगाया। जिस पर किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं हुई। इसके अलावा सरकारी कार्यक्रम में हुई बिजली चोरी के प्रकरण में भी कार्रवाई नहीं होने पर आक्रोश जताया गया। बैठक में भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने अस्पताल में हुए निर्माण कार्यो की जांच नहीं होने पर आगामी 2 जून को जिला कलेक्टर के कार्यालय के सामने प्रदर्शन कर कलक्टर को ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। अमित मौसूण ने कहा कि फिर भी अगर कार्रवाई नहीं हुई तो वे नौ जून से अनिश्चिकालीन धरना शुरू करेंगे। इस बैठक में ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष राजेश सैन, मोनू गहलोत, हेमन्त सांखला, रेखा सोनी, ओमप्रकाश भरतिया, मुरील सैन, यश तोलानी, मनीष प्रजापत, बृजेश प्रजापत, हिमांशु भाटी, खुशबु दाधीच सहित बड़ी संख्या में भाजयूमो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

■ बैठक में मौसूण ने कहा कि फिर भी अगर कार्रवाई नहीं हुई तो वे नौ जून से अनिश्चिकालीन धरना शुरू करेंगे

कैफे पर दबिश, संचालक गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। सुखेर थाना पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान केफे पर दबीश देकर अवैध शराब व हुक्के जब्त कर कैफं संचालक को गिरफ्तार किया।

जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के निर्देश पर चलाए जा रहेतलाशी अभियान के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मंजीतसिंह, पुलिस उप अधीक्षक तपेन्द्र मीणाके सुपरविजन में सुखेर थानाधिकारी संजय शर्मा के नेतृत्व में गठित दल ने आसूचना के आधार पर 100 फीट रोड शौभागपुरा स्थित फ्रेण्डसजॉन केफे पर पहुंच कर दबीश दी। इस दौरान मोके से अवैध 254 बोतल शराब, 8 सेट हुक्का सेट व तम्बाकु फ्लेवर जब्त किए तथा मौके पर केफ के मैनेजर सुनिल पुत्र पप्पुसिंह निवासी डूडीपुरा पोस्ट खोडीया थाना एरावत नगर जिला आगरा युपीहॉल केशवनगर को गिरफ्तार कर प्रकरण दर्ज किया। मैनेजर ने पूछताछ में केफे के मालिक अनिल, कमलेश व अभिमन्युसिंह द्वारा अवैध गतिविधियां संचालित करने की जानकारी दी।

पावटा में जाम से वाहन चालक परेशान

जाम में अधिकारियों की गाड़ी और एंबुलेंस भी भी फंस रही है

पावटा, (निसं)। पावटा शहर के लोग ट्रैफिक जाम से परेशान है। ग्राम पावटा से भोनावास को जाने वाली सड़क पर बने अंडरपास से लेकर पावटा शहर के सीएचसी कट तक सर्विस रोड पर ट्रैफिक व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई है। दोपहिया, तीन पहिया व चारपहिया वाले सभी परेशानी महसूस कर रहे हैं। लोगों को अपने अपने गंतव्य तक जाने में काफी समय लग रहा है।

राष्ट्रीय राजमार्ग 48 के सर्विस रोड पर खड़े दोपहिया, तीन पहिया व चार पहिया वाहनों के चलते लगने वाले लगातार जाम से निपटने के लिए यातायात पुलिसकर्मियों की भी कोई व्यवस्था नहीं है। पावटा शहर के सीएचसी कट पर ही केवल ट्रैफिक कार्य के लिए पुलिसकर्मियों को लगा रखा है। जबकि ट्रैफिक का पूरा लोड पावटा भोनावास रोड के बड़े अंडर पास से लेकर पावटा शहर के सीएचसी कट व सुभाष चौक पर आ गया है।

इससे सुबह से शाम तक जाम ही जाम का नजारा है। छोटे-बडे सभी वाहन शहर में इसी मार्ग से प्रवेश कर रहे हैं और शहर के बाहर भी निकल रहे हैं। जाम में अधिकारियों की गाडी भी फंस रही है और एंबुलेंस भी। जहां सोमवार को मरीज को लेने जा रही एंबुलेंस जाम में फंसी रही। यही स्थिति रही तो अस्पताल पहुंचने के पहले या मरीज तक एंबुलेंस पहुंचने से पहले गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति या दुर्घटना ग्रस्त की मौत भी हो सकती है। प्रशासन और पुलिस प्रशासन शहर की इस समस्या के अवगत करवाने के बाद भी समाधान के लिए कोई उपाय नहीं किये जा रहे हैं। प्रशासन और पुलिस प्रशासन आंखें बंद कर समस्या को नजर अंदाज करने मे लगा है।

पवटा में जाम में फंसी एंबुलेंस।

छेड़छाड़ का मामला दर्ज

बौंली, (निसं)। जिले के एक थाने में एक पीड़ित पिता ने अपनी नाबालिग कक्षा 9 में अध्ययनरत छात्रा पुत्री के साथ छेड़छाड़ व आए दिन जबरन परेशान करने व अश्लील हरकत करने का मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू कर दिया। दर्ज रिपोर्ट में बताया गया है कि गांव व पड़ोस का ही शादीशुदा मुनेश मीणा जबरन मोबाइल देकर बातचीत करने का दबाव बनाता है। घटना के समय नाबालिग की मां जंगल में पशु चराने गई हुई थी एवं पिता मजदूरी करने गया हुआ था। इसी दौरान आरोपी ने नाबालिक को अकेला देखकर घर में घुसकर छेड़छाड़ व अश्लील हरकत करना शुरू कर दिया। विरोध करने पर मारपीट की एवं चिल्लाने पर लोगों को देखकर मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी।

मामा-भांजे की डंपर की टक्कर से मौत

बहरोड़/नीमराना, (निसं)। बहरोड़ के नजदीकी गांव तलवाड़ निवासी महेश कुमार मोबाइल दुकानदार व निशांत पुत्र अशोक निवासी नाघोड़ी सिलारपुर नीमराणा की नेशनल हाईवे नंबर 48 पर रोड क्रॉसिंग करते समय डंपर की टक्कर से मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया गया कि जयपुर से दिल्ली मार्ग पर सुबह करीब 9 बजे मोटरसाइकिल सवार रिश्ते के मामा-भांजा रोड पार कर रहे थे। इस दौरान हादसा हो गया। टक्कर इतनी भयंकर थी कि डंपर दोनों मोटरसाइकिल सवार मामा-भांजे को करीब 100 मीटर की दूरी तक घसीट कर ले गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शवों का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। गमगीन माहौल में परिजनों ने दोनों परिवारों के अलग-अलग गांव के इकलौते पुत्र महेश व निशांत का अंतिम संस्कार किया।

■ मोटरसाइकिल सवार मामा-भांजा रोड पार कर रहे थे

आकाशीय बिजली गिरने से मकान क्षतिग्रस्त

सूरतगढ़, (कासं)। शाम को आंधी के साथ ही बादलों की गरज चमक होने लगी। हालांकि बरसात नहीं आई मगर तेज धमाके के साथ गिरी आकाशीय बिजली ने रंगमहल गांव में एक किसान की ढ ाणी में बने नवनिर्मित मकान को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया। गनीमत रही कि इस घटना में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई।

मौसम विभाग की चेतावनी के अनुरूप सूरतगढ़ में भी मौसम बेईमान है। शीतल बयार जहां लोगों को गर्मी से राहत पहुंचा रही है, वहीं तेज हवा और अंधड़ ने घरों में गृहणियों को परेशान कर रखा है। रंगमहल के सरपंच विजय सिंह ताखर ने बताया कि ढ ाणी में खेतपाल जोहम के मकान की दीवार के निर्माण का कार्य चल रहा था। यह दीवार कुछ दिन पहले आये अंधड़ से ढ ह गई थी। इस बीच शाम को जोरदार धमाके के साथ खेतपाल के मकान की छत पर बने चौबारे पर बिजली गिरी जिससे पूरे मकान में दरारें आ गई।

बिजली गिरने के कारण घर के विद्युत उपकरण और वायरिंग जलने के साथ ही घरेलू सामान का नुकसान हो गया। घटना के तुरंत बाद ग्रामीण मौके पर पहुंचे और मकान में रह रहे लोगों की सार संभाल की। बिजली गिरने के बाद खेतपाल के नवनिर्मित मकान की छत पर बनाया गया दमदमा और पानी की टंकी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। घर में कमरे की चौगाठें टेढ़ी हो गई तो पूरे मकान में दरारें आ गई। बिजली गिरने की दूसरी घटना सूरतगढ़ में एनएच-62 के समीप 33केवी के विद्युत टावर पर घटित हुई जिसमें बिजली के इंसुलेटर जल गए। इस कारण से शाम के समय गुल हुई बिजली रात 11 बजे तक भी पूरी तरह से बहाल नहीं हो पाई थी।

पेट्रोल पंप से दिन दहाड़े ताला तोड़कर नगदी चोरी

अनूपगढ़, (निसं)। मुख्य बाजार में भीड़-भाड़ वाले इलाके में एक अज्ञात व्यक्ति ने पेट्रोल पम्प के काउंटर के गल्ले का ताला तोड़कर 53 हजार रूपए पार कर दिए। यह घटना मुख्य बाजार में स्थित दीवान चंद एंड संस पेट्रोल पम्प पर दोपहर 2 बजकर सात मिनट पर हुई। पेट्रोल पम्प में लगे सीसीटीवी में चोरी की पूरी घटना कैद हो गई। जिस समय घटना घटित हुई पेट्रोल पम्प का संचालक गल्ले को ताला लगाकर खाना खाने घर गया था।

पेट्रोल पंप के संचालक रतन चुप के द्वारा अनूपगढ़ पुलिस थाने में देर रात्रि अज्ञात चोर के खिलाफ मामला दर्ज करवाया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले में जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार मुख्य बाजार स्थित दीवान चंद एंड संस के संचालक रतन चुघ और उसका भतीजा परविंद्र चुघ रविवार दोपहर लगभग दो बजे अपने घर खाना खाने गए थे। तभी महाराजा होटल की तरफ से एक व्यक्ति सबकी आंखों में धूल झोंक कर पेट्रोल पम्प के कार्यालय में घुसा और इधर-उधर देखने के बाद कार्यालय के अंदर रखे काउंटर का गल्ला पेचकस से तोड़कर गल्ले में रखे 53 हजार रूपए पार कर दिए।

बलात्कार के आरोपी को गिरफ्तार किया

पुलिस की गिरफ्त में नाबालिग से बलात्कार का आरोपी।

बून्दी (निसं)। नाबालिग पुत्री के साथ बलात्कार करने वाले उसकी मां के प्रेमी जोधराज जांगिड़ को महिला थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भिजवाया।

जानकारी के अनुसार गत 22 मई को नाबालिग पीड़ता के नाना ने महिला थाना पुलिस में रिपोर्ट देते हुए बताया था कि 6 वर्ष पूर्व उनकी दोहिती के पिता की मौत होने के बाद से उनकी पुत्री के पास जोधराज जांगिड़ आया करता था। जिसने 12 वर्ष की मेरी दोहिती के साथ डरा धमका कर कई बार बलात्कार किया है। पीड़िता के नाना की रिपोर्ट पर महिला पुलिस थाना बून्दी प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की। मामले में आरोपी के संभावित स्थानों पर तलाशी करते हुए परिजन, मित्रों व मुखबीरों से मिली जानकारी के आधार पर 28 मई को आरोपी जोधराज जांगिड़ को गिरफ्तार किया गया। जांच कर आरोपी को पोस्को कोर्ट संख्या-1 में पेश किया गया, जहां से उसे 9 जून तक न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।

शराब की दुकानों से परेशान महिलाओं ने बोतलें फोड़ प्रदर्शन किया

दुकान के सेल्समैन से प्रदर्शनकारी महिला ने धक्का-मुक्की कर मारपीट की

शाहपुरा, (निसं)। भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा के पुराने बस स्टैंड के पास नई आबादी स्थित अवैध मांस मछली की दुकानों व सरकारी शराब की दुकान से परेशान महिलाओं का गुस्सा सोमवार को दोपहर में फूट पड़ा। कुछ महिलाओं ने यहां सरकारी शराब की दुकान के बाहर शराब से भरी बोतलों को फोड़कर जमकर विरोध प्रदर्शन किया।

इस दौरान दुकान के सेल्समैन रमेश टेपण से प्रदर्शनकारी महिला मधु खटीक ने धक्का मुक्की कर मारपीट की तथा उसके हाथ से राशि छीन कर बाहर फेंक दी। सेल्समैन की रिपोर्ट पर शाहपुरा पुलिस थाने में मामला दर्ज किया है। इस बीच उपखंड अधिकारी ने थाना प्रभारी को सभी दुकानदारों के लाईसेंस मांगने व आसपास रहने वाले सभी मकानों को चेक कर लोगों की तस्दीक करने के निर्देश दिये है।

हंगामे की घटना की सूचना मिलने पर शाहपुरा के पुलिस व प्रशासन के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे और समझाईश शुरू की। मौके पर पहुंचे एसडीएम पुनीत कुमार गेलड़ा, सीआई राजकुमार नायक व आबकारी थाना अधिकारी ओमप्रकाश सिंह ने प्रदर्शनकारी महिलाओं से समझाईश की और जानकारी ली तो महिलाओं ने यहां सरकारी शराब की दुकान के देर रात तक खुलने का आरोप लगाया तथा पूरे इलाके में मांस का अवैध कारोबार होने की जानकारी दी।

इस पर एसडीएम पुनीत गेलड़ा ने सीआई राजकुमार नायक को पूरे इलाके की जांच करने का निर्देश दिया। इस दौरान एसडीएम पुनीत गेलड़ा ने यहां अवैध तरीके से चल रही मांस मच्छी की दुकानों की शिकायत पर मौके पर खुली दुकानों से जब लाइसेंस की मांग कर डाली तो सभी दुकानदार यहां से भाग छूटे। उपखंड अधिकारी ने थाना प्रभारी को निर्देश दिये हैं कि सभी दुकानों के लाईसेंस चेक किये जाएं बिना लाईसेंस वालों के खिलाफ कार्रवाई करें। इसके अलावा आस पास मकानों में रहने वाले लोगों का भी परीक्षण कर उनकी तस्दीक करावें।

इस इलाके में दर्जन भर से अधिक अवैध मांस मछली की दुकाने हैं जो यहां देर रात तक संचालित होती है और यहां देर रात तक शराब पीकर लोग उत्पात मचाते हैं जिससे महिलाओं व बालिकाओं में भय का माहौल बना रहता है। अवैध मांस मछली की दुकानों पर एसडीएम के सख्त रवैये से यहां इलाके में अफरा तफरी का माहौल हो गया। मोहल्ले वासियों ने एसडीएम से इस इलाके से सभी मांस-मछली व सरकारी शराब की दुकान को हटाकर अन्यत्र लगाने की मांग की है।

सरकारी शराब दुकान के सेल्समेन रमेश टेपण ने महिला मधु खटीक के खिलाफ दुकान में घुस कर मारपीट कर, शराब बोतलें फोड़ने व राशि छीनकर फेंकने का मामला थाने में दर्ज कराया है। एसडीएम ने शराब की दुकान के रात 8 बाद खुलने की शिकायत पर आबकारी थाना अधिकारी को जांच करने के निर्देश दिए हैं। वहीं अवैध मांस मछली की दुकानदारों को जल्द ही वैध लाइसेंस बनवाने के आदेश दिए हैं।

हंगामे की सूचना पर पुलिस व प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचे।

■ उपखंड अधिकारी ने थाना प्रभारी को दुकानदारों के लाईसेंस मांगने व आसपास के लोगों की तस्दीक करने के निर्देश दिये

बरसात से गुरू जम्भेश्वर नहर तीन जगह से टूटी, नूरे की भुर्ज व राणेरी में सड़कें बही

बाप उपखंड अधिकारी ने प्रभावित गांवों का दौरा कर हालातों का जायजा लिया

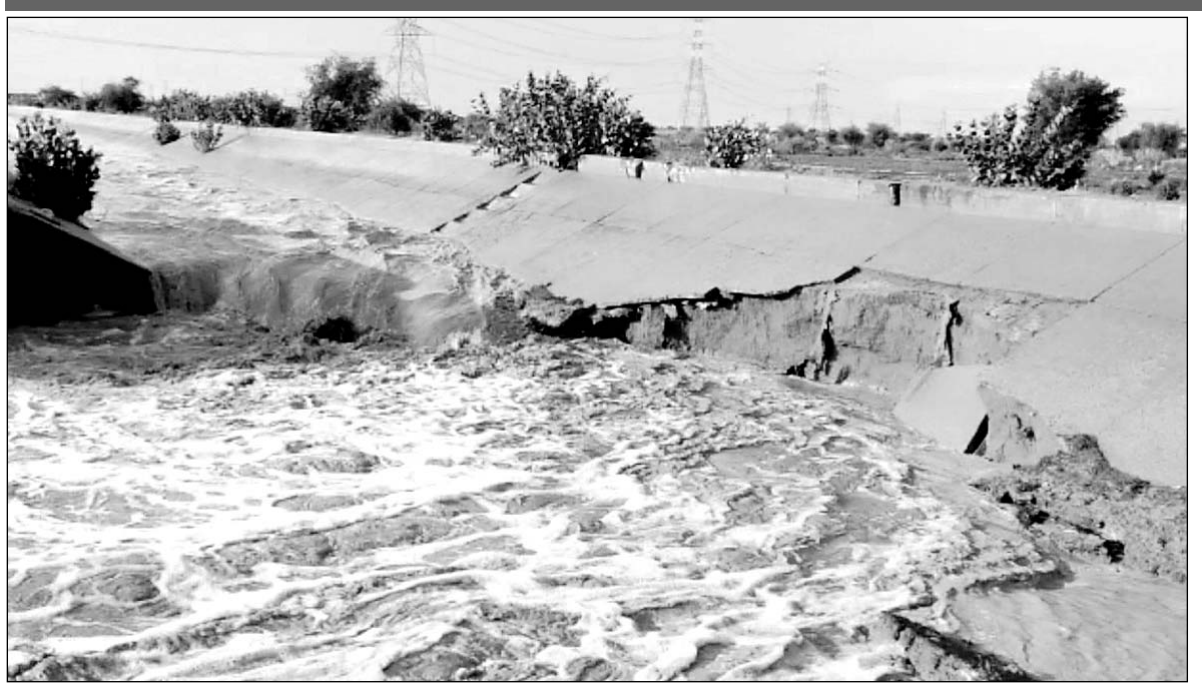

बाप के कालू खां की ढाणी के पास बरसाती नदी में सड़क बह गई।

- बाप क्षेत्र में आए तूफान ने काफी तबाही मचाई
- काफी संख्या में मवेशी भी मर गए, पक्षी भी बड़ी तादाद में काल कलवित हुए

बाप, (निसं)। बाप क्षेत्र में रविवार को दोपहर बाद आए तूफान ने काफी तबाही मचाई है। जगह-जगह पेड़ व विद्युत पोल गिरे पड़े हैं। ढाणियों व खेतों में बने छोटे-छोटे छप्पर में एक भी सही नहीं बचा। मवेशी भी काफी संख्या में मर गए है। पेड़ों पर शरण लिए पक्षी भी बड़ी तादाद में काल कलवित हुए हैं। गांवों में बिजली गुल है। जिससे लोगों की परेशानी दोहरी हो गई है। डिस्कॉम की टीमें बिजली तंत्र को दुरस्त करने में जुटी हुई है। तूफान का असर समूचे बाप क्षेत्र में था। लेकिन सोमवार सुबह जो तस्वीरें सामने आई उसमें राणेरी, सोनलपुरा, नूरे की भूर्ज व इनके आसपास के क्षेत्र में सबसे अधिक तबाही नजर आई। भारी बरसात से गांवों की सड़कें पूरी तरह से पानी में बह गई। 3 से 4 वाहन भी बह गये, लेकिन वाहनों में सवार लोग बाल बच गए। वहीं बरसात से गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट केनाल भी तीन जगह से टूट गई। इस नहर में अभी पानी नहीं था। बरसाती नदी का पानी इसमें आने से यह नहर टूटी है।

नूरे की भूर्ज सरपंच प्रतिनिधि मोहम्मद सलाम ने बताया कि रविवार दोपहर में तूफानी बरसात के बाद रात आठ बजे बरसाती नदी आ गई। यह नदी जैमला, शेखासर, अखाधना, राणेरी होते हुए नूरे की भूर्ज होते हुए आगे निकली। सोमवार दोपहर तक पानी बह रहा था। 50 मीटर चौड़ी व 10 फिट गहराई में चली नदी में कालू खां की ढाणी सड़क मार्ग बह गया। इसके अलावा कालू की ढाणी से कानासर व कालू खां की ढाणी से नुरे की भर्ज सड़क मार्ग भी क्षतिग्रस्त हो गया।

मोहम्मद सलाम ने बताया कि रात 11 बजे कालू खां की ढाणी के पास एक कैंपर व स्वीफ्ट कार बह गई थी। सूचना पर वह गांव से चार-पांच लोगों के साथ रस्सा लेकर मौके पर पहुंचे। उसमें सवार लोग तो बाहर आ गए, लेकिन वाहनों को सुबह निकाला गया। बाप पुलिस को भी उसी समय इत्तला दी थी। सिनावड़ी नाडी के पास कच्चे रास्ते में भी एक कार फंस गई थी। रात भर उसके उपर से पानी बहता रहा। उसे भी सुबह बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला। कालू खां की ढाणी निवासी मुख्तियार अली ने बताया कि गुरू जम्भेश्वर लिफ्ट कैनाल कालू खां की ढाणी गांव के पास, खाखुरी के पास, कालू खां की ढाणी चौराहा के पास टूट गई। कई छोटे माइनर भी टूट कर बह गए है। सोलनपुरा सरपंच भंवरलाल खिलेरी ने बताया कि राणेरी से अमरपुरा, मोडकिया गांव की सड़क, रामपुरा से राणेरी, अमरापुरा से राणेरी सडक मार्ग बरसाती नदी बहने से क्षतिग्रस्त हो गया है। गांवों की सड़के टूटने से आवागमन बाधित हो गया है।

छह परिवार रात भर पानी से घिरे रहे :- मोहम्मद सलाम ने बताया कि नदी के बहाव में गांव में स्थित मदरसे की चार दीवार ढह गई। इसके अलावा 4 मेघवालों की ढाणी तथा दो लोहारों की ढाणी पानी से घिर गई थी। ढाणियों के लोग रात भर उसमें फंसे रहे। पानी उतरने पर वे बाहर आए।

एसडीएम ने किया प्रभावित क्षेत्र का दौरा :- बाप उपखंड अधिकारी मांगीलाल ने सोमवार को प्रभावित गांवो का दौरा कर हालातों का जायजा लिया। उपखंड अधिकारी ने टूटी हुई नहर का सरपंच ग्राम पंचायत नूरे की भुर्ज प्रतिनिधि एवं ग्रामीणों के साथ मौका निरीक्षण किया। एसडीएम ने नहर की मरम्मत एवं कानासर से अजेरी की तरफ क्षतिग्रस्त सडक की मरम्मत के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये हैं। एसडीएम जब निरीक्षण करने पहुंचे थे तब भी क्षतिग्रस्त नहर से पूरा पानी खेतों व घरों से होता हुआ तीव्र वेग से चल रहा है।

आज भी 13 गांव 80 ढाणियां रहेंगी अंधेरे में :- डिस्कॉम की टीम विभिन्न गांवों में विद्युत पोल लगाने के साथ अनोप नगर के 33/11 केवी ग्रिड सब स्टेशन को दुबारा खड़ा करने में जुट गई थी। रविवार रात को बाप सब डिविजन में कुल 40 गांवों में से 28 गांवों व इनके आसपास की ढाणियों की बिजली सप्लाई बंद थी। कनिष्ठ अभियंता महीराम ने बताया कि शाम तक 15 गांवों की बिजली सप्लाई शुरू कर दी जाएगी। इसके बाद भी 13 गांव 80 ढाणियों में सोमवार रात भी तूफान की वजह से ब्लैक आउट रहेगा। हालांकि मौसम विभाग की चेतावनी लगातार जारी है, लेकिन सोमवार को मौसम साफ रहने पर लोगों ने राहत की सांस ली।

'गोलीकांड' के दोषियों की गिरफ्तारी की मांग

19 मई को एक जने के साथ हुए गोलीकांड को लेकर आक्रोश

शीतलामाता गोलीकांड के अभियुक्तों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन किया।

चाकसू, (निसं)। गत दिनों शीतला माता के टोंक रोड पर एक व्यक्ति के साथ हुए गोलीकांड को लेकर क्षेत्र में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। गोली कांड के दोषियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सोमवार को गुर्जर समाज ने सर्व समाज के सहयोग से चाकसू पुलिस थाने के सामने धरना प्रदर्शन कर एसीपी संध्या यादव, चाकसू थाना इंचार्ज भूरी सिंह, सदर एवं शिवदासपुरा थाना इंचार्ज को ज्ञापन सौंपा है और ज्ञापन में शीघ्र दोषियों की गिरफ्तारी नहीं होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी दी है।

उल्लेखनीय है कि गत 19 मई को शीतला माता बस स्टैंड पर उपखंड क्षेत्र के चौसला गांव निवासी सियाराम गुर्जर पर अज्ञात बदमाशों ने फायरिंग कर घायल कर दिया था जिसका मामला चाकसू पुलिस थाने में दर्ज है। मामले में पीड़ित सियाराम गुर्जर के परिजन सहित अन्य लोगों ने बताया कि घटनास्थल पर कैमरे लगे हुए थे जिसमें अभियुक्तों के चेहरे साफ नजर आ रहे हैं लेकिन पुलिस आज तक भी उन्हें गिरफ्तार नहीं कर पाई जिस कारण ऐसी घटनाओं से शांत वातावरण के क्षेत्र में दहशत एवं भय का माहौल बना हुआ है। इसलिए सर्व समाज के सहयोग से पुलिस थाने के सामने धरना प्रदर्शन कर इस घटना से जुड़े बदमाशों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की गई है।

मामले में पुलिस ने 7 दिनों में अभियुक्तों की गिरफ्तारी का आश्वासन देकर धरना समाप्त करवा दिया है। दौरान सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस थाने के आसपास के क्षेत्र में पुलिस जाब्ता तैनात रहा। इस दौरान भुणाराम गुर्जर, प्रभु नारायण गुर्जर, प्रहलाद बैरवा, हीरालाल, आशाराम, रंगलाल, पीयूष, अजय राजाराम, रामरतन धर्मसिंह मीणा, बद्री नारायण चौधरी सहित समाज के लोग मौजूद रहे।

आंधी एवं बारिश से किसानों के सोलर सेट तबाह

मंडार के निकट हड़मतिया ग्राम में आंधी से सोलर सेट तबाह हो गया।

- किसानों को आर्थिक रूप से काफी नुकसान पहुंचा
- प्रशासन एवं सरकार मुआवजे की मांग की

मंडार, (निसं)। सिरोही जिले में मंडार के निकटवर्ती गांव हडमतिया में रविवार रात्रि को आए भयंकर आंधी-तूफान से किसानों के कृषि कुएं पर लगे हुए सोलर लाइट के सेट हवा में टूट कर बिखर गए।

जिससें किसानों को आर्थिक रूप से काफी नुकसान पहुंचा है। किसान सोलर सेट के सुरेंद्र कुंवर, मोहन कुंवर, लवजीराम, धोकाराम कलापुरा ने बताया कि हमारे कृषि कुएं पर सोलर ऊर्जा के सेट लगे हुए थे जो तेज आंधी एवं बारिश की वजह से बर्बाद हो गए एवं हमें आर्थिक रूप से काफी नुकसान पहुंचा है।

अगर प्रशासन एवं सरकार की ओर से किसी तरह की आर्थिक रूप से मदद मिलती है और मुआवजा दिया जाता है तो हमें आर्थिक रूप से थोडा संबल प्राप्त होगा।

मंडार में तेज अंधड़ ने ली एक अधेड़ की जान :- सिरोही जिले में मंडार के निकटवर्ती गांव रोहुआ में तेज आंधी एवं तूफान की वजह से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई एवं एक पुरुष एवं अन्य महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। जानकारी के अनुसार रोहुआ निवासी आशु राम भील (55) अपने घर से कोई वस्तु खरीदने के लिए दुकान पर गया था वापस घर लौटते समय घर के पास ही टीनशेड की चपेट में आ गया। तेज आंधी होने की वजह से टीन शेड पूरा उखडकर आसू राम के ऊपर जा गिरा जिससे आसू राम की मौके पर ही मृत्यु हो गई व अन्य एक महिला लसु देवी (62) भी गंभीर रूप से घायल हो गई एवं एक युवक चंदूलाल (25)घायल हो गया।

दोनों घायलों को उपचार के लिए गुजरात के अहमदाबाद रैफर किया गया एवं मृतक अधेड़ आशु राम भील के शव को मंडार के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की मोर्चरी में रखवाया। सोमवार सुबह भील समाज के लोग एवं सरपंच प्रतिनिधि अर्जुन सिंह देवल अस्पताल पहुंचे जहां डॉक्टरों ने शव का पोस्टमार्टम कर शव को परिजनों को सुपुर्द किया।

ब्रह्मा मंदिर में लिफ्ट निर्माण का शिलान्यास किया

ब्रह्मा मंदिर में लिफ्ट निर्माण कार्य शुरु किया।

- ब्रह्मा मंदिर में जल्द ही श्रद्धालु लिफ्ट की सहायता से दर्शन लाभ उठायेंगे

पुष्कर, (निसं)। विश्व विख्यात ब्रह्मा मंदिर में जल्द ही श्रद्धालु लिफ्ट की सहायता से ब्रह्माजी के दर्शन करने का लाभ उठायेंगे। इसके लिए मंदिर में लगने वाली आधुनिक तकनीक की दो लिफ्ट का शिलान्यास सोमवार को अभिजीत मुहूर्त में निबार्क पीठाधीश्वर श्यामशरण देवाचार्य श्रीजी महाराज ने किया। लिफ्ट निर्माण प्रोजेक्ट में एमपी मानसिंगका चैरिटीज मुंबई की ओर से एक करोड़ से अधिक का खर्चा वहन किया जायेगा। शिलान्यास के साथ ही सोमवार से लिफ्ट लगाने का कार्य शुरू हो गया तथा 6 महिने में लिफ्ट निर्माण पूर्ण तैयार हो जायेगा।

चैरिटीज के वयोवृद्ध अध्यक्ष महावीर प्रसाद मानसिंगका ने बताया कि ब्रह्मा मंदिर के पीछे स्थित गौशाला गेट के पास दो आधुनिक तकनीक की लिफ्ट लगाई जाएगी तथा बिजली बंद होने के बावजूद यात्री रास्तें में नहीं अटक सकेंगे। लिफ्ट का न केवल दिव्यांग व वृद्धजन बल्कि सभी यात्री निशुल्क उपयोग कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि दोनों लिफ्ट में एक मिनट में 100 श्रद्धालु मंदिर के दर्शन के लिए आ-जा सकेंगे। लिफ्ट से चढ ने तथा उतरने के लिए वन-वे की व्यवस्था रहेगी। लिफ्ट से मंदिर तक पहुंचने तथा पुन: नीचे उतरने के लिए दो अलग-अलग रास्तें होंगे। लिफ्ट परिसर में महिला-पुरूष के लिए अलग-अलग वॉश रूम का भी निर्माण किया जाएगा। बताया कि मंदिर के पुरामहत्व को ध्यान में रखते हुए दिल्ली के आर्किटेक्ट ने लिफ्ट का प्रोजेक्ट तैयार किया है। नए स्ट्रेक्चर निर्माण से मंदिर के पुरानी इमरात में किसी प्रकार का रद्दोबदल नहीं किया जाएगा।

शिलान्यास कार्यक्रम में कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ की। इसके अलावा कार्यक्रम में अस्थायी मंदिर प्रबंधन कमेटी के अध्यक्ष एवं जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित, सांसद भागीरथ चौधरी, विधायक सुरेश सिंह रावत, पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री नसीम अख्तर इंसाफ पूर्व विधायक बाहेती डॉ. राजकुमार जयपाल ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष सुदर्शन पालिकाध्यक्ष कमल पाठक, उपखंड अधिकारी निखिल कुमार पोद्दार आदि ने विशिष्ठ अतिथि के रूप में शिरकत की।

पी.एम. की सभा में लोगों को आमंत्रण के लिए रथ रवाना

प्रधानमंत्री की 31 मई को कायड विश्राम स्थली में होने वाली जनसभा को लेकर तैयारियां तेज

अजमेर में जनप्रतिनिधियों ने रथों को रवाना किया।

अजमेर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आगामी 31 मई को कायड विश्राम स्थली में होने वाली विशाल जनसभा को लेकर भाजपा ने अपनी तैयारियां तेज कर दी है। सोमवार को केंद्र की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार व आम सभा के आमंत्रण हर जन तक पहुंचाने के लिए रथों को रवाना किया। भाजपा संगठन महामंत्री चंदशेखर, नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, उत्तर विधायक वासुदेव देवनानी,दक्षिण विधायिका अनिता भदेल, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रसन्न चन्द मेहता, प्रदेश मंत्री अशोक सैनी, वंदना नोगिया, भगवती सारस्वत, रमेश सोनी, अरविन्द यादव, रमेश सोनी, वीरमदेव सिंह,दे`वी शंकर भूतड़ा, डॉ.भोला सिंह, मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष कैलाश मेघवाल आदि उपस्थित रहे।

सोमवार को भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा राजस्थान की प्रदेश कार्यसमिति बैठक हुई। जिसमे भाजपा संगठन महामंत्री चंदशेखर, नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, दक्षिण विधायिका अनिता भदेल, भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ.भोला सिंह, मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष कैलाश मेघवाल, महामंत्री मुकेश गर्ग, रामकिशन वर्मा ने बैठक को संबोधित किया।

इस अवसर पर ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष संजय चौहान, चिराग चौधरी, अजय नरूका, अंचित परिहार, कैलाश कच्छावा, गोविंद कुमार, दुर्गालाल, रितेश, अनुभव, कमलेश, उमेश, विमल, रमेश, रामलाल गुर्जर, जगदीश गुर्जर आदि उपस्थित रहे। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु शर्मा के नेतृत्व में तीर्थगुरु पुष्कर के घाटों पर स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत श्रमदान किया गया।

मोदी 31 मई को पुष्कर आएंगे

पुष्कर, (निसं)। 31 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पुष्कर यात्रा को लेकर प्रशासन हाई अलर्ट हो गया है। तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही है। पुष्कर के परिक्रमा मार्ग की सड़क के पेचवर्क किया गया है। सुरक्षा एजेंसियां पूरी तरह चाक-चौबंद है। सोमवार को संभागीय आयुक्त सी आर मीणा, आईजी रेंज रूपेंद्र सिंह, जिला कलेक्टर भारती दीक्षित, एसपी चूनाराम जाट सहित पुलिस और प्रशासन के आला अधिकारियों ने व्यवस्थाओं का जायजा लिया। हेलीकॉप्टर के जरिए रिहर्सल की गई। सावित्री की तलहटी पर प्रधानमंत्री मोदी के हेलीकॉप्टर के लिए अस्थाई हेलीपैड बनाया जा रहा है।

मादा हिरण को श्वानों से बचाया

धोरीमन्ना, (निसं)। बाड़मेर जिले में धोरीमन्ना के पास निम्बली नाडी गांव में एक गर्भवती हिरणी को श्वानों के चुगंल से बचाकर वन विभाग की टीम को सुपुर्द किया। वन्यजीव प्रेमी शिक्षक जगदीश प्रसाद विश्नोई ने जानकारी दी कि निम्बली नाडी गांव में तीन-चार श्वानों ने हिरणों का पीछा किया तो बाकी हिरण भाग गये। लेकिन एक मादा गर्भवती हिरण को अपने चंगुल मे फंसा लिया। तब हिरण आवाज सुनकर राह जा रहे वरिष्ठ अध्यापक मोहनलाल तरड़, चुनाराम तरड़ व विद्यार्थी कैलाश बेनीवाल आवाज की तरफ भागे तो देखा कि तीन-चार कुत्ते हिरण को मारने की कोशिश कर रहे थे।

जेल से चार मोबाइल व सिम बरामद

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर केन्द्रीय कारागृह के प्रहरियों ने तलाशी अभियान के दौरान जेल से चार मोबाईल व सीम बेटरी बरामद की।

जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा के निर्देश पर पुलिस अधिकारियों के नेतृत्व में गठित टीमों ने गत दिनों उदयपुर कारागृह का औचक निरीक्षण कर मोबाईल व मादक पदार्थ बरामद किया था। इस मामले में पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया था। उक्त अभियान के बाद सक्रिय जेल प्रशासन ने भी अपना तलाशी अभियान जारी रखा। इस अभियान के दौरान जेल प्रहरी कोललायाणा भानपुर कला थाना जगवारामगढ जयपुर हॉल जेलप्रहरी केन्द्रीयकारागृह उदयपुर राजेन्द्र कुमार गुर्जर पुत्र बाबूलाल गुर्जर ने तलाशी अभियान के दौरान कारागृह में बंदी सुनिल उर्फ बंटी पुत्र शंभूलाल हरिजन निवासी गांधीनगर मस्तानबाबा निवासी के कब्जे से एक मोबाईल मय बेटरी व सीम बरामद की। इसी तरह चिमनलाल पुत्र शंकरलाल नायक धरिदेसर जिला पिलीबंगा हनुमानगढ हाल जेल प्रहरी ने बेरिक नंबर 12 के पास स्थित शौचालय के बाहर से लावारिस मोबाईल बरामद किया। इसी तरह जेल प्रहरी चतुराराम पुत्र बाबुलालल जाट ने गत दिनों तलाशी अभियान के दौरान दंण्डित बंदी संतोष पुत्र चुना कालबेलिया निवासी कपासल चित्तोडगढ के कब्जे से एक मोबाईल बरामद किया।

उदयपुर-जयसमंद तक ट्रैक का विद्युतीकरण, इलेक्ट्रिक इंजन चलाकर ली ट्रायल

जयसमंद-खारवा 38 किमी रेल्वे ट्रैक पर इलेक्ट्रिक इंजन का हुआ ट्रायल

उदयपुर-हिम्मतनगर रेलवे ट्रैक के हो रहे विद्युतीकरण कार्य के तहत 68 किमी इलेक्ट्रिफिकेशन का काम पूरा होने पर खारवा-जयसमंद ट्रैक ने इंजन दौड़ाकर स्पीड ट्रायल ली गई।

- अब तक उदयपुर से जयसमंद तक 65 किमी ट्रैक का विद्युतीकरण पूरा
- डूंगरपुर तक इलेक्ट्रिक पिलर व कॉपर वायरिंग का काम भी पूरा हुआ

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर-अहमदाबाद (असारवा) ब्रॉडगेज की शुरुआत के बाद से ही यह रुट दक्षिण से जुड़ने की बाट जोह रहे हैं। जब तक तक रुट पर इलेक्ट्रिफिकेशन का काम पूरा नहीं होता तब तक यह ट्रैक दक्षिण से नहीं जुड़ पायेगा, लेकिन अब कड़ियां जुड़ना शुरू हो गई है और रेलवे द्वारा कदम बढ़ाते हुए इस रूट पर उदयपुर से जयसमन्द तक 65 किमी ट्रैक पर विद्युतीकरण का काम पूरा हो गया है। रेलवे अधिकारियों की मौजूदगी में खारवा-जयसमन्द 38 किमी ट्रैक पर इलेक्ट्रिक इंजन चलाकर स्पीड ट्रायल ली गई। 65 किमी तक पूरे हुए ईलेक्ट्रिफिकेशन के इस काम में उदयपुर-खारवा 27 किमी ट्रैक का काम व सीआरएस पहले पूरा हो चुका है। ऐसे में इंजन ट्रायल के बाद अब खारवा-जयसमंद के इस 38 किमी ट्रैक का सीआरएस निरीक्षण भी जल्द पूरा होगा।

वहीं जयसमन्द से आगे इस ट्रैक पर डूंगरपुर तक इलेक्ट्रिक पिलर व कॉपर वायरिकरण का काम भी पूरा हो चुका है। बताया जा रहा है कि कुछ माह में डूंगरपुर तक काम पूरा हो जाएगा और वर्ष 2024 तक हम विद्युतीकरण काम पूरा होने बाद दक्षिण से जुड़ जाएंगे।

इलेक्ट्रिक इंजन की स्पीड ट्रायल के दौरान रेल इंडिया टेक्निकल इकॉनोमी सर्विसेज के उच्च अधिकारी के. वेंकटेश, रणजीत मेहता, अरविंद कुमार, यू.वी. राव, नरसिम्हा, विजय अहरिवाल, विनोद कुमार, अरुण कुमार व लाइजन ऑफिसर (रेल्वे इलेक्ट्रिफिकेशन) सुगनचंद वर्मा मौजूद रहे। ज्ञातव्य है कि इस रूट पर उदयपुर-हिम्मतनगर तक करीब 210 किमी ट्रैक पर इलेक्ट्रिफिकेशन का काम होना है जिसमें से डूंगरपुर तक कदम बढ़ चुके हैं।

संक्षिप्त

भगवान महेश की शोभायात्रा निकाली

मालपुरा, (निसं)। माहेश्वरी समाज मालपुरा द्वारा सोमवार को महेश जयंती उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी। आजाद चौक लक्ष्मीनाथ मंदिर से शुरू हुई भगवान महेश की शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होकर गुजरी। जगह-जगह पुष्पवर्षा से शोभायात्रा का स्वागत किया गया। महेश सेवा सदन पहुंची शोभायात्रा तो भगवान महेश की झांकी की आरती कर दिनभर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। माहेश्वरी समाज बंधुओं ने अपने प्रतिष्ठान बंद रख महेश जयंती मनाई।

कोचिंग संस्थानों का निरीक्षण किया

दूदू, (निसं)। कस्बे में संचालित विभिन्न कोचिंग संस्थानों का जिला कलेक्टर जयपुर के आदेशानुसार अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मोहन लाल गंगवाल द्वारा निरीक्षण किया। इस दौरान संस्थानों में पायी गई कमियों को शीघ्र सुधार करने की चेतावनी दी गई। संस्थानों में छात्र-छात्राओं के लिए मूलभूत सुविधाओं एवं सीसीटीवी कैमरों, सुरक्षा गार्ड, आने जाने के लिए रजिस्टर में पृविष्टि करने के निर्देश दिये।

विकास नागर प्रदेश सचिव बने

दूदू (नि.स.)। प्रदेश कांगेस कमेटी के अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा द्वारा प्रदेश सचिव पद पर विकास नागर को मनोनित किया है। नागर की नियुक्ति पर कार्यकर्ताओं ने खुशी जाहिर कर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं प्रभारी सुखविंदर रधांवा का आभार प्रकट किया है।

तूफान के नुकसान सर्वे किया

दूदू, (निसं)। ग्राम पंचायत दूदू में गत दो दिनों पूर्व आये तूफान से हुए नुकसान का सर्वे घर-घर जाकर किया गया। इस दौरान ग्राम विकास अधिकारी रामेश्वर नावरिया किरण शर्मा, पटवारी हंसराज चौधरा ने नुकसान का जायजा लेकर रिपोर्ट तैयार कर अधिकारीयों को भेजी।

सांभर में दो मकानों के मध्य गिरे पेड़ से हादसे की आशंका

सांभरझील, (निसं)। यहां के वार्ड नंबर 22 स्थित चौधरी की गली में विगत दिनों आए तूफान से धराशाही हुए पीपल के विशाल वृक्ष को 4 दिन बाद भी पालिका प्रशासन इसे हटाने के लिए कोई कवायद नहीं कर रहा है।

दोनों मकानों के मध्य पेड़ फंसे होने से रास्ता जाम पड़ा है तो दूसरी ओर से लोगों को खतरा बना हुआ है।

- विगत दिनों आए तूफान से पीपल का पेड़ धराशाही हो गया था

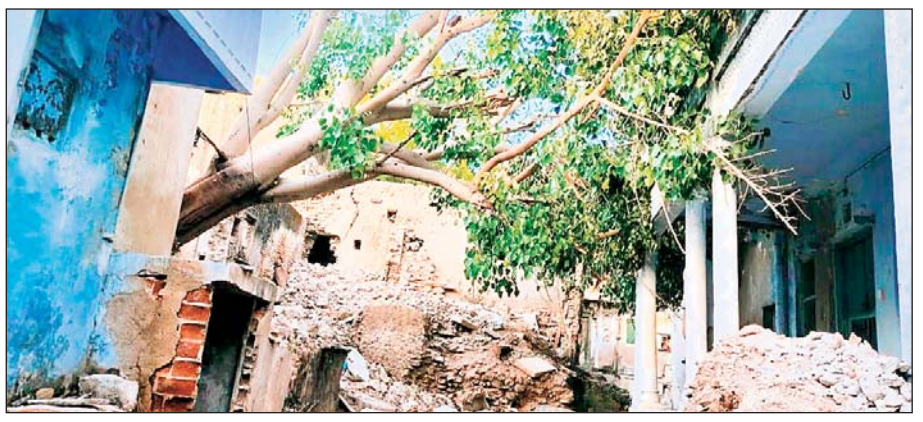

सांभर के वार्ड 22 में दो मकानों के बीच गिरे पेड़ से लोगों को खतरा बना हुआ है।

वार्ड पार्षद ज्योति कुमावत ने बताया कि इस संबंध में पालिका प्रशासन को इसे हटाने के लिए उसी रोज कह दिया गया था लेकिन अभी तक इस पर कोई गौर नहीं किया जा रहा है। पार्षद प्रतिनिधि टीकमचंद कुमावत में बताया कि सोमवार को पालिका कर्मचारियों द्वारा इसे हटवाने के लिए मौका मुआयना कर औपचारिकता की गई है और जिस प्रकार से कार्य को अंजाम दिए जाने के लिए कहा जा रहा है उस हिसाब से मामले के निस्तारण में निकट भविष्य में कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही है।

आज मौका निरीक्षण के दौरान पालिका के विनोद पारीक, आशीष कुमार के अलावा मोहल्ले के टीकम कुमावत, पूर्व पार्षद सिराजुद्दीन मंसूरी, पूर्व पार्षद सदीक मोहम्मद, दीपचंद सेन मौके पर उपस्थित रहे।

श्रीपरशुराम सर्किल का लोकार्पण

अलवर, (निसं)। शहर विधायक संजय शर्मा ने श्री परशुराम सर्किल पर अपने विधायक निधि कोष से (राशि 10.90 लाख) सौंदर्यकरण कराने के बाद आमजन को समर्पित किया।

विधायक निधि कोष से स्वीकृत राशि से उक्त सर्किल पर कार्यकारी एजेंसी नगर विकास न्यास द्वारा पूरे सर्किल पर ग्रेनाइट लगाने का कार्य, स्टील रेलिंग लगाने एवं बाहर इंटरलॉकिंग टाइल्स लगाने के साथ साथ लाइट लगवाने आदि का कार्य कराया गया। आज लोकार्पण के अवसर पर शहर विधायक संजय शर्मा द्वारा अध्यक्ष जिला ब्राह्मण महासभा मोहन स्वरूप भारद्वाज से अनावरण पट्टिका से पर्दा हटवा कर लोकार्पण करवाया गया। इससे पूर्व ब्राह्मण समाज के प्रबुद्ध जनों व क्षेत्रीय पार्षदों ने शहर विधायक संजय शर्मा का माल्यार्पण कर व साफा पहनाकर, दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया व उपस्थित नगर परिषद सभापति घनश्याम गुर्जर क्षेत्रीय पार्षद रमाकांत यादव, सुरेश वाल्मिकी, लोचन यादव, रमन सैनी मनोज चौहान ओमप्रकाश शर्मा सहित सभी का माल्यार्पण कर व साफा पहनाकर स्वागत किया गया।

सार-समाचार

चोरी के आरोप में दो जने पकड़े

फागी, (निसं)। क्षेत्र में इण्डियन आयल पाइप लाइन की रेकी कर तेल चोरी के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। फागी थानाधिकारी भंवर लाल वैश्णव ने बताया कि इण्डियन आयल पाइप लाइन चाकसू के सुपरवाइजर राजेन्द्र मीणा ने 23 मई को मामला दर्ज कराते हुए बताया कि नियमित रूप से गश्त करते हुए नीमेडा से मेंदवास की तरफ जा रहा था रास्ते में पाइप लाइन के पास सफेद गाड़ी खड़ी थी एवं पाइप लाइन के पास खुदाई करते हुए दिखाई दिये और गश्त को देखकर गाडी में बैठकर फरार हो गये । थाना पुलिस ने अभियोग दर्ज कर गठित टीम ने कार्यवाही करते हुए राजूसिंह पुत्र अमरसिंह जाट निवासी थेरावर कम्हेर भरतपुर एवं जगवीर पुत्र मंषीलाल अग्रवाल निवासी थेरावर कुम्हेर भरतपुर को गिरफ्तार कर कब्जे से एक कार, छह मोबाइल व मिट्टी खोदने के औजार जप्त किये हैं। घटना में शामिल गैग के अन्य सदस्यों एवं वारदात के सम्बन्ध में पुलिस का अनुसंधान जारी है।

भौमिया बाबा का मेला लगा

नारायणपुर, (निसं)। उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत अजबपुरा में स्थित मुक्कड़ों की ढाणी में सोमवार को बड़ी धूमधाम से भोमिया बाबा का मेला आयोजित हुआ। मेले के अवसर पर भोमिया बाबा के मंदिर में हनुमान जी महाराज की मूर्ति की स्थापना की गई और 111 महिलाओं द्वारा कलश यात्रा निकाली गई । मेले में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ.रोहिताश शर्मा सम्मलित हुए। इस दौरान पूर्व मंत्री ने भोमिया बाबा के धोक देकर क्षेत्र में शांति और खुशहाली की कामना की। इस मौके पर मेला कमेटी द्वारा मुख्य अतिथि डॉ.रोहिताश शर्मा का साफा और माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। पूर्व मंत्री ने मेले में उधोग मंत्री शकुंतला रावत पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए कहा कि आज सड़क और जल जीवन मिशन योजना में करोड़ो रूपये का घोटाला हैं और अगर मैं झूठ बोल रहा हूं तो मेरे खिलाफ आप मुकदमा दर्ज कराओ। आज मंत्री की सह से भूमाफियाओं द्वारा सरकारी जमीनों पर कब्जे किये जा रहे हैं। मेले में आयोजित भंडारे में आसपास के श्रद्धालुओं ने पंगत प्रसादी ग्रहण की । वही क्षेत्रीय कलाकार इन्द्राज महासी और जगराम महासी द्वारा दिनभर भजनों की प्रस्तुती दी गई । इस अवसर पर अजबपुरा सरपंच प्रियंका नरुका, पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि बद्री प्रसाद गुर्जर, बाबूलाल मुक्क्ड, लक्ष्मण मुक्क्ड, हनुमान सैनी, राजेश गुर्जर सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे ।

'शाहपुरा फ्लाई ओवर का शेष कार्य इसी सप्ताह प्रारम्भ होगा'

जयपुर, (निसं)। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ के प्रयासों से शाहपुरा फ्लाई ओवर का शेष कार्य प्रारम्भ करने के लिए विभाग द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है। इस सप्ताह में ही निर्माण कार्य प्रारम्भ हो जाऐगा, 17.55 करोड़ रुपये से फ्लाई ओवर का कार्य पूर्ण होगा। शाहपुरा फ्लाई ओवर का शेष कार्य प्रारम्भ करवाने के लिए कर्नल राज्यवर्धन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का आभार व्यक्त किया है। इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन ने कहा अधूरे फ्लाई ओवर के चलते अब तक यहां पर सड़क दुर्घटनाओं में कई लोग जान गंवा चुके हैं। निर्माण पूर्ण होने के बाद न केवल दुर्घटनाओं पर रोक लगेगी बल्कि वाहन चालकों की यात्रा भी सुगम होगी। गौरतलब है कि कर्नल राज्यवर्धन 2014 से लगातार राष्ट्रीय राजमार्गा की विसंगतियों को दूर करने के लिए प्रयासरत रहे हैं।

विद्यालय परिणाम रहा शत-प्रतिशत का

फुलेरा, (निसं)। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम काचरोदा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का उच्च माध्यमिक परीक्षा 2023 का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय के प्रधानाचार्य मदन लाल पडियार ने बताया कि विद्यालय के छात्र नितिन कुमावत पुत्र कमलेश कुमावत निवासी बड़ की ढाणी ने 92.20 प्रतिशत अंक हासिल करके ग्राम में प्रथम स्थान हासिल किया। इसी क्रम में छात्र नितिन ने बताया कि आत्मविश्वास के साथ मेहनत करने वालों को सफलता अवश्य मिलती है। हमारे शिक्षकों के रूप में हमे भगवान मिले जिन्होंने हमें हमेशा सटीक मार्ग-दर्शन प्रदान किया। वहीं आगे बताया कि मैं भविष्य में आईएएस बनकर राष्ट्र की सेवा करना चाहता हुं। प्रधानाचार्य पडियार ने कहा कि उच्च माध्यमिक परीक्षा में कुल 23 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। जिनमें से 9 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी, तो 5 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी और 9 विद्यार्थी तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए है।

गोदाम का उद्घाटन

पावटा, (निसं)। निकटवर्ती तेवडी, नवरंगपुरा में स्व. मूल चंद गुर्जर पूर्व केवीएसएस शाहपुरा के सानिध्य में निर्मित ग्राम सेवा सहकारी समिति लिमिटेड के नवीन गोदाम भवन का विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक इंद्राज गुर्जर के मुख्य आतिथ्य व प्रधान बूंदी देवी की अध्यक्षता एवं अध्यक्ष हंसराज गुर्जर, उपाध्यक्ष रामगोपाल यादव, मदन लाल गुर्जर, केवीएसएस शाहपुरा अध्यक्ष प्रभुदयाल घोसल्या, डॉ. रमा सूद के विशिष्ट आतिथ्य में गोदाम भवन का फीता काटकर उद्घाटन किया।

भाजपा नेता को मातृत्व शोक

श्रीमाधोपुर, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम मऊ में भाजपा नेता, पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा किसान मोर्चा सीकर व पूर्व प्रदेश कार्यालय मंत्री श्याम चौधरी की माताजी झिनकारी देवी का देहांत 26 मई को हो गया था। जिनकी बैठक उनके निवास स्थान ढाणी नाडा की मऊ में नियमित बैठक में पूर्व केन्द्रीय मंत्री व पूर्व सांसद सुभाष महरिया ने पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

तंबाकू निषेध दिवस को लेकर निर्देश

राजगढ़, (निसं)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस को लेकर तंबाकू निषेध सप्ताह के तहत खंड अधिकारी ओमप्रकाश मीणा ने जनचेतना जागृत करने एवं कानून की पालना नहीं करने वालों के खिलाफ जुर्माने के निर्देश दिए।

- कानून की पालना नहीं करने वालों के खिलाफ जुर्माने के निर्देश दिए

उन्होंने प्रेस वार्ता के दौरान तंबाकू उत्पादों का प्रयोग कर नशा करने वाले लोगों को जागरूक करने एवं इसकी प्रभावी रोकथाम एवं 40 दिवस में की गई कार्रवाई पर प्रकाश डाला। कोटपा एक्ट 2003 अधिनियम के तहत चालान एवं अन्य कानून के बारे में सभी को विस्तृत जानकारी दी गयी। अधिकतम 200 का चालान काटने कि कार्यवाही की जा सकती है धारा 6 ब के अंतर्गत शैक्षिणक संस्थान के आसपास 100 गज के दायरे में धूम्रपान बिक्री निषेद्ध एवं 6 अ के अंतर्गत वह स्थान जहां सिगरेट एवं तंबाकू उत्पाद की बिक्री की जाती है उन स्थान के मालिकों को प्रदर्शन बोर्ड लगाना होगा साथ ही जिस पर चेतावनी लिखी हुई होनी चाहिए इसके अलावा बताया गया कि गत वर्ष ब्लाक राजगढ़ में 1806 चालान अलग-अलग विभागों के द्वारा काटे गए और इस वर्ष में अप्रैल माह तक 69 चालान काट दिए गए हैं। चिकित्सा अधिकारी प्रभारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजगढ़ के द्वारा तंबाकू से बने किसी भी उत्पाद का प्रयोग करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है जिसके दुष्परिणामों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आर एस मीणा , मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामेश्वर दयाल मीणा, चिकित्सा अधिकारी प्रभारी सीएचसी राजगढ़ डॉक्टर रमेश चंद मीणा , ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर निशांत शर्मा व नर्सिंग अधिकारी सुरेंद्र चौधरी उपस्थित रहे ।

विधायक व पालिका अध्यक्ष ने संतों का आशीर्वाद लिया

मालपुरा, (निसं)। श्रीराम सेवा समिति के तत्वावधान में शहर के बाबा लक्ष्मण दास बगीची में चल रहे नवकुण्डीय श्रीराम महायज्ञ में पहुंचे क्षेत्रिय विधायक कन्हैयालाल चौधरी व पालिका अध्यक्ष सोनिया सोनी ने संतों का आशीर्वाद ले हवन यज्ञ में आहुतियां दे विश्व शांति की कामना की।

समिति की ओर से विधायक व पालिका अध्यक्ष का स्वागत सम्मान किया गया। विधायक ने कहा कि संत समाज के मार्गदर्शन से ही आज हिन्दु संस्कृति की परम्पराओं का निर्वहन किया जा रहा है। युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति की परम्पराओं से अवगत करवा पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ने से रोकने की बेहद आवश्यकता है। नवकुण्डीय महायज्ञ में बैठे यजमानों द्वारा घी व शाकल्य की आहुतियां दे विश्व शांति की कामना की गई। समिति के सुरेश विजय, सीताराम डालमियां ने बताया कि विधि-विधान से पूजा अर्चना के पश्चात आज नवकुण्डीय यज्ञ की पूर्णाहुती होगी। संतों की विदाई सहित पंगत प्रसादी का आयोजन होगा। इसी क्रम में कालीहर्डिया गांव में ठाकुरजी की मूर्तिप्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का शुभारम्भ भव्य कलश यात्रा से हुआ। तो घासीपुरा गांव में सीतारामजी महाराज व शिव परिवार मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह आचार्य पंडित रामअवतार शास्त्री व रामसेवक रामदास महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

श्रीराम महायज्ञ में पहुंचे विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने संतों का आशीर्वाद लेकर विश्व शांति की कामना की।

विधायक रामलाल शर्मा कार्यकर्ताओं से हो रहे रूबरू

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। विधानसभा क्षेत्र चौमूं में विधायक रामलाल शर्मा द्वारा चलाए जा रहे मेरा बूथ मेरा सम्मान कार्यक्रम के तहत अब तक 126 बूथों पर जाकर विधायक रामलाल शर्मा ने कार्यकर्ताओं से रूबरू हुए हैं।

- मेरा बूथ मेरा सम्मान कार्यक्रम के तहत अब तक 126 बूथों पर कार्यकर्ताओं का किया सम्मान

भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा पूरी लगन और मेहनत से अपने अपने बूथों पर कार्यक्रम को सफल बनाते हुए अच्छी संख्या लोगों को एकत्रित कर कार्यक्रम का आयोजन करवाया। रविवार को सायंकाल में आयोजित मेरा बूथ मेरा सम्मान कार्यक्रम के अंतर्गत बूथ संख्या 179, 187, 209, 195, 184 और 186 पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौक़े पर विधायक रामलाल शर्मा ने बूथ अध्यक्ष, बूथ एजेंट और रिलीवर को भाजपा की देकर सम्मानित किया। विधायक रामलाल शर्मा ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने पिछले चार वर्षों में युवाओं के साथ बेरोज़गारी भत्ता ओर किसानों के साथ कर्ज़ माफ़ी का झूठा वादा कर सत्ता में आने के बाद प्रदेश में जंगलराज स्थापित कर दिया है, आज प्रदेश की बहन बेटिया सुरक्षित नहीं है, अपराधी बेख़ोफ़ होकर अपराधों को अंजाम देने का काम कर रहे है। उन्होंने 20 जून को आयोजित होने वाली जन आक्रोश सभा में अधिक से अधिक पधारने का आव्हान किया।

इस मौके पर नगर मण्डल अध्यक्ष गजानंद कुमावत, ज़िला उपाध्यक्ष बजरंग लाल सोनी, पूर्व उपाध्यक्ष कालूराम जाट, आलोक जांगिड, बूथ अध्यक्ष मोहन लाल यादव, जे.पी. जाट,त्रिलोक शर्मा, मदन गोरा, सुरेश शर्मा, पार्षद बाबूलाल सेनी, कोशल योगी, विनोद, मुक्तिलाल शर्मा, जितेंद्र सेनी, सुरेश चौधरी आदि लोग उपस्थित रहे।

अंशु कुमारी का नेवी में चयन

श्रीमाधोपुर, (निसं)। एसबीएन पीजी कॉलेज श्रीमाधोपुर की एनसीसी कैडेट अंशु कुमारी पुत्री जय सिंह का अग्निवीर नेवी 2022 -23 की भर्ती में चयन हुआ है। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. एसके जाट ने बताया कि अंशु कुमारी वर्तमान में 3 राज बटालियन एनसीसी का वार्षिक शिविर प्रशिक्षण में हिस्सा ले रही हैं। यह कैडेट 2 जून 2023 को विशाखापट्टनम में नेवी में ट्रेनिंग लेगी महाविद्यालय एनसीसी एएनओ डॉ मुकेश कुमार बल्डवाल एवं सीटीओ सांवर मल चौधरी ने महाविद्यालय एनसीसी कैडेट्स अंशु कुमारी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए खुशी जाहिर की। इस अवसर पर महाविद्यालय निदेशक डॉ मुकेश कुमार, सचिव प्रदीप धायल समस्त महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहे।

स्वस्थ ग्राम अभियान में सेवाएं दी

जयपुर, (निसं)। रोटरी क्लब जयपुर के रोटरी सामुदायिक दल लदाना एवं महात्मा गांधी अस्पताल, सीतापुरा जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम लदाना (फागी) के श्री चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में विशाल निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन रविवार, 28 मई को प्रातः 10 से दोपहर 2 बजे तक किया गया। रोटरी क्लब अध्यक्ष एस के टांक और शिविर चेयरमैन सुमन सोमानी ने बताया कि शिविर का आरंभ णमोकार मंत्र एवं पूजा अर्चना से हुआ। शिविर के दौरान महात्मा गांधी अस्पताल के वरिष्ठ जनरल फिजिशियन डॉ सुचिता वर्मा, जनरल सर्जरी रोग के डॉ पीयूष गुप्ता, हड्डी एवं जोड़ रोग डॉ मोहित, प्रसूति एवं स्त्री रोग की डॉ कोरिना, कान नाक गला रोग की डॉ ज्योति कुमावत ने अपनी सेवाएं दी ।

शिविर के दौरान ईसीजी, ब्लड प्रेशर,ब्लड शुगर की जांच कर निशुल्क दवा भी प्रदान की गई। अस्पताल के वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी ओ.पी.भवण ने बताया शिविर के चयनित रोगियों का महात्मा गांधी अस्पताल में उपचार किया जाएगा। अस्पताल की ओर से सामाजिक सेवाएं अनवरत जारी रहेगी। शिविर में वीरेन्द्र कुमार जैन, , एस के जैन,सुरेश कुमार पाटनी, सुरेंद्र जैन पारस, मुकेश जैन, प्रेम चंद जैन,सुभाष हिम्मतरामका, पल्लवी सिंघवी, स्वाति जैन, डा.सिलोनी थापर, ग्राम सरपंच हेमलता शर्मा सहित अन्य रोटेरियन मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह की 36 वीं पुण्यतिथि मनाई

अलवर, (निसं)। जिला जाट महासभा समिति की ओर पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 36 वीं पुण्यतिथि अलवर शहर के सर्किट हाउस के पास पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के स्मारक स्थल एवं प्रतिमा स्थल पर मनाई गई है।

जिला जाट महासभा समिति के उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता पुष्पेन्द्र सिंह बसेन्द्र ने बताया कि जयन्ती समारोह के मुख्य अतिथि के तौर पर शहर विधायक संजय शर्मा उपस्थित रहे। उन्होंने समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न दिए जाने की मांग करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी के विधायक होने के नाते प्रधानमंत्री से मांग करेंगे कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न से सम्मानित किया जाए।

इस अवसर पर कर्मचारी नेता प्रेम पटेल ने भी विचार व्यक्त किए हैं वही एडवोकेट रामनिवास जाट ने भी चौधरी चरण सिंह के संबंध में अपने विचार रखें एवं उन्हें महान किसान नेता बताया इस अवसर पर विकास मील ने भी अपने विचार रखे हैं एवं उनके बताए रास्ते पर चलने का किसानों से आव्हान किया है।

वर्सी उत्सव आज से

खैरथल, (निसं)। प्रेमप्रकाश आश्रम में आयोजित होने वाले तीन दिवसीय स्वामी जीवनमुक्त महाराज के वर्सी उत्सव में सतगुरु स्वामी भगतप्रकाश महाराज आएंगे। प्रेमप्रकाश आश्रम खैरथल के प्रभारी संत हरि सांई ने बताया कि सतगुरु स्वामी भगतप्रकाश महाराज का आगमन 31 मई को सुबह 8.30 बजे होगा। उनके खैरथल में आगमन से देश विदेश से दर्शन करने आने वालों का खैरथल में आना होगा। वर्सी उत्सव के कार्यक्रम अनुसार 30 मई को 5.30 बजे प्रभात फेरी, 8.30 बजे सत्संग, आरती व प्रसाद वितरण। सांय 5 बजे संतों का स्वागत, सत्संग व हाथप्रसादी होगा। 31 मई को सुबह 8.30 बजे सतगुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का आगमन होगा।

विद्यालय सहायक संघ की बैठक सम्पन्न

निवाई, (निसं)। जोधपुरिया देवधाम मंदिर परिसर में राजस्थान पंचायत शिक्षक संघ एवं विद्यालय सहायक संघ की मिटिंग ब्लाक अध्यक्ष सुरज्ञानसिंह तंवर की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

बैठक में उपस्थित सभी सहायकों ने सर्व सम्मति से सुरज्ञानसिंह तंवर को ही यथावत अध्यक्ष पद पर रखने का निर्णय लिया। बैठक में सभी विद्यालय सहायक व पंचायत शिक्षकों के वेतन संबंधी समस्याओं पर चर्चा की गई और उनके समाधान हेतु विचार विमर्श किया गया। मंहगाई राहत केम्प में जिन कार्मिको की डयूटी लगी हुई है। उनके समाधान के लिए उपखण्ड अधिकारी व विकास अधिकारी को ज्ञापन देकर रोटेशन प्रणाली के अनुसार डयूटी लगाने की मांग की गई है। बैठक में नियमितिकरण एवं अनुभव को जोडते हुए नियमितिकरण के मार्ग को प्रशस्त करने की मांग का प्रस्ताव लिया। इसके अलावा संघ के हित में कई निर्णय लिये गये। मिटिंग में अनिल पंचोली, शिवनारायण शर्मा, रामेश्वरप्रसाद गुर्जर, प्रहलाद जाट, योगेश कुमार मीणा, लखन मीणा, भंवरलाल बैरागी, मंजूलता, शिमला खण्डवा सहित अनेक शिक्षकगण मौजूद थे।

महासंगम की तैयारियां जोरों पर

चाकसू, (निसं)। चार जून को जयपुर में होने वाले माली महासंगम को लेकर पीले चावल बांटने सोमवार को आयोजक टीम के सदस्य गुड्डू सैनी देर शाम चाकसू पहुंचे और महासंगम को लेकर समाज के लोगों को पीले चावल बांटे एवं ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोगों को आने का आहान किया। कार्यक्रम को लेकर समाज के लोगों में खासा उत्साह दिखा, 4 जून को जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में माली महासंगम का आयोजन होगा। इस दौरान बाबूलाल मतंगा, जे.पी.चावण्डिया, लालाराम जादम, रामावतार, गोपाल लाल सोलंकी, रवि बावड़ी राकेश सहित समाज के अन्य लोग मौजूद रहे।

भाजपा की बैठक में कार्यकर्ता पार्षदों ने पानी का मुद्दा उठाया

किशनगढ़ बास, (निसं)। पूर्व विधायक रामहेत यादव के किशनगढ़ बास अनाज मंडी स्थित कार्यालय पर भाजपा बूथ प्रभारियों व मंडल पदाधिकारियों तथा पार्षद, चेयरमैन की हुई बैठक में सभी ने एक सुर में पानी का मुद्दा उठाया और कहा शहर में पानी की व्यवस्था से हर कोई दुखी है अधिकारी कर्मचारी सुनवाई नहीं कर रहे हैं जिसके कारण लोगों में आक्रोश है।

- अफसरों पर मनमानी का आरोप लगाया
- पूर्व विधायक ने कहा कलेक्टर से बात करूंगा सुधार नहीं हुआ तो आंदोलन के लिए तैयार रहें

पूर्व विधायक रामहेत यादव ने चेयरमैन तारामणि सिंघल मंडल अध्यक्ष उमेश कांत वशिष्ठ सहित पार्षदों व बूथ प्रभारियों को कहा पानी की व्यवस्था ठीक हो घर-घर तक पानी पहुंचे इसके लिए वह जिला कलेक्टर से बात करेंगे। अगर इसके बाद भी पानी की व्यवस्था में कोई सुधार नहीं होता है तो वार्ड के लोगों को लेकर धरने पर बैठने के लिए तैयार रहें।

बैठक में पूर्व विधायक यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अजमेर दौरे व केंद्र सरकार के 9 वर्ष पूर्ण हो रहे को लेकर चर्चा की और कार्यकर्ताओं को अजमेर चलने का निमंत्रण दिया। उन्होंने कहा केंद्र सरकार के शानदार 9 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में 30 मई से 30 जून तक अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। प्रदेश व राष्ट्रीय संगठन में किशनगड़ बास विधानसभा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है जिसे बनाए रखना हम सबका दायित्व है। बैठक में मौजूद बूथ अध्यक्षों से पूर्व विधायक ने विस्तार से चर्चा की और बूथ की जानकारी लेते हुए मजबूत बूथ बनाने का मंत्र दिया। इस दौरान विधानसभा प्रभारी माहसिंह चेयरमैन प्रतिनिधि सतीश सिंघल मंडल अध्यक्ष उमेश कांत वशिष्ठ मोठूका अध्यक्ष बलविंदर सिंह राजेश बटवाड़ा मनोज मित्तल प्रदीप सगवैया शिव हरी गुर्जर मनीष लखयाणी तेज सिंह सैनी अनिल शर्मा मन्नू शर्मा बलबीर सिंह लबाना छोटे लाल यादव सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लैंस प्रत्यारोपण शिविर आज

नारायणपुर, (निसं)। मिश्री देवी आई हॉस्पिटल एवं रिसर्च सैन्टर बहरोड़ के संयुक्त तत्वावधान में 30 मई को क़स्बा स्थित पुरुषोत्तमदास आश्रम में भाजपा नेता महेंद्र यादव द्वारा निशुल्क चिकित्सा एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया जायेगा। युवा यादव महासभा अध्यक्ष राजेन्द्र यादव ने बताया कि निशुल्क चिकित्सा एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर मंगलवार 30 मई को नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ.विरेन्द्र सिंह यादव बहरोड़ द्वारा सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक आँखों से संबंधित सभी प्रकार के रोगों की जांचकर निशुल्क दवा दी जाएगी। वही चयनित मरीजों का मिश्री देवी आई हॉस्पिटल एवं रिसर्च सैन्टर बहरोड़ में लाने ले जाने सहित लैंस प्रत्यारोपण व ऑपरेशन निशुल्क किया जायेगा।

महिला पहलवानों को न्याय दिलाने की मांग

जयुपर, (निसं)। दिल्ली में चल रहे महिला पहलवानों के धरने में देश के कोने कोने से आए साथियों पर लाठी चार्ज और पुलिस द्वारा दमन कर गिरफ्तार किया गया।

- अलवर के जन संगठनों ने प्रदर्शन किया

अलवर के तमाम जन संगठनों ने मिलकर धरना स्थल पर की कई पुलिस कार्यवाही में विनेश फोगाट, साक्षी मालिक सहित अन्य पहलवानों से की गई मारपीट दमन के खिलाफ अंबेडकर सर्किल पर विरोध प्रदर्शन कर आरोपी ब्रज भूषण को गिरफ्तार करने एवं महिला पहलवानों को न्याय देने की मांग की। दूसरी ओर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने जिस तरह से नई संसद का उद्घाटन हुआ उसे पूर्ण रूप से गैर संवैधानिक मानते हुए बहिष्कार किया। जिसकी अलवर के जन संघठन की भर्त्सना करते हैं। मांग करते हैं कि देश के राष्ट्रपति और विपक्ष को वाजिब सम्मान दिया जाए। राष्ट्रीय महिला हिंसा मुक्ति मंच रा .अध्यक्ष सरिता भारत , जन वादी महिला समिति प्रदेश उपाध्यक्ष रहीसा खान, अलवर जल आंदोलन अनूप दायमा, सिफात मैनेजर, चौधरी चरण सिंह विचार मंच संरक्षक मोरद्वज चौधरी, अलवर जिला जाट माह सभा अध्यक्ष शेर सिंह चौधरी, रामजस चौधरी, जस्सू फौजी जिला अध्यक्ष भारत परिवार, सुशीला रानी, अखिल राज अंबेडकर शिक्षक संघ प्र. अ किशन लाल खेरालिया, विरेंद्र सिंह क्रांतिकारी रा. अ भारत परिवार, लेखराज सांवरिया, प्रकाश बौद्ध, मीनू बौद्ध, राजेश, अनिल कुमार, दुर्गा प्रसाद पार्षद, रिंकू बोनी पहलवान टाइगर फोर्स ने दिल्ली में महिला पहलवानों के समर्थन में गिरफ्तारी दी।

पुरुष, महिला और जूनियर खिलाड़ियों की मिश्रित टीम होना काफी दिलचस्प होगा। यह लीग दुनिया भर के आयोजकों के लिये प्रेरणा भी होगी। - **कोनेरू हम्पी**

पूर्व विश्व रैपिड शतरंज चैम्पियन, ग्लोबल चेस लीग को लेकर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **महेन्द्र सिंह धोनी**

चेन्नई सुपर किंग्स एमएस धोनी आईपीएल फाइनल ने मैदान पर उतरते ही एक बड़ा इतिहास रच डाला।यह धोनी का बतौर खिलाड़ी 250वां मैच है। वह आईपीएल में 250 मैच खेलने वाले पहले प्लेयर बन गए हैं। इसके अलावा, धोनी भारतीय लीग में 11 फाइनल खेलने वाले पहले खिलाड़ी बन चुके हैं। धोनी अब तक आईपीएल के सभी सीजन में खेले हैं। वह 14 सीजन सीएसके जबकि दो सीजन राइजिंग पुणे सुपरजायंट्स के लिए खेले। सीएसके को जब साल 2016 और 2017 में बैन झेलना पड़ा था, तब धोनी पुणे का हिस्सा बने।

क्या आप जानते हैं ?... विश्व कप फुटबॉल इतिहास में पहला मैच फ्रांस और मैक्सिको के बीच खेला गया, जिसमें फ्रांस 4-1 से जीता।

नीरज ने एफबीके खेलों से नाम वापस लिया

नयी दिल्ली, 29 मई। टोक्यो ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने मांसपेशी में खिंचाव के कारण नीदरलैंड के हेंगेलो में होने वाले एफबीके खेलों से नाम वापस ले लिया है। नीरज ने सोमवार को इसकी पुष्टि करते हुए ट्वीट किया, ''चोट हमारे सफर का हिस्सा होती हैं, लेकिन यह कभी आसान नहीं होता। हाल ही में अभ्यास करते हुए मेरी एक मांसपेशी में खिंचाव आ गया। चिकित्सीय जांच के बाद मैंने और मेरी टीम ने फैसला लिया है कि हम इस चोट को बढ़ाने वाला कोई जोखिम मोल नहीं लेंगे। दुर्भाग्य से, इसके कारण मुझे हेंगेलो में एफबीके खेलों से नाम वापस लेना होगा।'' एफबीके खेल एक वार्षिक ट्रैक एवं फील्ड प्रतियोगिता है जो चार जून को आयोजित होगी। नीरज ने कहा, ''आयोजकों और टूर्नामेंट की सफलता की कामना करता हूं। मैं ठीक होने की राह पर हूं और जून में ही ट्रैक पर लौटने की कोशिश करूंगा। आप सब के समर्थन के लिये धन्यवाद।'' नीरज ने हाल ही में पुरुष भाला फेंक एथलीटों की रैंकिंग में पहला स्थान हासिल किया था। ट्रैक और फील्ड स्पर्धा में भारत के लिये पहला ओलंपिक स्वर्ण जीतने वाले नीरज विश्व एथलेटिक्स की रैंकिंग में ग्रेनाडा के मौजूदा विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स से 22 अंकों से आगे हैं। चोपड़ा ने छह मई को दोहा में 88.67 मीटर के विश्व-अग्रणी प्रयास के साथ डायमंड लीग का पहला चरण जीतकर अपने 2023 सीज़न की शुरुआत की थी। उन्होंने हालांकि 13 जून को फिनलैंड के तुर्कू में होने वाले पावो नूरमी खेलों को लेकर कोई पुष्ट नहीं की है।

स्टीफेंस समेत चार अमेरिकी महिला खिलाड़ी फ्रेंच ओपन के दूसरे दौर में

पेरिस, 29 मई। अमेरिका की स्लोएने स्टीफेंस ने दो बार की ग्रैंडस्लैम चैम्पियन कैरोलिना प्लिसकोवा को 6.0, 6.4 से हराकर फ्रेंच ओपन के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। स्टीफेंस ने 2017 में अमेरिकी ओपन जीता था और फ्रेंच ओपन 2018 में उपविजेता रही। अमेरिका की मेडिसन कीस ने केइया कानेपी को 6.1, 3.6, 6.1 से हराकर अगले दौर में जगह बनाई। अब उनका सामना अमेरिकी क्वालीफायर काइला डे से होगा जिसने फ्रांस की वाइल्ड कार्डधारी क्रिस्टिना म्लादेनोविच को 7.5, 6.1 से मात दी। क्रोएशिया में जन्मी अमेरिका की बर्नार्डा पेरा ने दुनिया की पूर्व दूसरे नंबर की खिलाड़ी एनेट कोंटावेट को 7.6, 6.2 से हराया। दो साल पहले उपविजेता रही अनास्तासिया पी ने चेक गणराज्य की लिंडा एफ को 6.2, 6.2 से मात दी। वहीं डोन्ना वेकिच ने क्वालीफायर डायना यास्त्रेमस्का को 6.2, 7.5 से हराया।

हम अपनी क्षमता का 70% ही खेल पाये है : जूनियर भारतीय हॉकी कोच कुमार

सालालाह (ओमान), 29 मई। भारतीय जूनियर हॉकी टीम के मुख्य कोच सी आर कुमार का मानना है कि उनकी टीम ने एशिया कप सेमीफाइनल में पहुंचने के बावजूद अभी तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया है जो अब उसे करना होगा। भारत ने चीनी ताइपै को 1.0, जापान को 3.1, थाईलैंड को 17.0 से हराने के अलावा पाकिस्तान से 1.1 से ड्रॉ खेला। कुमार ने वर्चुअल प्रेस कांफ्रेंस में कहा ,'' सेमीफाइनल और फाइनल से पहले कुछ कठिन मुकाबले खेलना हमेशा अच्छा होता है। हमने इसका मजा लिया लेकिन अपनी क्षमता का 70 प्रतिशत ही खेले हैं। बाकी 30 प्रतिशत कमी सेमीफाइनल और फाइनल में पूरी करनी होगी।'' उन्होंने कहा ,'' मुझे इस टीम पर भरोसा है। एशिया कप विश्व कप के लिये क्वालीफायर है और अपनी क्षमता दिखाने के लिये यह अकेला क्वालीफायर है। हम बिना किसी बाधा के विश्व कप में जाना चाहते हैं।' जूनियर विश्व कप पांच से 16 दिसंबर तक कुआलालंपुर में खेला जायेगा। कुमार ने हालांकि यहां एस्ट्रो टर्फ पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा, टर्फ का इस्तेमाल नहीं हुआ है और इसकी ऊपरी सतह समतल नहीं है और इससे हमें मदद नहीं मिल रही। हर टीम को परेशानी हुई है लिहाजा हमें ही अपना खेल बेहतर करना होगा।''

गोल हंटर्स ने आर्डोर को रौंदा, खिताब पक्का

नयी दिल्ली, 29 मई। गोल हंटर्स ने फुटबॉल दिल्ली सी-डिवीजन लीग में चैंपियनशिप की दावेदार मानी जा रही आर्डोर एफसी को सोमवार को 6-1 से पीटकर बी-डिवीजन में प्रवेश की पात्रता हासिल कर ली। नेहरू स्टेडियम पर खेले गये एकतरफा मैच में विजेता टीम के लिये नितिन ने दो और गौरव, यमन, अजय पाल और कुशाग्र ने एक-एक गोल जमाया। पराजित टीम का गोल चंदन ने किया। एक अन्य मुकाबले में एलायंस ने विक्रम (दो) और शिवम के गोलों से 90 मिनट्स को 3-1 से परास्त किया। पराजित टीम का गोल मोहित भंडारी ने जमाया। इसी बीच, फुटबॉल दिल्ली सांस्थानिक लीग में दिल्ली सरकार ने मुकेश चन्याल के गोल से उत्तर रेलवे को एक गोल से पराजित किया। दूसरे मैच में डीटीसी ने बैंक ऑफ इंडिया क साथ 2-2 से ड्रॉ खेलकर अंक बांट लिये। बैंक टीम के गोल आकाश और सागर ने जबकि डीटीसी के लिये विनोद और योगिंदर ने गोल किए।

संस्थागत लीग से विभागों को फुटबॉल में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा : विजयन

नयी दिल्ली, 29 मई। भारत के पूर्व दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी आईएम विजयन का मानना है कि संस्थागत लीग शुरू करने से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू), राज्यों के विभिन्न विभागों और पुलिस इकाइयों को देश भर में खेल में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने पीएसयू, राज्य विभागों और पुलिस इकाइयों से खेलने वाले फुटबॉलारों के लिए प्रतिस्पर्धा के और मौके बनाने के लिए संस्थागत लीग शुरू करने की घोषणा की है जिसकी देश के सर्वश्रेष्ठ स्ट्राइकरों में से एक रहे विजयन ने सराहना की है। विजयन ने कहा, ''जब मैं किशोर था तो केरल पुलिस ने मुझे अपनी टीम में शामिल किया था।

बारिश ने फिर डाला खलल, चैन्नई को मिला 171 रन का लक्ष्य

आईपीएल फाइनल

अहमदाबाद, 29 मई। वर्षा बधित आईपीएल फाइनल में चैन्नई सुपरकिंग्स को जीत के लिए 171 रन का लक्ष्य मिला है। बारिश के कारण रिसर्व दिन खेले जा रहे फाइनल में भी बारिश ने अपना व्यवधान बरकरार रखा है। टॉस हारने के बाद पहले खेलते हुए गुजरात टाइटंस ने 4 विकेट पर 314 रन बनाए। पहली पारी के ब्रेक के बीच बारिश शुरू हो गई और मैदानकर्मी तेजी से कवर लेकर मैदान के बीच भागे। बारिश खुलने पर चेन्नई की पारी की तीन गेंद ही हुई थी कि दोबारा पानी बरसने लगा। रात्रि साढ़े ग्यारह बजे अंपायरों ने पिच का निरीक्षण कर मैच को 15 ओवर का किया और चेन्नई को जीत के लिए 171 रन का लक्ष्य मिला।

इससे पूर्व युवा वामहस्त बल्लेबाज साई सुदर्शन (47 गेंद, 96 रन) और ऋद्धिमान साहा (39 गेंद, 54 रन) के अद्धर्शतकों की बदौलत गुजरात टाइटन्स ने सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग के फाइनल में चेन्नई सुपर किंग्स के सामने 215 रन का विशाल लक्ष्य रखा।

सुदर्शन आईपीएल फाइनल में शतक जड़ने वाले बल्लेबाजों की सूची में अपना नाम नहीं लिखा सके, लेकिन उन्होंने 47 गेंद पर आठ चौकों और छह छक्कों की मदद से 96 रन बनाकर गुजरात को फाइनल के सबसे बड़े स्कोर तक पहुंचा दिया। चेन्नई ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी और शुरुआती दो ओवरों में गुजरात के सलामी बल्लेबाजों को परेशान भी किया। दूसरे ओवर में हालांकि दीपक चाहर ने तुषार देशपांडे की गेंद पर शुभमन गिल का कैच छोड़ दिया। तीन रन के मामूली स्कोर पर जीवनदान मिलने के बाद गिल ने देशपांडे के खिलाफ हाथ खोलते हुए लगातार तीन चौके जड़े और साहा के साथ सात ओवर में 67 रन की साझेदारी कर डाली।

कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने अंततः रवींद्र जडेजा की गेंद पर शानदार स्टंपिंग करते हुए गिल को पवेलियन लौटाया, लेकिन इससे पहले वह 20 गेंद पर सात चौकों की मदद से 39 रन बना चुके थे।

पहला विकेट गिरने के बाद भी गुजरात की पारी नहीं रुकी और साहा ने तेजी से रन बटोरने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली। साहा ने 36 गेंदों पर अद्धर्शतक पूरा करते हुए सुदर्शन के साथ 64 रन की अद्धर्शतकीय साझेदारी की। साहा ने 39 गेंदों की पारी में पांच चौके और एक छक्का लगाकर 54 रन बनाये जबकि चाहर ने उन्हें धोनी के हाथों कैच आउट करवाया। अनुभवी बल्लेबाज साहा के 14वें ओवर में पवेलियन लौटने के बाद चेन्नई को उम्मीद होगी कि वह गुजरात को 200 रन के नीचे रोक सकेगी, लेकिन सुदर्शन ने ऐसा नहीं होने दिया। शुरुआती 12 गेंदों पर सिर्फ 10 रन बनाने वाले सुदर्शन ने साहा के जाते ही ताबड़तोड़ बल्लेबाजी शुरी कर दी।

एशिया कप सेमीफाइनल में भारत, विश्व कप के लिये भी क्वालीफाई किया

सलालाह, (ओमान), 29 मई। गत चैंपियन भारत ने जूनियर पुरुष एशिया कप 2023 के अपने आखिरी पूल-ए मैच में थाईलैंड को 17-0 से रौंदकर सेमीफाइनल में जगह बना ली है। इस विशाल जीत के साथ भारत ने दिसंबर में होने वाले एफआईएच पुरुष हॉकी विश्व कप के लिये भी क्वालीफाई कर लिया है। नियमों के अनुसार, जूनियर एशिया कप में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतने वाली टीमों को विश्व कप के लिये क्वालीफाई करना था, जबकि मलेशिया ने विश्व कप का मेज़बान होने के नाते टूर्नामेंट में जगह बना ली थी। मलेशिया के रविवार को एशिया कप सेमीफाइनल में पहुंचने के बाद चारों सेमीफाइनलिस्ट टीमों ने विश्व कप के लिये क्वालीफाई कर लिया।

अंगद बीर सिंह (13वां मिनट) ने रविवार रात खेले गये मुकाबले में भारत का खाता खोला, जबकि दूसरे क्वार्टर में योगेंबर रावत (17वां मिनट), उत्तम सिंह (24वां मिनट) और अमनदीप लाकड़ा (26वां, 29वां मिनट) ने गोल जमाकर भारत की बढ़त हाफ टाइम से पहले 5-0 कर दी। तीसरे क्वार्टर में उत्तम (31वां मिनट) और अंगद (33वां मिनट) के साथ-साथ अरैजीत सिंह हुंदल (36वां मिनट) और विष्णुकांत सिंह (38वां मिनट) ने भी एक-एक गोल दागकर भारत के स्कोर में योगदान दिया। तीसरा क्वार्टर खत्म होने से ठीक पहले बॉबी सिंह धामी (45वां मिनट) ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील करते हुए भारत का स्कोर 10-0 पर पहुंचा दिया।

शारदा नंद तिवारी (46वां मिनट), अमनदीप (47वां मिनट) और अंगद (47वां मिनट) ने शुरुआती दो मिनटों में ही तीन गोल करके चौथे क्वार्टर को भारत के नाम कर दिया। थाईलैंड की वापसी की संभावना बेहद कम लग रही थी, लेकिन रोहित (49वां) के गोल ने इसे और भी मुश्किल बना दिया। सुनीत लाकड़ा (54वां), अंगद (55वां), और राजिंदर सिंह (56वां मिनट) ने मैच खत्म होने से पहले एक-एक गोल किया और भारत ने आक्रामक हॉकी के उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ 17-0 की जीत दर्ज की।

विराट कोहली ने टीम इंडिया के साथ किया अभ्यास, रोहित शर्मा आज अभ्यास करेंगे

ऑरेनडेल (ससेक्स), 29 मई। भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली सोमवार को ऑरेनडेल कासल क्रिकेट क्लब में बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट के साथ राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के अभ्यास सत्र से जुड़ गए। ऐसा लगता है कि उनादकट बाएं कंधे की चोट से उबर गए हैं।

भारत और ऑस्ट्रेलिया सात से 11 जून तक द ओवल में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल खेलेंगे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने सोमवार को अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर भारतीय टीम के सदस्यों की तस्वीर साझा की जिसमें कोहली के अलावा तेज गेंदबा मोहम्मद सिराज और उमेश यादव भी शामिल थे। बीसीसीआई ने ट्वीट में कहा, ''टीम इंडिया के सदस्यों ने ऑरेनडेल कासल क्रिकेट क्लब में डब्ल्यूटीसी 2023 की अपनी तैयारियां शुरू की। कोहली, उमेश और सिराज को नई ट्रेनिंग किट में जॉगिंग करते हुए देखा जा सकता था जबकि ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने नेट पर गेंदबाजी की।

उनादकट ने मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और गेंदबाजी कोच पारस महाम्ब्रे के साथ भी बात की। फाइनल की तैयारी के लिए इंग्लिश काउंटी में ससेक्स की ओर से खेल रहे चेतेश्वर पुजारा भी ट्रेनिंग के लिए पहुंचे। उमेश और शारदुल ठाकुर डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए यहां पहुंचने वाले भारतीय खिलाड़ियों के शुरुआती समूह में शामिल थे।

ऑस्ट्रेलिया ने हेजलवुड को डब्ल्यूटीसी फाइनल टीम में शामिल किया

दुबई, 29 मई। तेज़ गेंदबाज़ जॉश हेज़लवुड ने चोट के बावजूद ऑस्ट्रेलिया की विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल स्क्वाड में जगह बना ली है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने रविवार को एक विज्ञिप्त में बताया कि ऑस्ट्रेलिया ने सात जून से होने वाले खिताबी मुकाबले के लिये हेज़लवुड को 15-सदस्यीय स्क्वाड में शामिल किया है।

हेज़लवुड इस महीने की शुरुआत में (मामूली दर्द) के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) छोड़कर स्वदेश लौट आये थे, लेकिन क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने लंदन के द ओवल मैदान पर होने वाले फाइनल से पहले उन्हें फिट घोषित कर दिया था। हेज़लवुड कप्तान पैट कमिंस, स्कॉट बोलैंड और मिचेल स्टार्क जैसे खिलाड़ियों से सजे गेंदबाजी आक्रमण में शामिल होंगे।

उल्लेखनीय है कि रोहित शर्मा की कप्तानी में 15-सदस्यीय टीम की घोषणा कर चुके बीसीसीआई ने युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल को अतिरिक्त खिलाड़ी के रूप में लंदन भेजा है। जायसवाल को रुतुराज गायकवाड़ की जगह चुना गया है, जो तीन जून को शादी होने के कारण लंदन नहीं जा सकेंगे।

ऑस्ट्रेलिया डब्ल्यूटीसी स्क्वाड : पैट कमिंस (कप्तान), स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, कैमरन ग्रीन, मार्कस हैरिस, जॉश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जॉश इंग्लिस, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, नेथन लायन, टॉड मर्फ़ी, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क, डेविड वॉर्नर

भारत डब्ल्यूटीसी स्क्वाड : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, चेतेश्वर पुजारा, विराट कोहली, अजिंक्य रहाणे, केएस भरत, रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, जयदेव उनादकट, ईशान किशन।

डब्ल्यूटीसी फाइनल में उनादकट को देखना चाहते हैं दिनेश कार्तिक

दुबई, 29 मई। भारतीय विकेटकीपर दिनेश कार्तिक का कहना है कि भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सात जून से होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिये जयदेव उनादकट को एकादश में जगह देनी चाहिये। लगातार दूसरी बार डब्ल्यूटीसी फाइनल में उतरते हुए भारत को जसप्रीत बुमराह की कमी खलेगी, जिन्होंने हाल ही में अपनी कमर की सर्जरी करवाई है।

लंदन के द ओवल की पिच पर मोहम्मद सिराज और मोहम्मद शमी की जोड़ी भारतीय गेंदबाजी की अगुवाई करेगी। कार्तिक का कहना है कि सिराज और शमी के साथ भारत को उनादकट को तीसरे तेज गेंदबाज के रूप में जबकि शार्दुल ठाकुर को तेज गेंदबाजी हरफनमौला के रूप में मौका देना चाहिये। कार्तिक ने आईसीसी के रिव्यू पॉडकास्ट पर कहा, ''जसप्रीत बुमराह की कमी किसी भी टीम को किसी भी प्रारूप में खलेगी, लेकिन मोहम्मद सिराज और मोहम्मद शमी के रूप में कुछ प्रमुख गेंदबाज शानदार फॉर्म में हैं, जिन्होंने पूरे आईपीएल में वास्तव में अच्छी गेंदबाजी की है।'' कार्तिक ने कहा, ''उनके पास शार्दुल ठाकुर भी है, जिनके खेलने के आसार बहुत ज्यादा हैं, जबकि चौथे तेज गेंदबाज के लिये उन्हें उमेश यादव और जयदेव उनादकट में से किसी एक को चुनना होगा। आप कह सकते हैं कि वे वामहस्त गेंदबाज (उनादकट) की ओर जा सकते हैं क्योंकि वे गेंदबाजी आक्रमण में विविधता चाहेंगे।''

भारत ने हाल ही में घरेलू परिस्थितियों में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ समाप्त हुई बॉर्डर-गावस्कर टेस्ट सीरीज़ के दौरान अपनी एकादश में तीन स्पिनरों का सफलतापूर्वक उपयोग किया था। रविचंद्रन अश्विन (25 विकेट), स्टार ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा (22) और उभरते हुए बाएं हाथ के एक्सर पटेल (तीन) ने आपस में 50 विकेट चटकाकर भारत को लगातार चौथी बार यह सीरीज जिताई थी। कार्तिक हालांकि इंग्लैंड की परिस्थितियों में सिर्फ एक ही स्पिनर को भारतीय टीम में देखना चाहते हैं।

हैंडबॉल में गतिरोध खत्म, दिग्विजय चौटाला एचएआई के नए अध्यक्ष चुने गए

तेजराज सिंह कोषाध्यक्ष चुने गये

नयी दिल्ली, 29 मई। भारतीय ओलंपिक संघ के हस्तक्षेप के बाद दिग्विजय चौटाला को भारतीय हैंडबॉल संघ का अध्यक्ष और जगन मोहन राव को महासचिव चुना गया जिससे खेल के संचालन को लेकर लंबे समय से चला आ रहा गतिरोध खत्म हो गया। एचएआई ने इस मुद्दे को सुलझाने में भूमिका के लिए आईओए को धन्यवाद दिया और भारत में खेलों की शीर्ष संस्था से मान्यता का आग्रह किया। पिछले कुछ वर्षों से राव और चौटाला दोनों की अगुआई वाली संस्थाएं हैंडबॉल का वैध राष्ट्रीय महासंघ होने का दावा कर रहीं थी।

कौन की संस्था खेल का संचालन करेगी इस भ्रम के कारण पिछले साल गुजरात में हुए राष्ट्रीय खेलों से हैंडबॉल को हटा दिया गया था। आईओए ने प्रेस विज्ञिप्त में कहा, ''भारतीय ओलंपिक संघ आज भारतीय हैंडबॉल संघ में महीनों से चले आ रहे गतिरोध का हल निकालने में बड़ी सफलता की घोषणा करता है। खेल और खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए दोनों गुट अब मिलकर काम करेंगे।'' आपसी सहमति से निकाला गया यह हल काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत आगामी हांगझोउ एशियाई खेलों की तैयारी कर रहा है।

आईओए अध्यक्ष पीटी उषा को लिखे पत्र में एचएआई की कार्यकारी समिति ने सोमवार को चौटाला को सर्वसम्मति से अध्यक्ष, राव को महासचिव और तेजराज सिंह को कोषाध्यक्ष चुने जाने की घोषणा की। उषा ने मामले का हल निकलने पर संतोष जाहिर करते हुए कहा, ''एचएआई ने सभी खेल महासंघों के लिए उदाहरण पेश किया है कि बातचीत से सभी मुद्दों का हल निकाला जा सकता है।

मुझे खुशी है कि आईओए खेल और इसके खिलाड़ियों के प्रति समान लक्ष्यों के प्रति काम करने के लिए दोनों पक्षों को एक साथ लाने में सफल रहा।'' चौटाला और राव दोनों ने भारत में हैंडबॉल की बेहतरी के लिए एकजुट होकर काम करने की बात कही। चौटाला ने कहा ''संचालन के मुद्दे का हल निकालने में मार्गदर्शन के लिए मैं आईओए को धन्यवाद देता हूं। अब हम आगे बढ़ेंगे और देश में खेल के लिए एक साथ काम करेंगे।'' राव ने कहा, ''भारत में हैंडबॉल की सेवा और हमारे खिलाड़ियों के विकास के लिए मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करूंगा।''

पुलिस हिरासत से रिहा हुए पहलवान जल्द करेंगे अगले कदम पर विचार

नयी दिल्ली, 29 मई। पुलिस हिरासत से कल देर रात रिहा हुए पहलवान अब भी अपने अगले कदम पर विचार कर रहे हैं और उन्हें खेल जगत से समर्थन मिलना जारी है। राजनीतिक और खेल हस्तियों ने शीर्ष पहलवानों के खिलाफ रविवार को हुई पुलिस कार्रवाई की निंदा की है। विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया, संगीता फोगाट, साक्षी मलिक और कई अन्य पहलवानों को दिल्ली पुलिस ने रविवार को उस समय हिरासत में ले लिया जब वे महिला 'महापंचायत' के लिए नए संसद भवन की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे थे। जंतर मंतर से शीर्ष पहलवानों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई के कई वीडियो सामने आए। पहलवान भारतीय कुश्ती महासंघ प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। विरोध कर रहे पहलवानों में से एक ने कहा, ''हम आपको जल्द ही बतायेंगे कि हमारा अगला कदम क्या होगा। कल जो हुआ हम अब भी उससे उबरने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे रात 11 बजे रिहा किया गया और बजरंग को आधी रात के आसपास छोड़ा गया। हम सब अभी तक नहीं मिले हैं। हम जल्द ही इस पर चर्चा करेंगे। ''

सभी खेल संगठनों में सुरक्षा उपाय लागू होने की जरूरत : अभिनव बिंद्रा

नयी दिल्ली, 29 मई। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के एथलीट आयोग के सदस्य अभिनव बिंद्रा ने प्रदर्शनकारी पहलवानों की भयावह तस्वीरों पर चिंता व्यक्त करते हुए सोमवार को सभी खेल संगठनों में स्वतंत्र सुरक्षा उपाय लागू करने की मांग की।

बीजिंग ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट निशानेबाज बिंद्रा ने ट्वीट किया, कल रात सो नहीं सका। अपने साथी भारतीय पहलवानों के प्रदर्शन की भयावह तस्वीरों ने (मुझे) विचलित रखा। समय आ गया है कि हम सभी खेल संगठनों में स्वतंत्र सुरक्षा उपाय लागू करें।

उल्लेखनीय है कि बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक और विनेश फोगाट सहित देश के कई नामचीन पहलवान भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

करीब एक महीने से जंतर-मंतर पर प्रदर्शन पर बैठे पहलवानों ने रविवार को नवनिर्मित संसद भवन के उद्घाटन समारोह के दौरान संसद तक मार्च करने और महिला महापंचायत आयोजित करने का फैसला लिया था। पहलवान हालांकि जंतर-मंतर रोड से आगे नहीं बढ़ सके और पुलिस ने सभी प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेकर प्रदर्शन स्थल से पहलवानों के तंबू उखाड़ दिये। बिंद्रा ने कहा, हमें सुनिश्चित करना होगा कि अगर ऐसी स्थिति आती है तो इसका निपटान बेहद संवेदनशीलता और सम्मान के साथ किया जाये। हर एथलीट एक सुरक्षित और सशक्त करने वाले माहौल का हकदार है।

बृजभूषण पर एक नाबालिग सहित सात महिला पहलवानों के यौन शोषण के आरोप हैं। दिल्ली पुलिस सभी पीड़ितों के बयान लेकर बृजभूषण के खिलाफ दो एफआईआर दर्ज कर चुकी है, जिनमें से एक पॉक्सो (यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण) से संबंधित है। कैसरगंज लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के सांसद बृजभूषण शरण सिंह हालांकि अभी तक गिरफ्तार नहीं हुए हैं। बिंद्रा से पहले टोक्यो ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा, भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री और बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता मुरली श्रीशंकर ने भी पहलवानों की दुर्गति पर चिंता व्यक्त की थी।

नीरज ने रविवार को पहलवानों के हिरासत में लिये जाने के एक वीडियो पर टिप्पणी की, ''यह देखकर बहुत दुख हो रहा है। इससे निपटने का बेहतर तरीका हो सकता है।'' श्रीशंकर ने पहलवानों के साथ दिल्ली पुलिस के बर्ताव को बर्बर करार देते हुए ट्वीट किया, ''बेहद बर्बर! हमारे चैंपियन इस बर्ताव के लायक नहीं थे। ओलंपक में पहुंचने का सपना देखने वाले एक एथलीट के तौर पर यह तस्वीर (मेरे मस्तिष्क पर) बहुत गहरा घाव छोड़ेगी।

छेत्री ने रविवार देर रात ट्वीट किया, ''हमारे पहलवानों को बिना सोचे समझे घसीटे जाने की क्या जरूरत है? यह किसी के साथ व्यवहार करने का तरीका नहीं है। मैं वास्तव में उम्मीद करता हूं कि इस पूरी स्थिति का आकलन उसी तरह किया जाए जैसा होना चाहिए।''

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल (1) श्री दिनेश कुमार बडाया पुत्र श्री हरसहाय बडाया एवं (2) श्रीमती विनीता बडाया पत्नी श्री दिनेश कुमार बडाया, निवासीगण ए-3, विजय नगर सैकिण्ड, करतारपुरा, जयपुर 302006 (राज.) ने आवासीय प्लॉट नं. सी-11, योजना कुसुम विहार, जगतपुरा, जयपुर (राज.) जिसका कुल क्षेत्रफल 342.22 वर्गगज है को जिसका पट्टा विलेख संख्या 159 दिनांक 20.04.2017 को जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर द्वारा श्रीमती सरस्वती माथुर पत्नी श्री जगदम्बा लाल माथुर के पक्ष में जारी किया गया था उक्त पट्टे का पंजीयन कार्यालय उप पंजीयक जयपुर चतुर्थ के यहां क्रम संख्या 201703018101065 पर दिनांक 25.04.2017 को पंजीबद्ध किया गया। तत्पश्चात् श्रीमती सरस्वती माथुर पत्नी श्री जगदम्बा लाल माथुर का दिनांक 01.09.2018 को अमेरिका में निर्वसियत स्वर्गवास हो जाने के कारण श्रीमती सरस्वती माथुर पत्नी श्री जगदम्बा लाल माथुर के स्वर्गवास के पश्चात् उनके द्वारा छोड़ी गई उपरोक्त वर्णित सम्पत्ति के उनके पति श्री जगदम्बा लाल माथुर पुत्र श्री नन्द लाल माथुर एवं एक पुत्र श्री दीपक माथुर पुत्र श्री जगदम्बा लाल माथुर, दो पुत्रियां क्रमशः (1) श्रीमती स्वाती माथुर पत्नी श्री कपिल राय पुत्री श्री जगदम्बा लाल माथुर (2) श्रीमती श्वेता माथुर पत्नी श्री शरद माथुर पुत्री श्री जगदम्बा लाल माथुर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत प्रथम श्रेणी के कानूनी उत्तराधिकारीगण हुए उनके विधिक उत्तराधिकारीयों मे से श्री दीपक माथुर पुत्र श्री जगदम्बा लाल माथुर, श्रीमती स्वाती माथुर पत्नी श्री कपिल राय पुत्री श्री जगदम्बा लाल माथुर तथा श्रीमती श्वेता माथुर पत्नी श्री शरद माथुर पुत्री श्री जगदम्बा लाल माथुर द्वारा उक्त वर्णित अचल सम्पत्ति मे प्रत्येक ने स्वयं का अविभाजित 1/4 हिस्सा स्वयं के पिताजी श्री जगदम्बा लाल माथुर पुत्र श्री नन्द लाल माथुर के हक में पंजीबद्ध हकत्याग पत्र निष्पादित किया गया जिसका पंजीयन कार्यालय उप पंजीयक जयपुर प्रथम के यहां क्रम संख्या 202303015105588 पर दिनांक 24.03.2023 को पंजीबद्ध किया गया के कारण उक्त अचल सम्पत्ति के एकमात्र रूप से मालिक स्वामी एवं काबिज श्री जगदम्बा लाल माथुर पुत्र श्री नन्द लाल माथुर हुए तत्पश्चात् श्री जगदम्बा लाल माथुर पुत्र श्री नन्द लाल माथुर ने अपनी उक्त अचल सम्पत्ति एवं अपनी अन्य चल अचल सम्पत्तियों के सम्बन्ध में समस्त प्रकार की लिखित एवं मौखिक कार्यवाही करने हेतु अपने स्वयं के पुत्र श्री दीपक माथुर पुत्र श्री जगदम्बा लाल माथुर को समस्त प्रकार की लिखित एवं मौखिक कार्यवाही करने के अधिकार प्रदान करते हुए अपनी ओर से स्वयं का मुख्तयार आम नियुक्त कर पंजीबद्ध मुख्तयारनामा आम निष्पादित कर दिया जिसका पंजीयन कार्यालय उप पंजीयक जयपुर प्रथम के यहां क्रम संख्या 202303015400126 पर दिनांक 30.03.2023 को पंजीबद्ध किया गया इस प्रकार मेरे अभिभाष्य श्री जगदम्बा लाल माथुर जरिए मुख्तयार आम श्री दीपक माथुर निवासी ए-2, सिविल लाईन हवा सड़क, जयपुर से उक्त अचल सम्पत्ति खरीद करना चाहते है। उक्त सम्पत्ति को खरीद करने हेतु मेरे मुवक्किल एच.डी.एफ. सी. लिमिटेड से ऋण प्राप्त कर उक्त सम्पति को बंधक रखना चाहते है। इस संबंध में किसी भी व्यक्ति अथवा बैंक इत्यादि को किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आक्षेप हो तो मय सबूत सात दिन की अवधि में अधोहस्ताक्षरकर्ता को लिखित आपत्ति प्रस्तुत करें, अवधि समाप्ति के पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा मेरे मुवक्किल के विरुद्ध शून्य व बेअसर मानी जावेगी ।

(श्याम सुन्दर चावला) एडवोकेट
6/48, मालवीय नगर, जयपुर। मोबाईल 9829218044

दिनांक : 28.05.2023

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

IDFC FIRST Bank

(पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमि

विख्यात चित्रकार रैम्ब्रैन्ट को अन्य समकालीन कलाकारों के विपरीत अपने जीवनकाल में ही असाधारण सफलता मिल गई थी। इस डच कलाकार की कलाकृतियाँ ना केवल नीदरलैंड्स में बल्कि पूरे यूरोप में विख्यात थीं। उसके शिष्य भी ''डच गोल्डन एज'' में काफी प्रभावशाली हुए। रैम्ब्रैन्ट एक जानी मानी हस्ती थे, इसलिए 17 वीं सदी के इस कलाकार की अज्ञात एवं अतिदुर्लभ कृतियाँ मिलने से कला जगत में खलबली मच जाती है। क्रिस्टीज़ ऑक्शन हाउस में, पुराने महान कलाकारों के विशेषज्ञ, हैरी पैंटिफर को हाल ही में रैम्ब्रैन्ट की दो कृतियां मिली हैं। उन्होंने बताया कि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, ये पेंटिंग्स पूरी तरह से अज्ञात थीं और 19 वीं और 20 वीं सदी के, रैम्ब्रैन्ट से सबंधित किसी भी साहित्य में इनका कहीं कोई जिक्र नहीं है। इस पेंटिंग्स को संभवतया 200 साल पहले जनता ने देखा था। एक पेंटिंग में प्लम्बर, जैन विलैम्स वैन डर प्लोयम और दूसरी में उसकी पत्नी जापगेन कैरैल्स नज़र आ रहे हैं। यह युगल डच शहर लायडन में रहता था। उनका रैम्ब्रैन्ट से आजीवन रिश्ता रहा। उनके बेटे की शादी रैम्ब्रैन्ट की चचेरी बहन से हुई थी और समझा जाता है कि, इस शादी से जन्मे पुत्र ने रैम्ब्रैन्ट से कला की ट्रेनिंग ली थी। ये लोग रैम्ब्रैन्ट के बेहद करीबी थे। इस परिवार ने ही 1824 में ये कलाकृतियां एक ब्रिटिश परिवार को बेची थीं, जिनके पास आज भी ये मौजूद हैं। इस ब्रिटिश परिवार को पता नहीं था कि पेंटिंग्स के उनके संग्रह में ये दो दुर्लभ पेंटिंग भी हैं। सन् 1635 की हस्ताक्षरित ये दोनों दुर्लभ कलाकृतियां 8 इंच लम्बी और साढ़े 6 इंच चौड़ी हैं। पैंटिफर ने कहा, ''मुझे लगता है कि रैम्ब्रैन्ट द्वारा बनाए गए ये सबसे छोटे पोर्ट्रेट्स हैं।''

कांग्रेस को 250 के आसपास सीटें देना चाहता है संयुक्त विपक्ष?

चर्चाओं के अनुसार सीट शेयरिंग का बेसिक फॉर्मूला है कि, 2019 में जिस पार्टी ने जो सीट जीती, वो उसकी, तथा नंबर-2 पर रही पार्टी को प्राथमिकता देना इस फॉर्मूला का दूसरा स्टेज है

नई दिल्ली, 29 मई। ममता बनर्जी और नीतीश कुमार भाजपा के खिलाफ प्लान 475 तैयार कर रहे हैं। इस प्लान की सबसे प्रमुख बात यह है कि, वे चाहते हैं कि, लोकसभा की 543 सीटों में से कम से कम 475 सीटों पर भाजपा के खिलाफ विपक्ष से सिर्फ एक कैंडिडेट लड़े। कैंडिडेट कांग्रेस का हो या किसी और पार्टी का लेकिन लड़े कोई एक जिससे वोट ना बंटे और बीजेपी को आमने-सामने की लड़ाई में हराकर 2024 में लगातार तीसरी बार लोकसभा चुनाव जीतने से रोका जा सके।

सूत्र बताते हैं कि, 475 सीटों पर एक कैंडिडेट देने का वो फॉर्मूला जिस पर चर्चा होगी उसमें 2019 में जीती सीटों का सबसे अहम रोल है। बेसिक फॉर्मूला है कि 2019 में जिस पार्टी ने जो सीट जीती, वो उसकी। नंबर 2 पर रही पार्टी को प्राथमिकता देना फॉर्मूला का दूसरा स्टेज है। क्षेत्रीय दल इस फॉर्मूले पर कांग्रेस से सीट के बंटवारे पर सहमति बनाने की कोशिश करेंगे।

■ नीतीश कुमार चाहते हैं कि, लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ 475 सीटों पर विपक्ष का केवल एक ही उम्मीदवार चुनाव लड़े।

किसी सीट पर नंबर 1 और 2 पर रही पार्टी अगर विपक्षी खेमे में नहीं हो तो तीसरे नंबर पर रही पार्टी को तवज्जो दिया जाए। लब्बोलुआब यह है कि 2019 के चुनाव में विपक्षी खेमे की जो पार्टी सबसे ज्यादा वोट लाई, उसका उस सीट पर हक माना जाए।

दिक्कत ये है कि कांग्रेस ये फॉर्मूला मान लेती है तो उसे 2024 के चुनाव में 250 से कुछ ज्यादा या कम सीटें लड़ने के लिए मिल पाएंगी जहां वो जीती या कम से कम दूसरे नंबर पर रही। ऐसे में विपक्षी गठबंधन जीत भी जाए तो सरकार चलाने और गिराने का बटन कोलकाता से चेन्नई तक बिखरा रहेगा। लेकिन कांग्रेस की एक मुसीबत यह भी है कि सीधी लड़ाई में भाजपा कांग्रेस पर बहुत भारी है। अब पूरी कवायद विपक्षी इस बात पर टिकी है कि, कांग्रेस करीब 250 सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हो जाये। नीतीश कुमार और ममता बनर्जी ने कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के साथ इसी फॉर्मूले पर मंथन के लिए आगामी 12 जून को पटना में सभी विपक्षी पार्टियों की मीटिंग बुलाई है।

2014 के लोकसभा चुनाव में 189 सीटों पर सीधी टक्कर में 166 बीजेपी जीती जबकि 2019 में 192 सीटों पर आमने-सामने के मुकाबला में 176 भाजपा जीती। 2019 के चुनाव में कांग्रेस 52 सीट जीती और 209 पर दूसरे नंबर पर रही। 2014 के चुनाव में कांग्रेस 44 सीट जीती थी और 224 सीटों पर दूसरे नंबर पर रही थी। जीत और रनर अप मिला दें तो कांग्रेस 2014 में 268 सीट और 2019 में 261 सीट पर जीती या आगे रही।

ममता और नीतीश के फॉर्मूले से कांग्रेस को लगभग 250 सीटें ही मिलती दिख रही हैं। बाकी सीटों पर यूपी में अखिलेश यादव, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, महाराष्ट्र में शरद पवार और उद्धव ठाकरे, बिहार में नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव, झारखंड में हेमंत सोरेन जैसे क्षत्रप अपनी-अपनी पार्टी को महत्व, नेतृत्व और ज्यादा सीटें चाहते हैं। मतलब ये कि जिन राज्यों में कांग्रेस कमजोर है वहां वो उस राज्य की ताकतवर पार्टी द्वारा दी गई सीटें लड़े।

कांग्रेस जिस हालत में है उसमें 2024 में भाजपा को हटाने के लिए वो क्षेत्रीय दलों से सीटों की सौदेबाजी में कितना झुक सकती है, अब सारा खेल इस पर टिकने वाला है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस को अगर ये भरोसा देने में कामयाब हो जाते हैं कि पहले नंबर जुटाना है और बाद में सबसे बड़ी पार्टी ही सरकार का नेतृत्व करेगी।

'दोनों नेताओं...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर, इसके तौर तरीकों व प्रक्रिया का ब्यौरा तैयार करने का निर्णय नेतृत्व पर छोड़ दिया गया है।

राहुल गांधी आज रात अमेरिका जा रहे हैं, इसलिए यह स्पष्ट नहीं है कि क्या तुरंत कोई निर्णय लिया जा सकता है।

इसलिए कांग्रेस नेतृत्व तेजी से काम कर रहा है और पायलट को राज्य व्यापी आंदोलन करने से रोकने की कोशिश कर रहा है क्योंकि यह नेतृत्व के लिए भारी शर्मिंदगी का सबब साबित हो रहा है।

सचिन पायलट को अपना आंदोलन वापस लेने के लिए कारण बताने होंगे। सूत्रों का कहना है कि दोनों नेताओं को एक साथ रखा जाए और संभावना है कि गहलोत को मनमानी करने की छूट नहीं मिले।

12 जून को पटना ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

था तथा घोषित कर दिया था कि वे अपने दम पर ही 2024 के चुनाव लड़ेंगे। कुमार "वन-टू-वन" के विचार को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे हुये हैं कि 2024 के चुनाव में भाजपा के प्रत्याशी के समय विपक्ष का एक ही प्रत्याशी खड़ा हो तथा वे इस विचार की भी वकालत और हिमायत कर रहे हैं कि कांग्रेस और भाजपा के समान दूरी रखने की धारणा क्षेत्रीय दलों के लिये अपनी पराजय को आमंत्रित करने वाली सिद्ध होगी। सूत्रों का कहना है कि 18 विपक्षी दलों के नेता, जिनमें एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार, ओडिशा तथा पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक तथा ममता बनर्जी, राहुल गांधी तथा समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव पटना मीटिंग में उपस्थित होंगे।

विपक्षी एकता अभी दूर की कौड़ी बनी हुई है क्योंकि क्षेत्रीय नेताओं के ग्रुप अपनी समान्तर गतिविधियाँ जारी रखे हुये हैं। ममता बनर्जी तथा अखिलेश यादव स्वतंत्र रूप से कांग्रेस रहित तीसरे मोर्चा के विचार को आगे बढ़ाने में लगे हुये हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल तेलंगाना के मुख्यमंत्री को चन्द्रशेखर राव सहित, विभिन्न विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मीटिंग कर रहे हैं ताकि दिल्ली अध्यादेश का समर्थन रोका जा सके। लेकिन बिहार के एक वरिष्ठ नेता का कहना है कि "क्षेत्रीय दलों के अधिकांश नेता भाजपा सरकार के इशारे पर ई.डी./सी.बी.आई. केसों के साझा खतरे का सामना कर रहे हैं। इसलिये इन पार्टियाँ को किसी औपचारिक या अनौपचारिक गठबंधन में शामिल होने के लिये स्वत: ही बाध्य हो जायेंगी।

'अपवाद कानून नहीं हो सकता'

हाई कोर्ट ने गैर आर.ए.एस. को पदोन्नत कर आई.ए.एस. बनाने पर तीखी टिप्पणी की

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 29 मई। राजस्थान हाई कोर्ट में गैर आर.ए.एस. (राजस्थान एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस) से सीधे "इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस" (आई.ए.एस.) अफसर के पद पर एक 'सब-कोटा' के माध्यम से पदोन्नत किए जाने की प्रथा के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई हुई। अदालत ने राज्य सरकार से इस प्रथा के संबंध में जवाब मांगा है और पिछले पाँच वर्ष के ऑकडे भी माँगे है। एक्टिंग सी.जे.एम.एम. श्रीवास्तव व जस्टिस अनिल उपमन की खंडपीठ ने यह आदेश राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद व अन्य की याचिकाओं पर दिया।

इस मामले में याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता तनवीर अहमद अदालत में पेश हुए थे। उन्होंने अदालत को बताया कि 'ऑल इंडिया सर्विस एक्ट' व उसके नियम-विनियम के तहत 66.67 प्रतिशत आई.ए.एस. अफसर 'यू.पी.एस.सी.' परीक्षा के माध्यम से सीधे भर्ती किए जाते है। वहीं 33.33 प्रतिशत आई.ए.एस. पद राज्य के प्रशासनिक अफसरों की पदोन्नति से भरे जाते हैं। उन्होंने अदालत को इस तथ्य से अवगत कराया कि अपवाद स्वरूप में गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों को भी आई.ए.एस. के पद पर पदोन्नत किया जा सकता है। परन्तु इन अफसरों की संख्या राज्य प्रशासनिक सेवा से पदोन्नित होने वाले अफसरों की कुल संख्या की केवल 15 प्रतिशत तक ही हो सकती है। उन्होंने अदालत को यह भी बताया कि यह नियम एक अपवाद है और यह तरीका पदोन्नतित की नियमित प्रक्रिया नहीं हो सकती। तनवीर अहमद ने बताया कि राज्य सरकार ने इस अपवाद को प्रथा मान कर पिछले कई वर्षो से आर.ए.एस. अफसरों से पदोन्नत होकर आई.ए.एस. बनाए जाने वाले कुल अफसरों में से 15 प्रतिशत का कोटा गैर आर.ए.एस. अफसरों का बना दिया है, जिस पर निरंतर अमल किया जा रहा है। अदालत ने मौखिक तौर पर कहा कि अगर ऐसी प्रथा अपनाई जा रही है तो यह नियम का साफ उल्लंघन होगा। अदालत ने राज्य सरकार को जवाब पेश करने का अंतिम मौका दिया है। सुनवाई की अगली तारीख जुलाई में तय की गई है।

सी.बी.आई. ने ब्रिटिश एयरोस्पेस और रोल्स रॉयस कंपनी के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज की

सी.बी.आई. की रिपोर्ट के अनुसार 2003-2012 के बीच सेना के लिए 115 मॉर्डन हॉक विमानों की खरीद में व्यापक भ्रष्टाचार हुआ है

नई दिल्ली, 29 मई। भारतीय वायुसेना और नौसेना के लिए हॉक 115 मॉडर्न जेट ट्रेनिंग विमान की खरीद में भ्रष्टाचार के आरोप मामले में सी.बी.आई. ने अपना ऐक्शन तेज कर दिया है। जांच एजेंसी ने ब्रिटिश एयरोस्पेस और रक्षा कंपनी रोल्स-रॉयस पी.एल.सी., इसकी इंडियन यूनिट के सीनियर अधिकारियों व शस्त्र विक्रेताओं के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज की है।

एफ.आई.आर. के अनुसार, सी.बी.आई. ने मामले में 6 साल की जांच पूरी होने के बाद आईपीसी की धारा 120-बी (आपराधिक साजिश), 420 (धोखाधड़ी) और भ्रष्टाचार निरोधक कानून के प्रावधानों के तहत रोल्स-रॉयस इंडिया के निदेशक टिम जोन्स, हथियार आपूर्तिकर्ता सुधीर चौधरी और उनके बेटे भानु चौधरी व ब्रिटिश एयरोस्पेस सिस्टम्स के खिलाफ मामला दर्ज किया है। अभी रोल्स रॉयस से इस पर प्रतिक्रिया नहीं मिल पाई है।

अधिकारियों ने बताया कि, 2017 में एक ब्रिटिश अदालत ने भी समझौते को अंजाम देने के लिए कंपनी की ओर से बिचौलिए को शामिल करने और कमीशन का भुगतान करने का जिक्र किया था। यह आरोप है कि 2003-12 के दौरान साजिश में शामिल इन आरोपियों ने 73.42 करोड़ ब्रिटिश पाउंड की लागत से 24 हॉक 115 एजेटी की खरीद का प्लान बनाया। इसके लिए उन्होंने अज्ञात लोक सेवकों के साथ मिलकर अपने आधिकारिक पद का दुरुपयोग किया था। उन्होंने

■ यह आरोप है कि, 2003-12 के दौरान साजिश में शामिल इन आरोपियों ने 73.42 करोड़ ब्रिटिश पाउंड की लागत से 24 हॉक 115 एजेटी की खरीद का प्लान बनाया। इसके लिए उन्होंने अज्ञात लोक सेवकों के साथ मिलकर अपने आधिकारिक पद का दुरुपयोग किया था।

30.82 करोड़ अमेरिकी डॉलर और 75 लाख अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त राशि के लिए रोल्स रॉयस को आपूर्ति की गई सामग्री के बदले हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के 42 अतिरिक्त विमानों के लाइसेंस निर्माण की अनुमति दी।

सी.बी.आई. की प्राथमिकी में आरोप लगाया गया कि यह सौदा रोल्स रॉयस द्वारा बिचौलियों को दी गई भारी भरकम रिश्वत, कमीशन और भ्रष्टाचार के एवज में किया गया था, जबकि समझौते से संबंधित दस्तावेज में बिचौलियों के भुगतान पर रोक की बात कही गई थी। एचएएल ने अगस्त 2008 से मई 2012 के बीच भारतीय वायु सेना को 42 विमान दिए। जनवरी 2008 में एचएएल ने रक्षा मंत्रालय से 9,502 करोड़ रुपये की लागत से 57 अतिरिक्त हॉक विमान के निर्माण के लिए लाइसेंस देने की अपील की थी, जिसमें से 40 विमान वायु सेना के लिए और 17 नौसेना के लिए था।

सी.बी.आई. जांच से पता चला है कि, 2006-07 में आयकर विभाग द्वारा किए गए सर्वेक्षण के दौरान रोल्स रॉयस इंडिया कार्यालय से लेन-देन से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त किए गए थे, लेकिन आरोपी व्यक्तियों ने जांच से बचने के लिए दस्तावेजों को नष्ट कर दिया और हटा दिया।

मणिपुर में हिंसा और तेज हुई

हथियारबंद आतंकियों ने गाँवों में आम लोगों के घरों पर हमला किया, सुरक्षाबलों ने 25 हथियारबंद आतंकियों को गिरफ्तार किया है

इम्फाल, 29 मई (वार्ता)। मणिपुर की राजधानी इम्फाल में सोमवार को लीमाखोंग सैन्य मुख्यालय के पास खुरखुल एवं अन्य मैतेई गांवों में हथियारबंद आतंकियों ने हमला किया।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक आतंकियों के अत्याधुनिक हथियारों से लैस होने के कारण ग्रामीण आसपास के स्थानों की ओर भाग गए। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज देर रात राज्य पहुंचने वाले हैं जिसके लिए वहां की सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है।

सैनिकों ने हथियार रखने एवं घरों को जलाने की कोशिश करने के आरोप में 25 लोगों को भी गिरफ्तार किया। राज्य के सभी पांच जिलों में पूरे दिन कर्फ्यू में ढील नहीं दी गई और 3 मई से झड़पें शुरू होने के बाद से वहां इंटरनैट भी बंद है।

मुख्यमंत्री एन बीरेन ने कहा कि यह संघर्ष अब सशस्त्र कुकी आतंकियों और सरकार के बीच है। इंफाल पूर्व जिले में इंसास राइफल और मैगजीन के साथ तीन लोगों को 5.56 एमएम की 60 गोली, गोला-बारूद, एक चीनी हथगोला और एक डेटोनेटर के साथ गिरफ्तार किया गया।

एक अन्य घटना में सेना ने इंफाल पूर्व में घरों को जलाने की कोशिश करने वाले 22 लोगों को गिरफ्तार किया, उन आतंकियों ने स्वचालित हथियारों से सेना की टुकड़ियों पर गोलियां भी चलाईं। उनके पास से पांच 12 बोर की डबल बैरल राइफल, तीन सिंगल बैरल राइफल, डबल बोर वाला एक देसी कट्टा और एक मज़ल लोडेड हथियार भी बरामद किया गया। सेना ने त्वरित कार्रवाई करते हुए लोगों के बहुमूल्य जीवन को सुरक्षित किया और आगजनी की अनेक घटनाओं को रोका।

इस बीच, मणिपुर के मुख्य सचिव डॉ. विनीत जोशी ने एक आदेश में कहा कि जिम्मेदार पदों पर बैठे हुए कई लोग मणिपुर के बारे में सोशल मीडिया पर जानकारी साझा कर रहे हैं लेकिन उनमें से कई सूचनाएं गलत, फर्जी और झूठी अफवाह पाई गई हैं।

उन्होंने कहा कि ऐसी गलत सूचनाएं जनता को गुमराह करती है, हिंसा भड़कती है और हथियारों का उपयोग करने और राज्य के खिलाफ विद्रोह करके राज्य में वर्तमान स्थिति को खराब करने की क्षमता रखती है, जिससे मानवीय जीवन को नुकसान होता है, लोगों की जान जाती है और संपत्तियों को नुकसान पहुंचता है।

पेपर लीक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार ने ये आदेश दिए हैं।

शिक्षा विभाग ने पिछले दिनों विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक की थी। इस बैठक में अनिल उर्फ शेर सिंह मीणा को भी प्रमोट किया गया था। अचंभे की बात है कि, शिक्षा विभाग ने बर्खास्त हो चुके शेर सिंह मीणा को प्रमोट कर दिया। इतना ही नहीं उसका पदस्थापन भी कर दिया गया।

निदेशक गौरव अग्रवाल ने शाम होते-होते इस आदेश को वापस ले लिया। इसके बाद राज्य सरकार ने सोमवार सुबह गौरव अग्रवाल को ही पद से हटा दिया। शिक्षा विभाग में पदोन्नति करने से पहले सभी कार्मिकों का रिकॉर्ड देखा जाता है। प्रत्येक कार्मिक के रिकॉर्ड की जांच की जाती है। आपत्ति भी मांगी जाती है।

डी.पी.सी. होने के बाद भी करीब एक महीने का वक्त रहता है। लेकिन, इसके बाद भी किसी के ध्यान में नहीं आया कि सेवा से बर्खास्त हो चुके कार्मिक को कैसे पदोन्नति दी गई।

जब यह खबर प्रमुखता से चली कि, एक करोड़ रुपये में सीनियर टीचर भर्ती का पेपर बेचने वाले मास्टरमाइंड अनिल उर्फ शेर सिंह मीणा को शिक्षा निदेशालय ने वाइस प्रिंसिपल से प्रिंसिपल के पद पर प्रमोशन कर दिया तो शिक्षा निदेशालय बीकानेर ने रात में नया आदेश जारी किया।

दरगाह में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुपरविजन में सलूम्बर थानाधिकारी लीलधर मालवीय के नेतृत्व में गठित दल ने इस मामले में आरोपी गोविन्द पुत्र बालाजी, ललित पुत्र पेमाराम, कैलाश पुत्र नाथुलाल, दयाराम पुत्र शंकरलाल, मांगीलाल पुत्र हिराजी, वीराराम पुत्र मावाराम निवासीयान पातुखेडा, कुराबड जिला उदयपुर को गिरफ्तार कर जेल भिजवाया।

एर्दोगन फिर से तुर्किये के राष्ट्रपति चुने गये

नयी दिल्ली, 29 मई (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को तुर्किए के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन को फिर से चुनाव जीतने पर बधाई दी और कहा कि उन्हें विश्वास है कि द्विपक्षीय संबंध और वैश्विक मुद्दों पर सहयोग बढ़ता रहेगा।

मोदी ने ट्वीट किया, तुर्किये के राष्ट्रपति के रूप में फिर से चुने जाने पर आर टी एर्दोगन को बधाई ! मुझे विश्वास है कि आगामी समय में वैश्विक मुद्दों पर हमारे द्विपक्षीय संबंध और सहयोग बढ़ते रहेंगे।

उन्होंने कहा कि ये चुनाव जीतने के बाद राष्ट्रपति एर्दोगन चुनाव जीतकर फिर से पांच साल के लिए सत्ता में आए। अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने रविवार को रन-ऑफ में करीब पूरी गिनती में 52.16 प्रतिशत मत हासिल किए। उन्होंने कहा कि अपनी जीत के साथ, एर्दोगन ने अपने शासन को तीसरे दशक तक बढ़ा दिया।

'महिला चिकित्सक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की हकदार थी।

उल्लेखनीय है कि, सुप्रीम कोर्ट के आदेश अनुसार भी पाठ्यक्रम शुरु होने के पहले, एक तय तिथि के उपरांत नए "एडमिशन" नहीं दिये जा सकते। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि, केवल "रैअरेस्ट ऑफ रेर", यानी बिल्कुल ही अनूठी स्थितियों में ही इस नियम को तोड़ा जाना चाहिये। हाई कोर्ट ने उक्त मामले को "रेअरैस्ट ऑफ रेअर" माना है और अपीलार्थी को अगले सत्र में प्रवेश दिया है।

अपील में अधिवक्ता विज्ञान शाह ने अदालत को बताया कि, अपीलार्थी वर्ष 2015 में डैंटल ऑफिसर के पद पर नियुक्त हुई थी। साल 2018 में उसे अलवर की मंडावर कम्युनिटी हैल्थ सैंटर (सी.एच.सी.) में नियुक्त किया गया। इसके बाद करोना काल में उसे अलवर के ग्रामीण क्षेत्र में नियुक्ति दी गई। जहां उसने कुल 750 दिन तक काम किया। अपील में कहा गया कि, गत वर्ष की नीट पीजी परीक्षा में उसे नियमानुसार बीस बोनस अंक दिए जाने थे, लेकिन उसे इसका लाभ नहीं दिया गया। इसका विरोध करते हुए राज्य सरकार व अन्य की ओर से कहा गया कि, अपीलार्थी की मूल नियुक्ति शहरी क्षेत्र में थी और उसे कार्य व्यवस्था के लिए ग्रामीण क्षेत्र में लगाया गया था। जहां उसे ग्रामीण भत्ता भी नहीं दिया गया था। ऐसे में उसकी ओर से दी गई सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्र की सेवा के तौर पर नहीं गिना जा सकता। इसी आधार पर एकलपीठ ने भी पूर्व में उसकी याचिका को खारिज कर दिया था।

दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने माना कि, अपीलार्थी को बिना किसी गलती के पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने से वंचित किया गया है। ऐसे में उसे अगले सत्र के पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाए।

न संसद की पुरानी बिल्डिंग रही...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करने का सबसे बेहतरीन जरिया है।

"लीक्स" और प्रैस तथा सत्ता के बीच मेलजोल के उस खत्म हो चुके दौर की घटना मुझे याद आती है जब एक ताकतवर प्रधानमंत्री अपने चयनित किन्तु अयोग्य व अकुशल प्रत्याशी को विशालकाय पब्लिक सैक्टर एयरलाइन ऑपरेटर का चेयरमैन नहीं बना सका था और न्यूज़ लीक होने की वजह से ऐसा नहीं हो पाया था।

संसद की कार्यवाहियों में पत्रकारों को आने की अनुमति देने एक बार जब उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा राज्यसभा सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। तब सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्यों ने उन्हें इस कदर परेशान किया कि वे रुंआसे से हो गए थे। यह कार्यवाही टी.वी. पर नहीं आई थी। पर पत्रकारों ने यह खबर प्रकाशित की और सत्तारूढ़ पार्टी के उन उद्दण्ड सांसदों को शर्मिंदा होना पड़ा।

वह घटना भी याद है जब प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह विपक्ष के कुछ सदस्यों ने उनकी कार्यशैली को लेकर जोरदार हमला बोला, उनकी घोर आलोचना की। डॉ. सिंह राजनेता तो है नहीं, तो वह यह सब सह नहीं पाए, उन्होंने तमाम आरोपों और आलोचना को बेहद गंभीरता और व्यक्तिगत स्तर पर ले लिया।

जब हालात और भी बुरा रूप ले रहे थे तब उनकी मदद को आगे आए अटल बिहारी वाजपेयी, उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज में डॉ. सिंह का बचाव किया।

अनुभवी राजनेता वाजपेयी ने डॉ. सिंह को सलाह दी कि अपनी "चमड़ी थोड़ी मोटी" कर ले और किसी भी बात को निजी तौर पर न लें। उन्होंने कहा कि जहां तक उन्हें याद है उन्हें उनके राजनैतिक करियर में काफी भला बुरा कहा गया। वैसे वाजपेयी हमारी पीढ़ी के सबसे बेहतरीन राजनेताओं में से एक रहे हैं। यू.एन. में और संसद में उनके भाषणों को आज भी याद किया जाता है।

जब उनकी तेरह दिन की सरकार गिरी थी तब उनका भाषण निस्संदेह बहुत शानदार था। पर एक ऐसा मौका था जब संसद में अपने भाषण में उन्होंने राजनीतिक आकाश की ऊंचाइयां छू ली थीं।

उस समय आंध्र प्रदेश के कुछ विधायक दिल्ली आए थे तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को ज्ञापन देने। उनमें से एक या दो को प्रधानमंत्री को ज्ञापन देने के लिए अंदर आने की अनुमति देने की बजाय दिल्ली पुलिस ने उन पर कार्यवाही की तब संसद चल रही थी और खबर अंदर पहुंची।

और तब वाजपेयी सदन में खड़े हुए और अपनी शानदार हिंदी में भाषण दिया।

प्रधानमंत्री सदन में नहीं थे पर उन्होंने अपना भाषण प्रधानमंत्री को ही संबोधित किया। उन्होंने कहा, "अभी तक राज्यों के लोग दिल्ली में न्याय के लिए आते है, पर अगर उनके साथ ऐसा व्यवहार होगा तो वह दिन दूर नहीं जब दिल्ली को अपनी सत्ता बचाने के लिए राज्यों पर दस्तक देनी पड़ेगी।"

यह मानो एक संत की भविष्यवाणी थी और आने वाले वर्षों में केन्द्र को अपने अस्तित्व के लिए पूरी तरह से क्षेत्रीय दलों के समर्थन पर निर्भर होना पड़ा। निश्चित रूप से अब वो दौर खत्म हो गया है।

ऐसे दिन आते रहते हैं जब कर्मों का हिसाब होता पर अकलमंद लोग उसके अनुसार समझदारी से काम करते है।

तीन राज्यों के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विकसित करने के लिये अत्यल्य समय ही मिल सके।

भाजपा नेताओं, खासतौर से मोदी-शाह की जोड़ी, के इस विचार को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोवल का समर्थन भी प्राप्त है। इस जोड़ी का मानना है कि विपक्षी दलों और उनके नेताओं के बीच बहुत गहरे अन्तर्विरोध हैं तथा उनमें तालमेल बनाने के लिये काफी समय और धैर्य की जरूरत होगी।

इसलिये भाजपा का मानना है कि समय पूर्व चुनाव कराना चुनावी लड़ाई में अपना पलड़ा भारी रखने के लिये बेहतर रणनीति सिद्ध होगी।

भाजपा रणनीतिकारों का मानना है कि, आम चुनावों को जल्दी तथा तीन हिन्दी भाषी राज्यों के विधानसभा चुनावों के साथ कराने का एक और लाभ भी मिलेगा-कांग्रेस राज्य के चुनावों पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेगी क्योंकि उसे राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान देना होगा, इस प्रकार कांग्रेस संसाधनों के मामले में भी और ज्यादा असुविधा में रहेगी। भाजपा का मानना है कि देश की इस सबसे पुरानी पार्टी के पास संसाधनों का अकाल होगा, क्योंकि इसकी जमापूंजी खींचतान का शिकार हो जायेगी।

आम चुनाव जल्दी करवाकर, सत्तारूढ़ पार्टी यह सुनिश्चित कर लेगी कि भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा प्रस्तावित हिस्सा, जिसके अंतर्गत राहुल गांधी का पूर्व से पश्चिम-हिन्दी भाषी क्षेत्रों से गुजरते हुये, तक जाना प्रस्तावित है, भी बाधित हो जायेगा। भारत जोड़ो यात्रा के पहले हिस्से के फलस्वरूप, कांग्रेस तथा राहुल गांधी-दोनों की ही विश्वसनीयता को आशातीत लाभ हुआ था, यही कारण है कि सत्तारूढ़ दल यात्रा के दूसरे हिस्से के आयोजन की स्थिति ही आने देना नहीं चाहता।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908